छब्बीस सुरतें

माअ मंज़िल व वज़ाईफ

सुरतों के फज़ाईल — सुरेह फातेहा

सुरेह यासीन — सुरेह रहमान

सुरेह वाकेआ — सुरेह जुमा
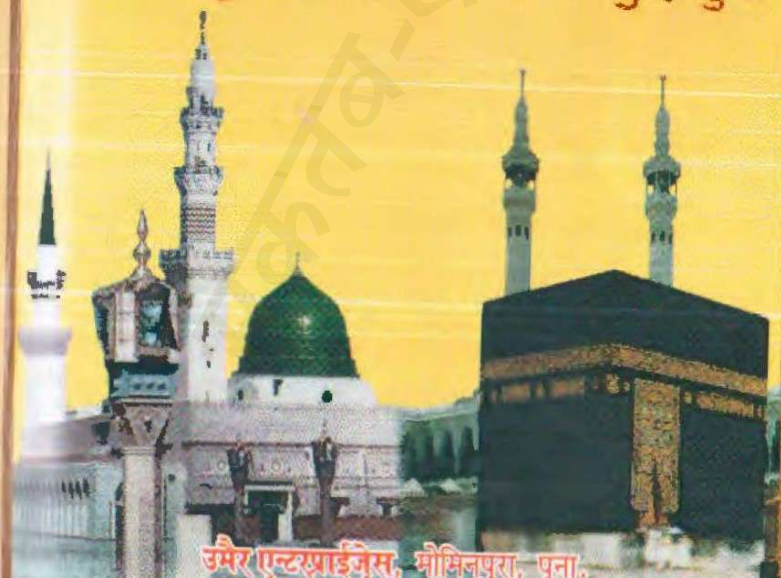
उमैर एन्टरप्राईजेस, मोमिनपुरा, पुना.

बिइस्मीही तआला

लक़द कान लकुम फी रसुलिल्लाही उस्वतुन ह-स-ना ○

गुजारीश

ये किताब बडी कीमती है । इस में नेअमतो के खज़ाने है। अल्लाह तआला के कलाम में बडी बरकत है । इस किताब का गौर से मुताला किजीए और अपनी दुआओ में इस गुनेहगार को भी याद किजी. दुआ में बडा असर होता है, जहां अपने लिए, अपने बाल बच्चों के लिए, अपने अज़ीज़ व अकारीब के लिए दुआ करें वहां इस आसी के लिए भी ज़रुर दुआ फर्माए ।

मौलान जलील अहमद आलमगीर

नाम किताब : छब्बीस सुरतें

हिन्दी अनुवाद : मरहुम हनिफ जनाब

इशाअत : 1-02-2015

कीमत : Rs. 60/-

6 एडीशन : 2,000

मरहुम हज़रत मौलाना अब्दुल गनी सहाब मज़ाहरी

(शेखुल हदीस दारुल उलूम अलमगीर,अहमद नगर)

मरहुम हनिफ जनाब वफात (27/2/2012)

मरहुम मोहम्मद उमर मोहम्मद हुसेन वफात (11/8/2007)

अल्लाह तआला इन सब की मग्फिरत फरमा कर करवट करवट जन्नत नसिब फरमाए और इन की कबरों को नुर से मुनव्वर फरमाए. **आमीन** (बराए महरबानी आपनी दुआओं में याद रखें)

सूरतों के फज़ाइल व ख्वास

✧ हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह स. ने फरमाया के जब तूने अपने बिस्तर पर पहलू रखा और सूरे फातिहा और सूरे इख्लास पढी तो मौत के अलावा हर चीज़ से बेखौफ हो गया। (हसन अनलबज़्ज़ार)

✧और आयतल कुर्सी भी पढें। इस के पढने वाले के लिए अल्लाह तआला की जानिब से रात भर एक मुहाफिज़ फरिश्ता मुकर्रर रहेगा और कोई उसके पास न आएगा। (मस्नून दुआ)

✧ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद रज़ि. से रिवायत है के रसूलुल्लह स. ने फरमाया के सूरे बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनर्रसूलु' से खत्मे सूरत तक जो शख्स रात को पढ लेगा तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफी होंगी यानी वो हर शर और मकर से महफूज़ रहेगा। (बुखारी व मुस्लिम)

✧ एक हदीस में है के सूरे बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनर्रसूल' से आखिर तक जिस घर में पढी जाएं तीन दिन तक शैतान उस घर के करीब नहीं आता। (हसन हुसैन)

✧ हज़रत उसमान रज़ि. फरमाते है के जो शख्स सूरे आले इमरान की आखरी ग्यारह आयतें 'इन्न फी खलकिस्समावाति' से आखिर तक किसी रात पढ ले तो उसे रात भर नमाज़ पढने का सवाब मिलेगा। (मोतबर)

✧ सूरे कहफ का जुमा के दिन पढना ज़मीन व आसमान तक नूर पैदा करता है, आठ दिन तक नूर बराबर कायम रहता है फिर उसके पढने वाले को ये सारा नूर कब्र में और कब्र के बाद कयामत में दिया जाएगा। (मोतबर)

◆ एक रिवायत में है के जिस ने सूरे सजदा और तबारकल्लज़ी को मगरिब और इशा के दरमियान पढा गोया उस ने लैलतुल कद्र में कयाम किया। एक रिवायत में है के जिस ने इन दोनों सूरतों को पढा उस के लिए सत्तर नेकियाँ लिखी जाती हैं और सत्तर बुराईयाँ दूर की जाती हैं। (फज़ाइले कुरआन)

◆ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे यासीन को सिर्फ अल्लाह की रज़ा के वास्ते पढे उस के पहले सब गुनाह मआफ हो जाते हैं। (फज़ाइले कुरआन)

◆ जिस शख्स ने शबे जुमा को सूरे दुखान पढी उसके लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते अस्तगफार करते हैं और उसके तमाम गुनाह मआफ कर दिए जाते हैं और अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।

◆ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे हदीद, सूरे वाकिया और सूरे रहमान पढता है वो जन्नतुल फिरदौस में रहने वालों में पुकारा जाता है। (फज़ाइले कुरआन)

◆ सूरे जुमा शबे जुमा में पढनी चाहिए।

◆ एक हदीस में है के सूरे तबारकल्लज़ी का हर रात को पढते रहना अज़ाबे कब्र से निजात का सबब है और अज़ाबे जहन्नम से भी। (फज़ाइले आमाल)

◆ सूरे मुज़म्मिल का एक मर्तबा रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद पढना फाके से बफज़्ले तआला महफूज़ रखता है। (तिब्बे रूहानी)

◆ सूरे अन्नबा का असर की नमाज़ के बाद पढना दिन में यकीन और नूरे इमान पैदा करता है और इन्शा अल्लाह खातमा बिलखैर होने का सबब होता है। (मोनबर)

✧ जो शख्स सूरे अलकाफिरुन को खुलूसे दिल से बाद नमाज़े फजर या बाद नमाज़े इशा ग्यारह मर्तबा पढने का मामूल बनाले, उसके दिल से बुग्ज़, हसद, कीना, झूठ, फरेब, निफाक गोया हर किस्म की अख़लाकी बुराई निकल जाएगी और शैतानी वसवसों से महफूज़ रहेगा और उसका खात्मा इमान पर होगा और दिल इबादत की तरफ बेहद मायल होगा। अगर कोई बच्चा नमाज़ पढने में कोताही करता हो तो घर का कोई फर्द २१ रोज़ तक इस सूरत को २१ मर्तबा रोज़ाना पढ कर पानी पर दम करके पिलाए इन्शा अल्लाह नमाज़ पढने में इस्तेकामत पैदा हो जाएगी।

✧ सूरे नसर की तिलावत हर किस्म की मुराद पूरी होने के लिए बहुत मुफीद है बशर्ते के इस सूरत को अलैहदा बैठ कर १२३ मर्तबा पढा जाए और हर नमाज़ के बाद अगर इसे सात मर्तबा पढने का मामूल बना लिया जाए तो हर मुश्किल आसान होती चली जाएगी।

✧ जो शख्स सूरे इख्लास को एक हज़ार मर्तबा रोज़ाना बाद नमाज़े इशा १२५ दिन तक पढे तो उसकी हर जायज़ हाजत पूरी होगी। और जो शख्स रोज़ाना १११ मर्तबा पढने का मामूल बनाले वो इन्शा अल्लाह महबूबुल खलाईक हो जाएगा। इसके अलावा इस सूरत को पढने का बेपनाह अज्र मिलेगा।

जो शख्स सूरे फल्क रात को सोते वक्त पढ कर अपने उपर दम करे तो इन्शा अल्लाह हर तरह के डर, खौफ और मुसीबत से महफूज़ रहेगा। हुजुर स. का इर्शाद है के सूरे फल्क से बेहतर कोई दुआ पनाह के मुताल्लिक नहीं है।

✧ जो शख्स रात को सोते वक्त सूरे फातिहा, आयतुल कुर्सी, सूरे इख्लास, सूरे फलक और सूरे नास एक एक मर्तबा पढ कर अपने हाथों पर दम करके दोनों हाथों को चेहरे और सर से लेकर पेट और टांगों तक फेर दे इन्शा अल्लाह वो रात भर जिन्नात और शयातीन के शर से और दीगर आफाते समावी से महफूज़ और अल्लाह की पनाह में रहेगा।

दरूद शरीफ

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इन्नल्लाह व मलाइकतहु युसल्लून अलन्नबी या अय्युहल्लजीन आमनु सल्लु अलैहि व सल्लिमु तस्लीमा

तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी (स.) पर ए इमान वालो! तुम उन पर दरूद और खूब सलाम भेजो।

दरूद शरीफ

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अलाइब्राहीम वअला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव्वअला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आली इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद ।

सुरेह फातेहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ

الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٦

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ० मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याक नअबुदु वइय्याक नस्तईन ० इहदिनस्सिरॉतल मुस्तकीम ० सिरॉतल्लजीन अन्अम्त अलैहिम ५ गैरिल मगजुबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन ०

आयतुल कुर्सी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

बिस्मिल्लाहि रहमानि रहीम

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हू अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहू सिनतुंव्वला नौम, लहू माफिस्समावाति वमा फिल अर्ज़ मन जल्लज़ी यशफउ इंदहु इल्ला बिइज़निह याअलमु मावैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैइम्मिन

इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुर्सीयुहुस्समावाति वलअर्ज़ वला यउदूहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल अलीय्युल अज़ीम ०

सूरे बकरा का पहला और आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۗ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝
اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

अलिफ लाम मीम ० ज़ालिकल कितबु ला रैब फिही हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लज़ीन युअमिनून बिलगैबि व युकीमुनस्सलाॅत व मिम्मा रज़कनाहुम युनफिकून ० वल्लज़ीन युअमिनून बिमा उन्ज़िल इलैक वमा उन्ज़िल मिन कब्लिक व बिलआख़िरतिहुम युकिनून ० उलाइक अला हुदम्मिर्रब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफ्लिहुन ० इन्नल लज़ीन कफरु सवाउन अलैहिम अअन्ज़रतहुम अम् लम् तुन्ज़िरहुम ला युअमिनून ० ख़तमल्लाहु अला कुलूबिहिम व अला समइहिम । व अला अबसारिहिम गिशावतुंव्वलहुम अज़ाबुन अज़ीम ० आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्रब्बिहि वल मुअमिनून। कुल्लुन आमन बिल्लाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि

وَرُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ
مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

व रसूलिहि ला नुफर्रिकु बैन अहदिम्मीर्रुसुलिही व कालू समिअना व अतअना गुफरानक रब्बना व इलैकल मसीर ○ ला युकल्लिफुल्लाहु नफसन इल्ला वुस्अहा लहा माकसबत व अलैहा मकतसबत रब्बना ला तुआखिजना इननसीना व अख्ताना रब्बना व ला तहमिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहु अलल्लजीन मिन कब्लिना, रब्बना व तुहम्मिलना मा ला ताकत लना बिहि वाअफु अन्ना वगफिरलना वरहम्ना अन्त मौलाना फन्सुरना अलल कौमिल काफिरीन ○

सूरे आल इमरान का आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی
الْاَلْبَابِ ○ الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ○ رَبَّنَا اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ
اَنْصَارٍ ○ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا

इन्न फी खल्किस्समावाति वलअर्जि वख्तिलाफिल्लैलि
वन्नहारि लआयाति लिउलील अलबाब ० अल्लजीन
यज्कुरुनल्लाह कियामंव्वकूउदंव्व अला जनुबिहिम
वयतफक्करुन फी खलकिस्समावाति वलअर्ज, रब्बना मा
खलक्त हाजा बातिलन सुब्हानक फकिना अजाबन्नार ०
रब्बना इन्नक मन तुदखिलिन्नार फकद् अख्जैतहू। वमा
लिज़्ज़ालिमीन मिन अन्सार ०रब्बना इन्नना समिअ्ना
मुनादियंय्युनादी लिलइमानि अन आमनु बिरब्बिकुम फआमन्ना

رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ رَبَّنَا
وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ

रब्बना फग़फिरलना जनुबना व कफ्फिर अन्ना सय्यीआतिना
मअल अबरार रब्बना व आतिना मा वअत्तना अला
रसूलिक वला तुख्ज़िना यौमलकियामह इन्नक लातुख़्लिफुल
मीआद ० फस्तजाब लहुम रब्बुहुम इन्नी ला उजीउ अमल
आमिलिम्मिनकुम्मिन जकरिन औउन्सा बाअजुकुम मिम्बअजिन।
फल्लजीन हाजरू वउखरिजु मिन दियारिहिम व ऊजु फी
सबीली वकातलू व कुतिलू लउकफ्फिरन्न अन्हुम सय्यिआतिहिम
वलउदखिलन्नहुम जन्नातिन तजरी मिन तहतिहलअन्हारु
सवाबम्मिन इन्दिल्लाहि। वल्लाहु इन्दहु हुस्नुस्सवाब ०

الثَّوَابِ ○ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۞ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ○ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ○ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خٰشِعِينَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُونَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ؕ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ○ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ○

ला यगुर्रन्नक तकल्लुबुल्लजीन कफरु फील बिलाद ० मताउन कलीलुन सुम्म मावाहुम जहन्नम। व बिअसल मिहाद ० लाकिनिल लजीनत्तकु रब्बहुम लहुम जन्नातुन तजरी मिन तहतिहल अन्हारु खालिदीन फीहा नुजुलम्मिन इन्दिल्लाह। वमा इन्दिल्लाहि खैरुल्लिलअबरार ० व इन्न मिन अहलिलकिताबि लमंय्युमिनु बिल्लाहि वमा उन्जिल इलैकुम वमा उन्जिल इलैहिम खाशिईन लिल्लाहि ला यश्तरुन बिआयातिल्लाहि समनन कलीला। उलाइक लहुम अजरुहुम इन्द रब्बिहिम। इन्नल्लाह सरीउल हिसाब ० याअय्युहल्लजीन आमनुसबिरु व साबिरु वराबितू वत्तकुल्लाह लअल्लकुम तुफलिहून ०

सुरेह कहफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ○ قَيِّمًا
لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ
لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ○ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ○ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ○ مَا
لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ
اِلَّا كَذِبًا ○ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ
اَسَفًا ○ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ○ وَاِنَّا
لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ○ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़ल अला अब्दिहिल किताब वलम यजअलल्लहु इवजा ० कय्यीमल्लियुन्ज़िर बासन शदीदम्मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल मुअमिनीनल्लज़ीन यअमलूनस्सॉलिहाति अन्न लहुम अजरन हसनम्माकिसीन फीहा अबदंव्व युनज़िरल्लज़ीन कालुत्तख़ज़ल्लाहु वलदा ० मा लहुम बिही मिन इल्मिंव्वला लि आबाइहिम। कबुरत् कलिमतन् तख़्रुजु मिन अफ़्वाहिहिम। इंय्यकुलून इल्ला कज़िबा। फ़लअल्लक बाख़ीउन्नफ़सक अला आसारिहिम इल्लम युअमिनू बिहाज़ल हदीसि इस्फ़ा ० इन्ना जअल्ना मा अलल अर्ज़ि ज़ीनतल्लहा लिनब्लुवहुम अय्युहुम अहसनु अमला ० वइन्ना लजाइलून मा अलैहा सईदन जुरुज़ा ० अम हसिबत इन्न अस्हाबल कहफ वर्रकीमि

كَانُوا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ
بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ
نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۝ وَّرَبَطْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ۝ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ لَوْ
لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَ
اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ

कानू मिन आयातिना अजबा ० इज अवल फितयतु इललकहफि फकालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्क रहमतंव्वहय्यीअ् लना मिन अमरिना रशदा ० फजरब्ना अला आजानिहिम फिलकहफि सिनीन अददा ० सुम्म बअस्नाहुम लिनअलम अय्युल हिजबैनी अह्सा लिमा लबिसू अमदा ० नहनू नक्सु अलैक नबअहुम बिलहक्कि। इन्नहुम फितयतुन आमनू बिरब्बिहिम वजिदनाहुम हुदा ० वरबत्ना अला कुलूबिहिम इज कामू फकालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वलअर्ज लन्नदउव मिनदूनिही इलाहल्लकद कुल्ना इजन शतता ० हाउलाइ कौमुनत्तखजु मिन दूनिही आलिहतन। लौ लायातून अलैहिम बिसुल्तानिम्बैन। फमन अजलमु मिम्मनिफतरा अलल्लाहि कजिबा ० व इजिअतजल तुमूहुम वमा याअबुदून इलल्लाह फाउ

رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ○ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا
طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ○ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ وَّنُقَلِّبُهُمْ
ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ
لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ○ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا
بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ

इललकैफि यनशुर लकुम रब्बुकुम मिर्नरहमतिहि व युहय्यी लकुम मिन अमरिकुम्मिर फका ० वतरश्शम्स इजा तलअत्तज़ावरुअन कहफिहिम जातलयमीनि व इजा गरबत्तक्रि जुहुम ज़ातश्शिमालि वहुम फी फज्वतिम्मिन्हु। जालिक मिन आयातिल्लाह। मंय्याहदिल्लाहु फहुवल मुहतदी । व मंय्युज़्लिल फलन तजिद लहु वलियम्मुर्शिदा ० व तहसबुहुम ऐकाजंव्वहुम रुकूदुंव्व नुकल्लिबुहुम ज़ातलयमीनि व ज़ातश्शिमालि वकल्बुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिलवसीद। लवित्तलअ्त अलैहिम लवल्लयत मिन्हुम फिरारंव्वल मुलिअ्त मिन्हुम रुअबा ० वकज़ालिक बअस्नाहुम लियतसाअलू बैनहुम। काल काइलुम्मिन्हुम कम लबिस्तुम। कालू लबिसना यौमन औबअ्ज़ यौमि। कालू रब्बुकुम अअलमु बिमा लबिस्तुम। फब्असू अहदकुम बिवरिक़िकुम हाजिही इलल मदीनति

أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ○
إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا
أَبَدًا ○ وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ
فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ
بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ○ سَيَقُولُونَ
ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ
وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا
قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ○

फलयन्जुर अय्युहा अज्का तआमन फलयातिकुम बिरिजकिमम्निहु वलयतलत्तफ वला युश्इरन्न बिकुम अहदा ○ इन्नहुम इंय्यज़्हरू अलैकुम यर्जुमूकुम औ युईदुकुम फी मिल्लतिहिम वलन तुफलिहू इजन अबदा ○ वकजालिक अअ्सरना अलैहिम लियअलमू अन्न वअदल्लाहि हक्कुंव्व अन्नस्साअत ला रैबफीहा इज् यतनाजउन बैनहुम अमरहुम फकालूब्नू अलैहिम बुनयाना। रब्बुहुम अअ्लमु बिहिम। कालल्लजीन गलबू अला अमरिहिम लनत्तखिजन्न अलैहिम्मस्जिदा ○सयकूलून सलासतुर्राबिउहुम कल्बुहुम व यकूलून खम्सतुन सादिसुहुम कल्बुहुम रजमम्बिलौबि व यकूलून सबअतुंव्व सामिनुहुम कल्बुहुम। कुर्रब्बी अअ्लमु बिइद्दतिहिम्मा यअलमुहुम इल्ला कलील फला तुमारि फीहिम इल्ला मिराअन जाहिरंव्वला तसतफ्ती फीहिम्मिन्हुम अहदा ○

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۝ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِیْتَ وَقُلْ عَسٰۤى اَنْ یَّهْدِیَنِ رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝ وَلَبِثُوْا فِیْ
كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ
غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۫ وَّلَا
یُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا
مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ
یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ
زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ

वला तकूलन्न लिशैइन इन्नी फाइलुन जालिक गदन इल्ला अंय्यशाअल्लाहु वज़्कुरब्बक इजा नसीत वकुल असा अंय्यहदियनि रब्बी लिअकरब मिन हाजा रशदा ० वलबिसू फी कहफिहिम सलास मिअतिन सिनीन वज़दादु तिस्आ ० कुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू लहु गैबुस्समावाति वलअर्जि। अब्सिर् बिही व असमिअ्। मालहुम मिन दूनिही मिंव्वलिय्युंव्वला युश्रिकु फी हुक्मिही अहदा ० वत्लु मा उहिय इलैक मिन किताबि रब्बिक। ला मुबद्दिल लिकलिमातिहि वलन तजि मिन दूनिहि मुलतहदा ० वस्बिर् नफ़्सक मअल्लजीन यदऊन रब्बहुम बिलगदावति वलअशिय्यी युरीदून वज्हहु वला तअदु अैनाक अन्हुम तुरीदु जिनतल हयातिद्दुनिया वला तुतिअ मन अगफ़लना कलबहू अन जिक्रिना वत्तबअ हवाहु

وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ○ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ
فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا
يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ○ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ○ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ
يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ
نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ○ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ○ كِلْتَا

वकान अमरुहू फुरुता ○ वकुलिलहक्कु मिर्रब्बिकुम फमन
शाअ फलयूअमिंव्वमन शाअ फलयकफुर इन्ना अअ्तदना
लिज़्ज़ॉलिमीन नारन अहात बिहिम सुरादिकुहा। वइंय्यस्तगीसू
युगासू बिमा इं कलमुहलि यशविल वुजूह। बिअ्सश्शराब।
वसाअत मुर्तफका ○ इन्नल्लजीन आमनू व
अमिलुस्सॉलिहाति अन्नाला नुजीउ अज्र मन अहसन
अमला ○ उलाइक लहुम जन्नातु अद्नीन तजरी मिन
तहतिहिमुल अन्हारु युहल्लौन फीहा मिन असाविरमिन
ज़हबिंव्व यलबसून सियाबन खुज़रम्मिन सुन्दुसिंव्व
इसतबरकिम्मुत्तकिईन फीहा अलल अराईकि। निअ्मस्सवाब।
व हसुनत् मुरतफका ○ वज़रिब लहुम्मसलर्रजुलैनी जअलना
लिअहदिहिमा जन्नतैनी मिन अअनाबिंव्वहफफ्नाहुमा
बिनखिलंव्वजअलना बैनहुमा ज़रआ ○ किल्तल

الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ
ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ
جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۝ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ
قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَ
هُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝
لٰكِنَّا هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ
لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ
خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝ اَوْ

जन्नतैनि आतत् उकुलहा वलम तज्लिम् मिन्हु शैअंव्व फज्जरना खिलालहुमा नहरा ○ वकान लहू समरुन फकाल लिसाहिबिही वहुव युहाविरुहू अना अकसरु मिन्क मालंव्वअअज्जु नफरा ○ वदखल जन्नतहू वहुव जालिमुल्लिनफ्सिही काल माअजुन्नु अन तबीद हाजिही अबदा ○ वमा अजुन्नुस्साअत काइमतंव्वलइर्रुदित्तु इला रब्बी लअजिदन्न खैरम्मिन्हा मुन्कलबा ○ काल लहू साहिबुहू व हुव युहाविरुहू अकफरत बिल्लजी खलकक मिन तुराबिन सुम्म मिन्नुत्फतिन सुम्म सव्वाक रजुला ○ लाकिन्ना हुवल्लाहु रब्बी वला उश्रिकु बिरब्बी अहदा ○ वलौला इज् दखल्त जन्नतक कुल्त माशाअल्लाहु ला कुव्वति इल्ला बिल्लाहि इन तरनि अना अकल्ल मिन्क मालंव्ववलदा ○ फअसा रब्बी अंय्युअतियनि खैरम्मिन जन्नतिक व युरसिल अलैहा हुस्बानम्मिनस्समाई फतुस्बिह सईदन जलका ○

يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ○ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا
أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ○ وَ
لَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ○ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ
هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ○ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَٰهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَٰحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
مُقْتَدِرًا ○ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَالْبَٰقِيَٰتُ الصَّٰلِحَٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ
رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ○ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَٰهُمْ
فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ○ وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ

औ युस्बिह माउहा गौरन फलन् तस्ततीअ लहु तलबा ○ व उहीत बिसमरिही फअस्बह युकल्लिबु कफ्फैहि अला मा अन्फक फीहा वहिय खावियतुन अला उरुशिहा व यकूलु यालैतनी लम अुश्रिक बिरब्बी अहदा ○ व लम तकुल्लहु फिअतुंय्यनसुरुनहू मिन दूनिल्लाहि वमा कान मुन्तसिरा ○ हुनालिकल वलायतु लिल्लाहिलहक्कि। हुव खैरुन सवाबंव्वखैरुन उक्बा ○ वज़्रिब लहुम्मसलल हयातिद्दुनिया कमाइन अन्जलनाहु मिनस्समाइ फख्तलत बिहि नबातुल अर्जि फअस्बह हशीमं तज़्रुहुर्रियाह। वकानल्लाहु अला कुल्लि शैइम्मुक्तदिरा ○अलमालु वलबनून जीनतुल हयातिद्दुनिया वलबाकियातुस्सॉलिहातु खैरुन इन्द रब्बिक सवाबंव्वखैरुन अमला ○ व यौम नुसय्यिरुल जिबाल वतरल अर्ज बरिजतंव्व हशरनाहुम फलम नगादिर मिन्हुम अहदा○ वउरिज़ अला रब्बिक सफ्फा। लकदजिअतमना

بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ○ وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَ
وَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ○ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۗ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۗ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ○ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ○ وَ
يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مَّوْبِقًا ○ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ○ وَ

कमा खलकनाकुम अव्वल मर्रतिम्बल जअम्तुम अल्लन्नजअल लकुम्मौइदा ० व वुजिअल किताबु फतरल मुजरिमीन मुश्फीकीन मिम्मा फीहि व यकूलून यावैलतना मालि हाजल किताबि ला युगादिरु सगीरतंव्वला कबीरतन इल्ला अहसाहा व वजदू मा अमिलू हाजिरा। वला यजलिमु रब्बुक अहदा ० वइज कुल्ना लिलमलाइकतिस्जुदु लिआदम फसजदू इल्ला इब्लीस। कान मिनल जिन्नि फफसक अन अम्रि रब्बिही। अफतत्तखिजु नहू व जुर्रीय्यतहू औलियाअ मिन दूनी वहुम लकु अदुंव्व। बिअस लिज्जॉलिमीन बदला ०मा अश्हद् त्तहुम खलकस्समावाति वलअर्जी वला खलक अन्फुसिहिम व माकुन्तु मुत्तखिजल मुजिल्लीन अजुदा ० व यौम यकूलु नादू शुरकाईयल्लजीन जअम्तुम फदऔहुम फलम यसस्तजिबू लहुम वजअलना बैनहुम्मौबिका ० व राअलमुजरिमून न्नार फजन्नू अन्हुम्मवाकिऊहा वलम यजिदू अन्हा मसुरिफा ० व

لَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ○ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ○ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ
اُنْذِرُوْا هُزُوًا ○ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ تَدْعُهُمْ
اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ○ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ○ وَ

लक्द सर्रफना फी हाजलकुरआनि लिन्नासि मिन कुल्लि मसलि। वकानल इन्सानु अकसरशैइन जदला ० वमा मनअन्नास अंय्युअमिनू इज जाअहुमुलहुदा वयस्तग्फिरु रब्बहुम इल्ला अन तातीयहुम सुन्नतुल अव्वलीन औ यातियहुमुलअजाबु कुबुला ० वमा नुरसिलुल मुरसलीन इल्ला मुबश्शिरीन व मुनजिरीन वयुजादिलुल्लजीन कफरु बिलबातिलि लियुद्हिजू बिहील हक्क वत्तखिजु आयाती वमा उन्जिरू हुजुवा ० व मन अजलमु मिम्मन जुक्किर बिआयाति रब्बिहि फाअरज अन्हा व नसिय मा कद्दमत यदाह। इन्ना जअलना अला कुलुबिहिम अकिन्नतन अंय्यफ्कहूहु व फि आजनिहीम वकरॉ व इन तदउहुम इलल हुदा फलंय्याहतदु इजन अबदा ० व रब्बुकल गफूरु जुर्रहमाति। लवयुअ खिजुहुम बिमा कसबू लअज्जल लहुमुल अजाब। बल्लहुम्मौइदुल्लंय्यजिदु मिन दूनिही मौइला ० व

تِلْكَ الْقُرٰى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ
لَآ اَبْرَحُ حَتّٰىٓ اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا
نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا
غَدَآءَنَا ۫ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ
فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَمَآ اَنْسٰىنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي
الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝ فَوَجَدَا
عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝ قَالَ
لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

तिल्कल कुरा अहलकनाहुम लम्मा जलमू व जअलना लिमहलिकिहिम्मौइदा ० व इज्.काल मूसा लिफताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लुग् मज्मअलबहरैनि औ अमजिय हुकूबा ० फलम्मा बलग़ा मज्मअ बैनिहिमा नसीया हू तहुमा फत्तखिज सबीलहु फिलबहरि सरबा ० फलम्मा जावजा काल लिफताहु आतिना गदाअना लकद लकीना मिन सफरिना हाजा नसबा ० काल अरऐत इज् अवैना इलस्सख्रति फइन्नी नसीतुलहूत वमा अन्सानियहु इल्लश्शैतानु अन अज्.कुरहू वत्तखिज सबीलहु फीलबहरि अजबा ० काल जालिक मा कुन्ना नबगि फरतद्द अला आसारिहिमा कससा ० फवजदा अब्दम्मिन इबादिना आतैनाहु रहमतम्मिन इंदिना वअल्लमनाहु मिल्लदुन्ना इल्मा ० काल लहू मूसा हल अत्तबिउक अला अन तुअल्लिमनि मिम्मा उल्लिमृत रुश्दा ० काल इन्नक लन

مَعِيَ صَبْرًا ○ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ○ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ○ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى
اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ○ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا
لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ○ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ
صَبْرًا ○ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ○ فَانْطَلَقَا
حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
نُّكْرًا ○ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ○ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ
عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ○ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ

तसततीअ मइय सबरा ○ व कैफ तस्बिरु अला मा लम तुहित बिही खुबरा ○ काल सतजिदूनी इनशाअल्लाहु साबिरंव्व ला आसी लक अमरा ○काल फइनित्तबअतिनी फला तसअलनी अन शैइन हत्ता उहदिस लक मिंहु जिकरा ○ फन्तलका हत्ता इजारकिबा फीस्सफीनति खरकहा। काल अखरक्तहा लितुगरिक अहलहा लक्द जिअत शैअन इमरा ○ काल अलम अकुल इन्नक लन तसततीअ मइय सब्रा ○ काल ला तुअखिजनी बिमा नसीतु व ला तुरहिक्नी मिन अम्री उस्रा ○ फनतलक्का हत्ता इजा लकीया गुलामन फक्तलहु काल अक्तल्त नफ्सनन जकिय्यतम्बीगैरि नफ्सि। लक्द जिअत शैअन्नुकरा ○ काल अलम अकुल्लक इन्नक लन तसततीअ मइय सब्रा ○ काल इन सअल्तुक अन शैइम्बअदहा फला तुसाहिब्नी कद बलग्त मिल्लदुन्नी उज्रा ○ फन्तलका हत्ता इजा अतया

اَهْلَ قَرْيَةِ ِۣاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ○ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَ بَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ○ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ○ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ○ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ○ وَ اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً

अहल करयतिनिस्ततअमा अहलहा फअबव अंय्युज़य्यीफु हुमा फवजदा फीहा जिदारंय्युरिदु अंय्यनकज़्ज़ फअकामहु। काल लवशिअत लत्तखजत अलैहि अजरा ०काल हाज़ा फिराकु बैनी व बैनिक सउनब्बिउक बितावीलि मालम तसततिअ्अलैहि सब्रा० अम्मससफीनतु फकानत लिमसाकीन यअमलून फिलबहरि फअरत्तु अन अईयबहा वकान वरॉअ हुम्मलिकुंय्या खुज़ु कुल्ल सफीनतिन ग़सबा ० वअम्मल गुलामु फकान अबवाहु मुअमिनैनी फखशीना अंय्युरहिक़हुमा तुग़यानंव्वकुफरा ० फअरदना इंय्युबदि लहुमा रब्बुहुमा खैरम्मिनहु ज़कातंव्व अकरब रुह्मा ० व अम्मल जिदारु फकान लिगुलामैनी यतीमैनि फिल मदीनति वकान तह्तहु कन्जुल्लहुमा व कान अबूहुमा सॉलिहा फअराद रब्बुक अंय्यबलुग़ा अशुद्दहुमा वयसतखरिजा कन्ज़हुमा

مِّن رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُۥ عَنْ أَمْرِى ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝
وَيَسْـَٔلُونَكَ عَن ذِى ٱلْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُوا۟ عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُۥ
فِى ٱلْأَرْضِ وَءَاتَيْنَٰهُ مِن كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ۝ فَأَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ ٱلشَّمْسِ
وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِى عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِمَّآ أَن
تُعَذِّبَ وَإِمَّآ أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۝ قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُۥ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ
رَبِّهِۦ فَيُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا نُّكْرًا ۝ وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُۥ جَزَآءً ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ
لَهُۥ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ ٱلشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ
لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ۝ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝ ثُمَّ أَتْبَعَ

रहमतम्मिर्रब्बिक वमा फअल्तुहू अन अम्रि। जालिक तावीलु मालम तसतिअ्अलैहि सबरा ० वयस्अलूनक अन जिलकरनैनि। कुल सअत्लू अलैकुम मिन्हु जिकरा ० इन्नामक्कन्ना लहु फिलअर्जि व आतैनाहु मिन कुल्लि शैइन सबबा ० फअत्बअ सबबा ० हत्ता इजा बलग मग्रिबश्शम्सी वजदहा तग्रुबु फी ऐनि हमिअतिंव्व वजद इन्दहा कौमा। कुल्ना याजलकरनैनि इम्मा अन तुअज़्ज़िब व इम्मा अन तत्तखिज फीहिम हुसना ० काल अम्मा मिन जलम फसौफ नुअज़्ज़िबुहु सुम्म युरद्दु इला रब्बिही फयुअज़्ज़िबुहु अजाबन्नुक्रा ० व अम्मा मन आमन व अमिल सॉलिहन फलहु जजाअल हुस्ना व सनकूलु लहु मिन अम्रिना युस्रा ० सुम्म अतबअ सबबा ० हत्ता इज बलग मत्लिअश्शमसि वजदहा

سَبَبًا ○ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
قَوْلًا ○ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَ مَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ○ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ
خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ○ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۗ حَتّٰٓى
اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ○ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ○ قَالَ هٰذَا
رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ○
وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ○ ق

तत्लुउ अला कौमिल्लमनजअल्लहुम मिन दुनिहासितरा ○ कज़ालिक। वकद अहत्ला बिमा लदैही खुबरा ○ सुम्म अत्बअ सबबा ○ हत्ता इज़ा बलग़ बैनस्सद्दैनि वजद मिन दुनिहिमा कौमल्ला यकादून यफ्कहून कौला ○ कालू याज़ल्करनैनि इन्न याजूज व माजूज मुफ्सिदून फ़िल अर्ज़ि फहल् नज्अलु लक खर्जन अला अन तजअल बैनना व बैनहुम सद्दा ○ काल मा मक्कन्नी फीहि रब्बी खैरुन फअईनू नी बिकूव्वतिन अजअल बैनकुम व बैनहुम रद्मा ○ आतूनी ज़ुबरल हदीद। हत्ता इज़ा सावा बैनस्सदफैनि कालन्फुखु। हत्ता इज़ा जअलहु नारन काल आतूनी उफरिग् अलैहि कितरा ○ फमस्ताऊ अंय्युज्हरुहु वमस्ततताऊ लहु नक्बा ○ काल हाज़ा रहमतुम्मिर्रब्बी फइज़ा जाअ वअदु रब्बी जअलहु दक्काअ वकान वअदुरब्बी हक्का○ वतरक्ना बअजहुम यौमइज़िंय्यमूजु

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ۝ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ
ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۝ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا
عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ
بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَّوْ

फि बअुजिव वनुफिख फिस्सूरि फजमअ्नाहुम जमआंव ० वअरज़्ना जहन्नम यौमइजिल्लिलकाफिरीन अर्ज़ा ० निल्लजीन कानत् अअयुनुहुम फी गिताइन अन ज़िक्री व कानू ला यस्ततीउन समअा ० अ-फ-हसिबल्लजी-न कफरु अंय्यत्तखिज़ू ईबादी मिन दूनी औलियाअ, इन्ना अअ्तद्ना जहन्नम लिल्काफिरीन नुजुला ० कुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरीन अअ्माला ० अल्लजीन ज़ल्ल सअयुहुम फिल हयातिद्दुनया व हुम यह्सबून अन्नहुम युह्सिनून सुनअा० उलाइ कल्लजी न कफरु बिआयाति रब्बिहिम् व लिकाइही फहबितत् अअ्मालुहुम् फला नुकीमु लहुम् यौमल् कियामति वज़्ना ० ज़ालिक जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा कफरु वत्त खज़ू आयाती व

كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ
جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ○ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ○

रुसुली हुजुवा ० इन्नल्लजीन आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल् फिरदौसि नुजुला ० खालिदीन फीहा ला यब्गुन अन्हा हिवला ० कुल लौ कानल् बहरू मिदादल्लिकलिमाति रब्बी लनफिदल्बहरु कब्ल अन् तन्फद कलिमातु रब्बी व लौ जिअना बिमिस्लिही मददा ० कुल इन्नमा अना बशरुम मिस्लुकुम् युहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिदुन् फमन कान यर्जू लिकाअ रब्बिही फलयअमल् अमलन सॉलिहंव्वला युश्रिक बिईबादति रब्बिही अहदा ०

कोई काम दुशवार हो जाने के वक्त की दुआ

कोई काम दुशवार हो जाए (या कोई मुशकील आन पढे) तो ये दुआ पढे.

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحُزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवंव अनता तजअलुल हुजन सहलन इजा शिअता ०

सूरेह सज्दा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ

अलिफ् लाम् मीम ० तन्जीलुल् किताबि ला रैब फीहि मिर्रब्बिल् आलमीन ० अम् यकूलूनफ्तराहु बल् हुवल हक्कु मिर्रब्बिक लितुन्जिर कौमम्मा अताहुम मिन् नजीरिम्मिन कब्लिक लअ्ल्लहुम यह्तदून ० अल्लहुल्लजी खलकस्समावाति वलअर्ज वमा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल् अर्शि मा लकुम मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्वला शफीइन, अफला ततजक्करुन ० युदब्बिरुल अम्र मिनस्समाई इलल् अर्जि सुम्-म यअ्रुजु इलैहि फी यौमिन् का-न मिक्दारुहू अल्-फ स-नतिम्-मिम्मा तअुद्दून ० जालि-क आलिमुल-गैबि वश्शहा-दतिल् अजीजुर-रहीम ० अल्लजी अहस-न कुल्-ल शैइन् ख-ल-कहू व ब-द-अ खल्कल्-इन्सानि मिन तीन ०

جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ
مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ
كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ
اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا
لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا

सुम्म ज-अ-ल नस्-लहू मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम-महीन ० सुम्म सव्वाहु व न-फ-ख फीहि मिरूहिही व ज-अ-ल लकुमुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून ०व कालू अ-इजा जलल्ना फिल्अर्जि अ-इन्ना लफ़ी खल्किन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिका-इ रब्बिहिम् काफ़िरून ० कुल् य-तवफ्फ़ाकुम् म-लकुल्-मौतिल्लजी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून ० व लौ तरा इजिल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन्-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सर्ना व समिअ्ना फर्जिअ्ना नअ्मल् सालिहन् इन्ना मूकिनून ० व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल नफ्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक्कल्-कौलु मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअीन ० फजुकू बिमा नसीतुम् लिका-अ यौमिकुम् हाजा इन्ना नसीनाकुम् व जुकू

عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ○ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا
بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ
عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ○
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ○ أَفَمَنْ
كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوُونَ ○ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ○ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ
النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ
الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ○ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ

अज़ाबल्-खुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ० इन्नमा युअ्मिनु
बिआयातिनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरु बिहा ख़र्रू सुज्जदंव्-व
सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ०
तत-जाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल्-मज़ाजिअि यद्उ-न रब्बहुम्
ख़ौफ़ंव्-व-त-मअंव्व मिम्मा रज़क्नाहुम् युन्फ़िकून ० फ़ला
तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् कुर्रति अअ्युनिन्,
जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्ममलून ० अ-फ़-मन् का-न
मुअ्मिनन् कमन् का-न फ़ासिकन्, ला यस्तवून ०
अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति फ़-लहुम्
जन्नातुल्-मअ्वा नुज़ुलम् बिमा कानू यअ्मलून ० व
अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्वाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू
अंय्यख़्रुजू मिन्हा उईदू फ़ीहा व की-ल लहुम् ज़ूकू
अज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून ० व
ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् अज़ाबिल्- अदना दूनलअज़ाबिल

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ○ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ○ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً
يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ○ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ○ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
أَفَلَا يَسْمَعُونَ ○ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ
زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ○ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا

अक्बरि लअल्लहुम् यरजिऊन ० व मन अज़्लमु मिम्मन् जुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ्-र-ज़ अन्हा, इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुन्तकिमून ० व ल-कद् आतैना मुसल्-किता-ब फला तकुन् फी मिर्-यतिम् मिल्लिका-इही व जअल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राईल ० व जअल्ना मिन्हुम् अ-इम्मतंय्-यह्दू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरू, व कानू बिआयातिना यूकिनून ० इन्-न रब्ब-क हु-व यफ्सिलु बैनहुम् यौमल्-कियामति फीमा कानू फीहि यख़्तलिफून ० अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना मिन् कब्लिहिम् मिनल्-कुरूनि यम्शू-न फी मसाकिनिहिम्, इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिन्, अ-फला यस्मऊन ० अ-व लम् यरौ अन्ना नसूकुल्-मा-अइलल्-अर्जिल्-जुरुजि फनुख़्रिजु बिही ज़र्अन् तअ्कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फुसुहुम्, अ-फला युब्सिरून ० व यकूलू-न मता

الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ○ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ○

हाजल्-फत्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ○ कुल यौमल्-फत्हि ला यन्फउल्लजी-न क-फरू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्जरून ○ फ-अअ्रिज् अन्हुम् वन्तजिर् इन्नहुम् मुन्तजिरून ○

चार करोड नेकियां

हज़रत तमीमदारी रज़ि. से रिवायत है के हुजुर पाक स. ने फ़र्माया के जो शख्स इन चार कलमात को दस मर्तबा कहे तो इस के लिए चार करोड नेकियां लिख दी जाती है.

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا
صَمَدًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

अशहदु अंल्लाइलाहा इल्ललाहु वाहदहु ला शरीक लहु इलाहंव्वाहिदन अहदन समदल्लम यत्तखिज साहिबतंव्वला वलदंव्वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद ○

(मुसनदे अहमद, तिर्मीज़ी)

सुरेह यासीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰسٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؕ
تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ
الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى
الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا
فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ
اَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ

या-सीन् ० वल्कुरआनिल्-हकीम ० इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन ० अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ० तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर्-रहीम ० लितुन्ज़ि-र क़ौमम्मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम ग़ाफ़िलून ० ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून ० इन्ना जअ़ल्ना फ़ी अअ्नाक़िहिम् अग्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून ० व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून ० व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िरहुम् ला युअ्मिनून ० इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़्ज़िक्-र व ख़शि-यर्रहमा-न बिल्ग़ैबि फ़-बश्शिरहु बिमग्फ़ि-रतिंव्-व अज्रिन् करीम ० इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन्

أَحْصَيْنَٰهُ فِىٓ إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَٰبَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَآءَهَا
الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا إِنَّآ
إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِن شَىْءٍ
إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلَٰغُ
الْمُبِينُ ۝ قَالُوٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ أَئِن ذُكِّرْتُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَ
جَآءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝ اتَّبِعُوا مَن
لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ۝ وَمَا لِىَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِى فَطَرَنِى وَإِلَيْهِ

अहसैनाहु फी इमामिम्-मुबीन ० वज़्रिब् लहुम् म-सलन् अस्हाबल्-कर्-यति इज् जा-अहल्-मुर्-सलून ० इज् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ-कज़्ज़बूहुमा फ-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ्क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून ० कालू मा अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-रहमानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून ० कालू रब्बुना यअ्लमु इन्ना इलैकुम् ल-मुर्-सलून ० व मा अलैना इल्लल्-बलागुल-मुबीन ० कालू इन्ना त-तय्यरना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू ल-नरजुमन्नकुम् व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अज़ाबुन् अलीम ० कालू ताईरुकुम् म-अकुम् अ-इन् ज़ुक्किरतुम्, बल् अन्तुम् कौमुम्-मुस्रिफून ० व जा-अ मिन् अक्सल्-मदीनति रजुलुंय्-यस्आ. काल- या कौमित्तबिउल्-मुर्-सलीन ० इत्तबिउ मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्वहुम् मुह्तदून ० व मा लि-य ला अअ्बुदुल्लज़ी फ-त-रनी व इलैहि

تُرْجَعُوْنَ ○ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ

شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ○ اِنِّيْۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ اِنِّيْۤ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ

فَاسْمَعُوْنِ ○ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ○ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ

وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ○ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ

مَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ○ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ○ يٰحَسْرَةً

عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ○ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ○ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ

لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ○ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

तुर्जउन ○ अ-अत्तखिज़ु मिन् दुनिही आलि-हतन् इंय्युरिद्-निर्-रह्मानु बिजुर्रिल्-ला तुग्नि अन्नी शफा-अतुहुम् शैअंव्व ला युन्किज़ुन ○ इन्नी इजल्-लफी ज़लालिम्-मुबीन ○ इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फस्मऊन ○ कीलद्खुलिल्-जन्न-त, का-ल याले-त कौमी यअ्लमून ○ बिमा ग-फ-र ली रब्बी व ज-अ-लनी मिनल्-मुक्रमीन ○ व मा अन्ज़ल्ना अला कौमिही मिम्बअ्दिही मिन जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन ○ इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ-इज़ा हुम् खामिदून ○ या हस्-रतन् अलल्-इबादि, मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ○ अलम् यरौ कम् अह्लक्ना कब्लहुम् मिनल्-कुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिऊन ○ व इन् कुल्लुल्-लम्मा जमीउल-लदैना मुह्जरून ○ व आ-यतुल् लहुमुल्-अर्जुल्-मै-ततु अह्यैनाहा व अख्रज्ना मिन्हा

يَأْكُلُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ
الْعُيُوْنِ ۙ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ○ سُبْحٰنَ
الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا
يَعْلَمُوْنَ ○ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۙ وَ
الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ؕ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ
حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ○ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ
سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ○ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ
الْمَشْحُوْنِ ۙ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ○ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ

हब्बन् फमिन्हु यअ्कुलून ○ व-जअ़ल्ना फीहा जन्नातिम्
मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्नाबिंव-व फज्जर्ना फीहा मिनल्-उ़यून
○ लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मिलतहु ऐदीहिम्,
अ-फला यश्कुरून ○ सुब्हानल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज
कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फुसिहिम् व
मिम्मा ला यअ्लमून ○ व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लख़ु
मिन्हुन्नहा-र फ-इज़ा हुम् मुज़्लिमून ○ वश्शम्सु तज्री
लिमुस्त-क़र्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम
○ वल्क़-म-र क़द्दरनाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ़-द
कल्-उ़र्जूनिल्-क़दीम ○ लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल्
क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्-नहारि, व कुल्लुन् फी
फ-लकिंय्-यस्बहून ○ व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना
ज़ुर्रिय्य-तहुम् फिल्-फुल्किल्-मश्हून ○ व ख़लक़्ना लहुम्
मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून ○ व इन्-नशअ् नुग्रिक़्हुम् फला

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا
مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنظُرُونَ
إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً
وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَنسِلُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ

सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ुन ० इल्ला रह्म-तम् मिन्ना व मताअन् इला हीन ०व इज़ा की-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् लअ़ल्लकुम् तुर्हमून ० व मा तअ्तीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन ० व इज़ा की-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु क़ालल्लज़ी-न कफ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्अिमु मल्लौ यशाउल्लहु अत्-अ-मह् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम्- मुबीन ० व यक़ूलू-न मता हाज़ल वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सै-हतंव्-वाहि-दतन् तअ्ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून ० फ़ला यस्ततीऊ-न तौसि-यतंव्-व ला इला अह्लिहिम् यर्जिऊन ०व नुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून ० कालू या वैलना म्मब-अ़-सना मिम्-मर्क़दिना ۜ हाज़ा मा व-अ़-दर्रह्मानु

الْمُرْسَلُوْنَ ○ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ○ فَالْيَوْمَ
لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ
فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ○ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ○ لَهُمْ
فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ○ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ
أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ○ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهٗ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○ وَّأَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ
جِبِلًّا كَثِيْرًا أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ○ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ○
إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ○ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيْهِمْ

व स-दक़ल्-मुरसलून ○ इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ-इज़ा हुम् जमीउल्लदैना मुहज़रून ○ फ़लयौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून ○ इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फी शुग़ुलिन् फाकिहून ○ हुम् व अज़्वाजुहुम् फी ज़िलालिन् अलल्-अराइकि मुत्तकिऊन ○ लहुम् फीहा फाकि-हतुंव्-व लहुम् मा यद्-दऊन ○ सलामुन्, कौलम् मिर्रब्बिर्-रहीम ○ वम्ताज़ुल्-यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून ○ अलम् अअ्हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन ○ व अनिअ्बुदूनी. हाज़ा सिरातुम् मुस्तकीम ○ व ल-कद् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्, अ-फ़लम् तकूनू तअ्किलून ○ हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू-अदून ○ इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून ○ अलयौ-म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम्

وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ○ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الصِّرَاطَ فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ○ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَ
لَا يَرْجِعُونَ ○ وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ○ وَمَا عَلَّمْنَاهُ
الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ○ لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا
وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ○ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا
فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ○ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ○ وَلَهُمْ فِيهَا
مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ○ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ
يُنْصَرُونَ ○ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحْضَرُونَ ○ فَلَا يَحْزُنْكَ

व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून ० व लौ
नशा-उ ल-तमस्ना अला अअ्युनिहिम् फस्त-बकुस्सिरा-त
फ-अन्ना युब्सिरून ० व लौ नशा-उ ल-मसख़्नाहुम्
अला मका-नतिहिम् फ-मस्तताऊ मुजिय्यंव्-व ला युर्जिऊन
० व मन् नुअम्मिर्हु नुनक्किस्हु फिल्ख़ल्कि अ-फला
यअ्किलून ० व मा अल्लम्नाहुश्-शिअ्-र व मा यम्बगी
लहू इन्-हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्व कुरआनुम्-मुबीनुल ० लियुन्ज़ि-र
मन् का-न हय्यंव्व यहिक्कल्-कौलु अलल्-काफ़िरीन ०
अव लम् यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम् मिम्मा अमिलत्
ऐदीना अन्आमन् फहुम् लहा मालिकून ० व ज़ल्लल्नाहा
लहुम् फमिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून ० व लहुम्
फीहा मनाफिउ़व मशारिबु, अ-फला यश्कुरून ० वत्त-ख़ज़ू
मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल् लअल्लहुम् युन्सरून ० ला
यस्ततीऊ-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रून ०

قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا
خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ
خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ۝ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا
أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ
شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

फला यह्जुन्-क कौलुहुम् ' इन्ना नअ्लमु मा युसिररून व मा युअ्लिनून ० अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना खलक्नाहु मिन् नुत्फतिन् फ-इजा हु-व खसीमुम्-मुबीन ० व ज़-र-ब लना म-सलंव्व नसि-य खल्कहू, का-ल मंय्युह्यिल्- इजा-म व हि-य रमीम ० कुल् युह्यीहल्लजी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्, व हु-व बिकुल्लि खल्किन् अलीमु-नि ० ल्लजी ज-अ-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-जरि नारन् फ-इजा अन्तुम् मिन्हु तूकिदून ० अ-व लैसल्लजी ख़-लकस्समावाति वल्अर्-ज़ बिकादिरिन् अला अंय्यख़्लु-क मिस्लहुम्, बला व हुवल् खल्लाकुल् अलीम ० इन्नमा अम्रुहू इजा अरा-द शैअन् अंय्यकू-ल लहू कुन् फ-यकून ० फ-सुब्हानल्लजी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्व इलैहि तुर्जऊन ०

सुरेह-दुख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ○ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ○ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ○
فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ○ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ○ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ
كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ○ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ○
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ○ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ○
يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ○
اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ○ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ

हा-मीम् ० वल्-किताबिल्-मुबीन ० इन्ना अन्ज़ल्नाहु फी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन ० फीहा युफ़्रकु कुल्लु अम्रिन् हकीम ० अम्रम् मिन् इन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन ० रहम-तम् मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीउल्-अलीम ० रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा इन् कुन्तुम् मूक़िनीन ० ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन ० बल् हुम् फी शक्किंय्-यल्-अबून ० फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समा-उ बिदुख़ानिम्-मुबीन ० यग्शन्ना-स, हाज़ा अज़ाबुन् अलीम ० रब्बनक्शिफ् अन्नल् अज़ाबुन् अलीम ० रब्बनक्शिफ् अन्नल्-अज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून ० अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन ० सुम्-म तवल्लौ अन्हु व क़ालू

مَجْنُوْنٌ ○ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ○ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ
الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ○ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ ○ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ○ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ○ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ○
وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ○ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ○ فَاَسْرِ
بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ○ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ○
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ○ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ○ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا
فٰكِهِيْنَ ○ كَذٰلِكَ ۫ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ○ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ

मु-अल्लमुम्-मज्नून ○ इन्ना काशिफुल्-अज़ाबि क़लीलन्
इन्नकुम् आ-इदून ○ यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा
इन्ना मुन्तक़िमून ○ व ल-क़द् फ़तन्ना क़ब्लहुम् क़ौ-म
फ़िर्औ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम ○ अन् अद्दू
इलय्-य इबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन ○ व
अल्-ला तअ्लू अलल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्
-मुबीन ○ व इन्नी उज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन्
तर्जुमून ○ व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्तज़िलून ○ फ़-
दआ रब्बहू अन्-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ○ फ़-असरि
बिइबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बऊन ○ वत्रुकिल्-बह्-र
रह्वन्, इन्नहुम् जुन्दुम् मुग़्-रकून ○ कम् त-रकू मिन्
जन्नातिंव्-व उयूनिंव ○ व ज़ुरूइंव्-व मक़ामिन् करीमिंव्○
व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन ○ कज़ालि-क, व
औरस्नाहा क़ौमन् आ-ख़रीन ○ फ़मा ब-कत् अलैहिमुस्समा-उ

الْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ○ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ
الْمُهِينِ ○ مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ○ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ
عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ○ وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ○ إِنَّ
هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ○ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ○ فَأْتُوا
بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ○ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ○ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لَاعِبِينَ ○ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ○ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ○ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ○

वल्अरज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन ○ व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन ○ मिन् फ़िर्औ-न, इन्नहू का-न आलि-यम् मिनल्-मुस्रिफ़ीन ○ व ल-क़दिख़्तर्नाहुम् अला इल्मिन् अलल्-आलमीन ○ व आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन ○ इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून ○ इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन ○ फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ○ अ-हुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बइंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, अह्लक्नाहुम्, इन्नहुम् कानू मुज्रिमीन ○ व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाइबीन ○ मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून ○ इन्-न यौमल्-फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्मईन ○ यौ-म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून ○

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ۝ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ۝

इल्ला मर्रहिमल्लाहु, इन्नहु हुवल् अजीजुर्रहीम ० इन्-न श-ज-रतज़्जक्कूम ० तआमुल्-असीम ० कल्मुहि्ल यग्ली फिल्बुतून ० क-गलयिल्-हमीम ० खुजूहु फअ्तिलूहु इला सवाइल्-जहीम ० सुम्-म सुब्बू फौ-क रअ्सिही मिन् अजाबिल्-हमीम ० जुक् इन्न-क अन्तल्-अजीजुल्-करीम ० इन्-न हाजा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून ० इन्नल्-मुत्तकी-न फी मकामिन् अमीन ० फी जन्नातिंव्-व अुयूनिं ० यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रकिम मु-तकाबिलीन ० कजालि-क, व जव्वज्नाहुम् बिहूरिन् ईन ० यद्उ-न फीहा बिकुल्लि फाकि-हतिन् आमिनीन ० ला यजूकू-न फीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वकाहुम् अज़ाबल्-जहीम ० फ़ज़्लम्-मिर्रब्बि-क, जालि-क हुवल् फौजुल-अजीम ० फ-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लअल्लहुम् य-तज़क्करून ० फर्-तकिब्-इन्नहुम् मुर्-तकिबून ०

सूरेह - फताह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ○ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ○ وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ○ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ
فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ○ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ○ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ

इन्ना फ-तह्ना ल-क फत्हम्-मुबीनल ○ लि-यग्फि-र लकल्लाहु मा तकद्द-म मिन् जम्बि-क व मा त-अख्ख-र व युतिम् निअ्-म-तहू अलै-क व यहिद-य-क सिरातम्-मुस्तकीमंव ○ व यन्सु-रकल्लाहु नस्रन् अजीजा ○ हुवल्लजी अन्जलस्सकी-न-त फी कुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ ईमानिहिम्, व लिल्लाहि जुनुदुस्समावाति वल् अर्जि, व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा ○ लियुद्खिलल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तजरी मिन् तहितहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा व युकफ्फि-र अन्हुम् सय्यिआतिहिम्, व का-न जालि-क इन्दल्लाहि फौजन् अजीमंव ○ व युअज़्जिबल्-मुनाफिकी-न वल्मुनाफिकाति वल् मुश्रिकी-न वल् मुश्रिकातिज्-जान्नी-न बिल्लाहि जन्नस्सौई, अलैहिम् दाई-रतुस्-सौइ व गजिबल्लाहु

السَّوْءِ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ○ وَ
لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ○ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ
مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ○ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ
اَصِيْلًا ○ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ فَمَنْ
نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ○
سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا
اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ○ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ

अलैहिम् व ल-अ-नहुम् व अ-अद्-द लहुम् जहन्न-म,
व साअत् मसीरा ०व लिल्लाहि जुनुदुस्समावाति वल्अर्जि,
व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा ० इन्न अर्सल्ना-क
शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नजीरा ० लितुअमिनू बिल्लाहि
व रसूलिही व तुअज़्ज़िरूहु व तुवक्किरूहु, व तुसब्बिहूहु
बुक्र-तंव्-व असीला ० इन्नल्लजी-न युबायिऊन- क
इन्नमा युबयिऊनल्ला-ह, यदुल्लाहि फौ-क ऐदीहिम् फ-मन्-न-
क-स फ-इन्नमा यन्कुसु अला नफ्सिही व मन् औफा
बिमा आ-ह-द अलैहुल्ला-ह फ-सयुअ्तीहि अज्रन् अजीमा
० स-यकूलु ल-कल्-मुखल्लफू-न मिनल्- अअ्राबि श-गलत्ना
अम्वालुना व अहलुना फस्तग्फिर् लना यकूलू-न
बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फी कुलूबिहिम्, कुल्
फ-मय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम्
जुर्रन औ अरा-द बिकुम् नफ्अन्, बल् कानल्लाहु बिमा
तअ्मलू-न खबीरा ० बल् जनन्तुम् अल्लयंय्यन्कलिबर्-रसूलु

وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنتُمْ
قَوْمًا بُورًا ○ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ○ وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا ○ سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ
يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ
فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ○ قُل لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ
الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ فَإِن
تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا وَإِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ

वल्-मुअमिनु-न इला अह्लीहिम् अ-बदंव्व जुय्यि-न जालि-क फी कुलूबिकुम् व जनन्तुम् जन्नस्सौइ व कुन्तुम् कौमम्-बूरा ○ व मल्लम् युअमिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ-इन्ना अअ्तद्ना लिल्काफिरी-न सईरा ○ व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, यग्फिरु लिमंय्यशा-उ व युअज़्जिबु मंय्यशा-उ, व कानल्लाहु गफूरर्-रहीमा ○ स-यकूलुल्-मुखल्लफु-न इजन्त- लक्तुम् इला मगानि-म लितअ्खुजूहा जरूना नत्तबिअ्कुम् युरीदू-न अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि, कुल्-लन् तत्तबिऊना कजालिकुम् कालल्लाहु मिन् कब्लु फ-स-यकूलू-न बल् तह्सुदु-नना बल् कानू ला यफ्कहू-न इल्ला कलीला ○ कुल् लिल्-मुखल्लफी-न मिनल्-अअ्राबि स-तुद्औ-न इला कौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुकातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ-इन् तुतीअू युअ्तिकुमुल्लाहु अज्रन् हसनन् व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् कब्लु युअज़्जिब्कुम्

عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ
يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ
الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّ
مَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً
تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ

अ़ज़ाबन् अलीमा ० लै-स अ़लल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ्रजि हर-जुंव्-व ला अ़-लल्मरीज़ि हरजुन्, वमंय्युतिइल्ला-ह व रसूलहू युदख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा ० ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज् युबायिऊन-क तह्तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी कुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्सकी-न-त अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्हन् क़रीबा ० व मग़ानि-म कसी-रतंय्-यअ्ख़ुज़ूनहा, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा ० व-अ़-दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-रतन् तअ्ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम् व लितकू-न आ-यतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा ० व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अहातल्लाहु बिहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा ० व लौ क़ात-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल्-अद्बा-र सुम्-म

لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ

ला यजिदू-न वलिय्यंव् व ला नसीरा ० सुन्नतल्लाहिल्लती कद् ख-लत् मिन् कब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ० व हुवल्लज़ी कफ़्-फ ऐदि-यहुम् अन्कुम् व ऐदि-यकुम् अन्हुम् बि-बत्नि मक्क-त मिम्-बअ्दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अलैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअ्लमू-न बसीरा ० हुमुल्लज़ी-न कफ़रू व सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअ्कूफ़न् अंय्यब्लु-ग़ महिल्-लहू, व लौ ला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम् मुअ्मिनातुल्-लम् तअ्लमूहुम् अन् त-तऊहुम् फ़तुसी-बकुम् मिन्हुम् म-अर्रतुम्-बिग़ैरि इल्मिन् लि-युदख़िल-ल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशा-उ लौ तज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अज़ाबन् अलीमा ० इज़् ज-अलल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी कुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़लल्लाहु सकी-न-तहू अला रसूलिही व अलल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-मतत्-तक्वा व

كَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا
بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ
لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَي الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا
سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ
ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۖ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

कानु अ-हक्-क बिहा व अह्लहा, व कानल्लहु बिकुल्लि शैइन् अलीमा ० ल-क़द् स-दक़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्या बिल्हक़्क़ ल-तद्खुलुन्नल्- मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊ-सकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न, फ़-अलि-म मा लम् तअ-लमु फ़-ज-अ-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़तहन् क़रीबा ० हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा ० मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि, वल्लज़ी-न म-अहू अशिद्दा-उ अलल्-कुफ़्फ़ारि रु-हमा-उ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अन् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि, ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम फ़िल्-इन्जीलि, क-ज़र्इन् अख़्र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्तवा अला सूक़िही युअ्जिबुज़्ज़ुर्रा-अ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र, व-अदल्लाहुल्लज़ी-न आमनु व अमिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अज़ीमा ०

सूरेह काफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ○ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ
هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ○ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ○ قَدْ عَلِمْنَا
مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ○ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ○ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا
وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ○ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا
فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ○ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ○ وَنَزَّلْنَا
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ○ وَالنَّخْلَ

काफ 1 वल्-कुरआनिल्-मजीद बल अजिबु अन् जा-अहुम् मुन्जिरुम्-मिन्हुम् फकालल्-काफिरू-न हाजा शैउन् अजीब ○ अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबन् जालि-क रजुउम्-बईद ○ कद् अलिम्ना मा तुन्कुसुल्-अरजु मिन्हुम् व इन्दना किताबुन् हफीज ○ बल् कज्जबू बिल्-हक्कि लम्मा जा-अहुम् फहुम् फी अम्रिम्-मरीज ○ अ-फ लम् युन्जुरू इलस्समा-इ फौकहुम् कै-फ बनैनाहा व जय्यन्नाहा व मा लहा मिन् फुरूज ○ वलअर-ज मदद्नाहा व अल्कैना फीहा रवासि-य व अम्बत्ना फीहा मिन् कुल्लि जौजिम्-बहीज ○ तब्सि-रतंव्-व जिक्रा लिकुल्लि अब्दिम्मुनीब ○ व नज्जल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रकन् फ-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद ○ वन्नख्-ल

بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ○ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ
الْخُرُوْجُ ○ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ○ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ
وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ○ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ○
اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ○ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ○
اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ○ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا
لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ○ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
تَحِيْدُ ○ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ○ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا

बासिकातिल्-लहा तल्उ़न्-नजीद ○ रिज़्कल्-लिल्इबादि व अह्यैना बिही बल्दतम्-मैतन्, कज़ालिकल्-ख़ुरूज ○ कज़्ज़बत् कब्लाहुम् कौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद ○ व आदंव्-व फ़िर्औनु व इख़्वानु लूत ○ व अस्हाबुल्-ऐ-कति व कौमु तुब्बइन्, कुल्लुन् कज़्ज-बर्रुसु-ल फ-हक्-क वईद ○ अ-फ़-अयीना बिल्ख़ल्किल्-अव्वलि, बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन ख़ल्किन् जदीद ○ व ल-कद् ख़लक्नल्-इन्सा-न व नअ्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक्रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद ○ इज़् य-तलक्कल्-मु-तलक्कियानि अनिल्यमीनि व अनिश्शिमालि कईद ○ मा यल्फ़िज़ु मिन् कौलिन् इल्ला लदैहि रकीबुन् अतीद ○ व जाअत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक्कि, ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद ○ व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि, ज़ालि-क यौमुल्-वईद ○ व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम्

سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ○ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ
فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ○ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ○ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ
كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ○ مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ○ الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ○ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ
كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ○ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ○
مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ○ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ
امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ○ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ○
هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ○ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ

म-अहा सा-इकुंव्व शहीद ०. ल-कद् कुन्-त फी गफ्लतिम्-मिन् हाजा फ-कशफ्ना अन्-क गिता-अ-क फ-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद ० व का-ल करीनुहू हाजा मा ल-दय्-य अतीद ० अल्किया फी जहन्न-म कुल्-ल कफ्फारिन् अनीद ० मन्नाइल्-लिल्ख़ैरि मुअ्तदिम्-मुरीब ० अल्लजी ज-अ़-ल मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख-र फ-अल्कियाहु फिल्-अज़ाबिश्-शदीद ० का-ल करीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फी ज़लालिम्-बईद ० का-ल ला तख्तसिमू ल-दय्-य व कद कद्दमतु इलैकुम् बिल्-वईद ० मा युबद्दलुल्-कौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्-अबीद ० यौ-म नकूलु लि-जहन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तकूलु हल् मिम्-मज़ीद ० व उज़्लि-फतिल् जन्नतु लिल्मुत्तकी-न ग़ै-र बईद ० हाजा मा तु-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफीज ० मन् ख़शियर्रहमा-न बिल्ग़ैबि

بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا
وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا
فِى الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ
اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ

व जा-अ बिकल्बिम्-मुनीब ० निद्खुलूहा बि-सलामिन्, ज़ालि-क यौमुल्-खुलूद ० लहुम्-मा यशाऊ-न फीहा व लदैना मज़ीद ० व कम् अह्लक्ना कब्लहुम् मिन् करनिन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्शन् फ-नक्कबू फिल्-बिलादि, हल् मिम्-महीस ० इन्-न फी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू कल्बुन् औ अल्कस्सम्-अ व हु-व शहीद ० व ल-कद् खलक्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्लुगूब ० फस्बिर् अला मा यकूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलूइश्शम्सि व कब्लल्-गुरूब ० व मिनल्लैलि फ-सब्बिह्हु व अद्बारस्-सुजूद ० वस्तमिअ् यौ-म युनादिल्-मुनादि मिन्-मकानिन् करीब ० यौ-म यस्मऊनस्-सै-ह-त बिल्हक्कि,

ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ○ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ○ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۭ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ○ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَا
اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۣ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ○

ज़ालि-क यौमुल् ख़ुरूज ○ इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल्-मसीर ○ यौ-म तशक्क़-क़ुल्-अर्ज़ु अन्हुम् सिराअन्, ज़ालि-क हश्रुन् अलैना यसीर ○ नह्नु अअ्लमु बिमा यक़ूलू-न व मा अन्-त अलैहिम् बि-जब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्-क़ुरआनि मंय्यख़ाफ़ु वईद ○

अदाए शुक्र

जिस ने ये दुआ सुबह के वक्त पढी तो इस ने इस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने ये दुआ शाम के वक्त पढी तो इस ने इस रात का शुक्र अदा कर दिया। (एक मर्तबा)

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ
لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म मा असबह बि मिन्नअमतिन अवबिअहदिम मिन खलकिक फमिनक वहदक ला शरीक लक फलकलहम्दु वलकश्शुकरु.

शाम को **असबह** की जगह **अमसा** पढे।

(अबुदाउद ३१८/४, निसाई, इब्नुस्सुन्नी)

सुरेह-रहमान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الرَّحْمٰنُ ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۙ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ○ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ وَّ
النَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ○ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَ وَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ ۙ وَ
اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۙ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّ
النَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۙ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ خَلَقَ
الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○

अर्रहमानु ० अल्ल-मल्-कुर्आन. खलकल् इन्सा-न ० अल्ल-महुल्-बयान ० अश्शम्सु वल्क-मरु बिहुस्बानिंव् ० वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान ० वस्समा-अ र-फ-अहा व व-जअल्-मीजान ० अल्ला ततगौ फिल्मीजान ० व अकीमुल्-वज्-न बिलकिस्ति व ला तुख्सिरुल्-मीजान ० वल्अर्-ज व-ज-अहा लिल्-अनाम ० फीहा फाकि-हतुंव्-वन्नख्लु जातुल् अक्माम ० वलहब्बु जुल्-अस्फि वर्-रैहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्जिबान ० ख-लकल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्-फख्खार ० व ख-लक्ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्जिबान ० रब्बुलमश्रिकैनि व रब्बुल्-मग्रिबैन ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्जिबान ०

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ○ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يَخْرُجُ
مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـٰٔتُ فِي الْبَحْرِ
كَالْاَعْلَامِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ○ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو
الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ○ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

म-रजल्-बहरैनि यल्तकियान ○ बैनहुमा बर्-जखुल-ला यब्गियान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअलुउ वल्-मर्जान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ व लहुल्- जवारिल्-मुन्श-आतु फ़िल्बहिर कल्-अअ्लाम ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ कुल्लु मन् अलैहा फ़ानिंव्- ○ -व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क जुल्-जलालि वल्-इक्राम ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ यस्अलुहू मन् फ़िस्समावाति वलअर्ज़ि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फ़ी शअ्निन् ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ स-नफ़रुग़ु लकुम् अय्युहस्स-कलान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ या मअ् -शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फुज़ू मिन् अक्ता-रिस्समावाति वल्अर्ज़ि फन्फुज़ू ला तन्फुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ युर्-सलु अलैकुमा

شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَیَوْمَئِذٍ لَّا یُسْـَٔلُ عَنْ
ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ یُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِیْمٰهُمْ فَیُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِیْ وَ الْاَقْدَامِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ یُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ۝ یَطُوْفُوْنَ بَیْنَهَا وَ بَیْنَ حَمِیْمٍ اٰنٍ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ۚ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ

शुवाजुम्-मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फला तन्तसिरान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फ-इज़न् शक्कतिस्समा-उ फ-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फयौमइज़िल्-ला युस्अलु अन् जम्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० युअ्-रफुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ्युअ्-खज़ु बिन्नवासी वल्-अक़्दामि ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० हाज़िही जहन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ०ᵀ यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० व लि-मन् ख़ा-फ मका-म रब्बिही जन्नतान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० ज़वाता अफ्नान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ०फीहिमा ऐनानि तज्रियानि ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फीहिमा मिनकुल्लि

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَاۤىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۗ وَ
جَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ
يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَاۤنٌّ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ○
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ هَلْ جَزَاۤءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُدْهَاۤمَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّ
نَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا

फाकि-हतिन् जौजान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० मुत्तकिई-न अला फुरुशिम्-बता-इनुहा मिन् इस्तब्-रक़िन्, व जनल्-जन्नतैनि दान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फीहिन्-न कासिरातु-र्तर्फि लम यत्मिस-हुन-न इन्सुन् कब्लहुम् व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० क-अन्न-हुन्नल्याक़ूतु वल्-मर्जान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० हल् जज़ाउल्-इह्सानि इल्लल्-इह्सान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० व मिन् दूनिहिमा जन्नतान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० मुद् हाम्मतानि ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फीहिमा ऐनानि नज़्ज़ा-खतानि ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फीहिमा फाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फीहिन्-न खैरातुन् हिसान ०

تُكَذِّبٰنِ ۝ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِيَامِ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ
وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ
ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝

फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० हुरुम्-मक्सूरातुन् फ़िल-खियाम ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० लम् यत्मिसहुन-न इन्सुन् कब्लहुम् व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० मुत्तकिई-न अला रफ्रफिन् खुज़्रिंव्-व अब्करिय्यिन् हिसान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० तबा-रकस्मु रब्बि-क ज़िल् जलालि वल्-इक्राम ०

बाज़ सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : सुरेह मुल्क हर शब पढने वाला अज़ाबे कब्र (व हश्र) से महफुज़ रहेगा ।

फर्माया स. : सुरेह यासीन हर सुबह पढने वाला यकीनन जन्नती होगा. हर मुशकील हल होगी ।

फर्माया स. : हर नमाज़ फर्ज़ के बाद अयतल कुर्सी पढने वाले को अल्लाह जन्नत अता करेगा. यकीनन ।

फर्माया स. : हर रोज़ सुरेह दहर पढने वाले पर जन्नत वाजिब की जाती है ।

सुरेह वाकिआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ إِذَا رُجَّتِ
الْأَرْضُ رَجًّا ۝ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝ وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا
ثَلٰثَةً ۝ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَا أَصْحٰبُ
الْمَشْئَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْآخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ
مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِئِيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝
بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا

इज़ा व-क-अतिल्-वाकि-अतु ० लै-स लिवक़अतिहा काज़िबह ०ⁿ खाफि-ज़तुर-राफि-अः ० इज़ा रुज्जतिल्-अर्जु रज्जंव्- ० -व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा ० फ-कानत् हबा-अम् मुम्-बस्संव- ० -व कुन्तुम् अज़्वाजन् सलासः ० फ-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः ० व अस्हाबुल्-मश्-अ-मति मा अस्हाबुल्-मश्-अमः ० वस्साबिकुनस्-साबिकून ० उलाइ-कल्-मुकर्रबून ० फीजन्नातिन्-नइम ० सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व क़लीलुम् मिनल-आख़िरीन ० अला सुररिम्-मौज़ुनातिम्- ० -मुत्तकिई-न अलैहा मु-तक़ाबिलीन ० यतूफु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-खल्लदून ० बिअक्वाबिंव्-व अबारी-क़ व कअ्सिम्-मिम्-मइन ० ला युसद्-दअ़ून अन्हा

وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝
وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَ
اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۥ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝
وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝ عُرُبًا
اَتْرَابًا ۝ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝
وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۥ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۝ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۝

व ला युन्जिफून ० व फाकि-हतिम्-मिम्मा यत-खय्यरुन ० व लहिम तैरिम-मिम्मा यश्तहून ० व हुरुन् ईन ० क-अम्सालिल्-लुअ्लुइल्-मक्नून ० जजा-अम् बिमा कानू यअ्मलून ० ला यस्मऊ-न फीहा लग्वंव्-व ला तअ्सीमा ० इल्ला कीलन् सलामन् सलामा ० व अस्हाबुल्यमीनि मा अस्हाबुल्-यमीन ० फी सिद्रिम्-मख्जूदिंव- ० -व तल्हिम्-मन्जूदिंव्- ० -व जिल्लिम् मम्दूदिंव्- ० व माइम् -मस्कूब ० व फाकि-हतिन् कसी-रतिल्- ० -ला मक्तू-अतिंव्-व ला मम्नू-अतिंव्- ० -व फुरुशिम्-मर्फूअः ० इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् ० फ-जअल्नाहुन्-न अब्कारा ० अुरुबन् अत्राबल्- ० -लिअस्हाबिल्-यमीन ० सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व सुल्लतुम्-मिनल्-आखिरीन ० व अस्हाबुश्-शिमालि मा असहाबुश्-शिमाल ० फी समूमिंव्-व हमीमिंव्- ० -व जिल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- ०

لَا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ○ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ○ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى
الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ○ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ○
اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ○ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ○ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ
يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ○ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ○ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ
زَقُّوْمٍ ○ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ○ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ○ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ
الْهِيْمِ ○ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ○ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ○ اَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تُمْنُوْنَ ○ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ○ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ
الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ○ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا

-ला बारिदिंव्-व ला करीम ○ इन्नहुम् कानू कब्-ल जालि-क मुत्-रफीन ○ व कानू युसिर्रू-न अलल्-हिन्सिल्-अजीम ○ व कानू यकूलू-न अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व इजामन् अ-इन्ना ल-मबऊसून ○ अ-व आबाउनल्-अव्वलुन कुल इन्नल अव्वलीन वल आखिरीन ○ ल-मज्मूऊ-न इला मीकाति यौमिम्-मअ्लूम ○ सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ाल्लूनल्-मुकज़्ज़िबून ○ ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् जक्कूम ○ फमालिऊ-न मिन्हल्-बुतून ○ फशारिबू-न अलैहि मिनल्-हमीम ○ फशारिबू-न शुरबल्- हीम ○ हाजा नुजुलुहुम् यौमद्दीन ○ नह्नु खलक्नाकुम् फलौ ला तुसद्दिकून ○ अ-फ-रऐतुम्-मा तुम्नून ○ अ-अन्तुम् तख्लुकूनहू अम् नह्नुल्-खालिकूल ○ नह्नु कद-द ना बैनकुमुल मौत वमा नह्नु बिमस्बुकीन ○ अला अन्-नुबद्दि-ल अम्सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फी मा

لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا
تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ
الَّذِىْ تَشْرَبُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝ لَوْ
نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِىْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ
اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِــُٔوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا
لِّلْمُقْوِيْنَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝
وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِىْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا

ला तअ्लमून ० व ल-क़द् अलिम्तुमुन्-नश्अ-तल्-ऊला फ़लौ ला तज़क्करून ० अ-फ़-रऐतुम्-मा तह्रुसून ० अ-अन्तुम् तज़्-रऊनहू अम् नह्नुज़्-ज़ारिऊन ० लौ नशा-उ ल-जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून ० इन्ना ल-मुग्रमून ० बल नह्नु मह्रूमून ० अ-फ़-रऐतुमुल् मा-अल्लज़ी तश्रबून ० अ-अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्-मुज़्नि अम् नह्नुल्-मुन्ज़िलून ० लौ नशा-उ जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौ ला तश्कुरून ० अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून ० अ-अन्तुम् अन्शअ्तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल्-मुन्शिऊन ० नह्नु जअ़ल्नाहा तज़्कि-रतंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक्वीन ० फ़-सब्बिह बिस्मि रब्बिकल्-अज़ीम ० फ़ला उक़्सिमु बि-मावाक़िइन्-नुजूम ० व इन्नहू ल-क-समुल्-लौ तअ्लमू-न अज़ीम ० इन्नहू ल-क़ुर्आनुन् करीम ० फ़ी किताबिम् मक्नून ०

يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ○ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ
مُّدْهِنُوْنَ ○ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ○ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ○
وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ○ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ○
فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ○ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ فَاَمَّآ
اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ○ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ○ وَاَمَّآ اِنْ
كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ○ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ○ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ
مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ○ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ○ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ○
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ○ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ○

ला य-मस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून ० तन्जीलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन ० अ-फबिहाजल्-हदीसि अन्तुम् मद्हिनून ० व तज्अलू-न रिज़्क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून ० फलौ ला इजा ब-ल-गतिल्-हुल्कूम ० व अन्तुम् ही-न-इजिन् तुन्जुरून ० व नह्नु अक्रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्-ला तुब्सिरून ० फलौ-ला इन् कुन्तुम् गै-र मदीनीन ० तर्जिऊनहा इन् कुन्तुम् सादिकीन ० फ-अम्मा इन् का-न मिनल्-मुकर्रबीन फ-रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नईम ० व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन ० फ-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन ० व अम्मा इन् का-न मिनल् मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन ० फ-नुजुलुम्-मिन् हमीमिंव्- ० -व तस्लि-यतु जहीम ० इन्-न हाजा लहु-व हक्कुल्-यकीन ० फ-सब्बिह बिस्मि रब्बिकल्-अज़ीम ०

सुरेह हदीद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَ
الظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ۝ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۭ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्‌अर्जि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ० लहू मुल्कुस्समावाति वल्‌अर्जि युह्यी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर ० हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम ० हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्‌अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि, यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्‌अर्जि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हु-व म-अकुम् ऐ-नमा कुन्तुम, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर ० लहू मुल्कुस्समावाति वल्‌अर्जि, व इलल्लाहि तुर्जउल्-उमूर ० यलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन् नहा-र फ़िल्लैलि, व हु-व अलीमुम्

بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ
فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ
أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن
بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَّن ذَا الَّذِي

बिज़ातिस्-सुदूर ० आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अलकुम् मुस्तख़्-लफ़ी-न फ़ीहि, फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्रुन कबीर ० व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्उकुम् लितुअ्मिनू बि-रब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज़ मीसा-क़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ० हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल्-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम ० व मा लकुम् अल्-ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल्-फ़त्हि व क़ात-ल, उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-जतम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्बअ्दु व क़ातलू, व कुल्लंव्-व अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर ० मन् ज़ल्लज़ी

يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا
وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ
وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ
فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ
وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

युक़्रिजुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाइ-फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम ० यौ-म तरल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नुरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् बुश्राकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अज़ीम ० यौ-म यकूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्-मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन्-नूरिकुम् क़ीलर्जिऊ वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन्, फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्, बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन् क़ि-बलिहिल्-अज़ाब ० युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अकुम्, क़ालू बला व लाकिन्नकुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ु-सकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अमरुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर ० फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद-यतुंव्-व-ला मिनल्लज़ी-न कफ़रू,

مَأْوٰىكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ○ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ○ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ○ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

मअ्वाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअ्सल्-मसीर ० अलम्यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्श-अ् कुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्-हक्कि व ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लु फ़ता-ल अलैहिमुल्-अ-मदु फ़-क़सत् क़ुलूबुहुम्, व कसीरुम्-मिन्हुम्फ़ासिकून ० इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून ० इन्नल्-मुस्सद्दिकी-न वल्-मुस्सद्दिक़ाति व अक़्रजुल्ला-ह क़र्ज़न्ह-सनंय्-युज़ा-अफु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम ० वल्लज़ी-न आमनु बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीकू-न वश्शु-हदा-उ इन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज्-रुहुम् व नूरुहुम्, वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम ० इअ्-लमू अन्नमल् हयातुद्दुनया

لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۗ كَمَثَلِ
غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۗ وَ
فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۗ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَ
لَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۗ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝
لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ

लइबुंव्-व लहवुंव्-व ज़ी-नतुंव्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-जबल्-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन्, व फ़िल-आख़िरति अज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन्, व मल्-हयातुद्-दुनया इल्ला मताउल-ग़ुरूर ० साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अर्ज़ुहा क-अर्ज़िस्समा-इ वलअर्ज़ि उइद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम ० मा असा-ब मिम्मुसी-बतिन् फ़िलअर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन्-नब्र-अहा, इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीरुल ० लिकैला तअ्सौ अला मा फ़ातकुम् व ला तफ़रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन्

فَخُوْرٍ ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَأْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّإِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْإِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَأْفَةً وَّرَحْمَةً ۗ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا

फ़ख़ूरि ० निल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद ० ल-क़द् अरसल्ना रुसु-लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अहुमुल्-किता-ब वल्मीज़ा-न लि-यक़ूमन्नासु बिल्-क़िस्ति व अन्ज़ल्नल् हदी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िउ लिन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु-लहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अज़ीज़ ० व ल-क़द् अरसल्ना नूहंव्-व इब्राही-म व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहि-मन्नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून ० सुम्-म क़फ़्फ़ैना अला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि-ईसब्नि मर्य-म व आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीनत्-त-बअूहु रअ्-फ़तंव्-व रह्म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्त-दुअ़हा मा कतब्नाहा अलैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा

حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ○
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ
وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ لِّئَلَّا
يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ
بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○

रऔहा हक्-क रिआ-यतिहा फआतैनल्लजी-न आमनू मिन्हुम् अज्रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फासिकून ० या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअतिकुम् किफ्लैनि मिर्रहमतिही व यज्अल्-लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग्फिर् लकुम्, वल्लाहु गफूरुर्रहीमुल ० लि-अल्ला यअ्ल-म अहलुल्-किताबि अल्ला यक्दिरू-न अला शैइम्-मिन् फज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फज्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फज़्लिल्-अजीम ०

बाज सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : हर शाम सुरेह वाकेआ पढने वाले का फुकर वफाका दुर होता है ।

फर्माया स. : सुरेह वलअसर हमेशा पढने वाले का इसलामी इमान पर खातमा होगा ।

फर्माया स. : सुरेह इखलास बकसरत पढने वाले को हुजुर स. ने जन्नत की खुशखबरी फर्माई है ।

सुरेह हश्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ① هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ②
وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ④
مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ○ हुवल्लजी अख्-रजल्लजी-न क-फरू मिन् अहिलल्-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल्-हशरि, मा जनन्तुम अंय्यख्रुजू व जन्नू अन्नहुम् मानि-अतुहम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्तसिबू व क-ज-फ फी कुलूबिहिमुर्रुअ्-ब युख्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअ्मिनी-न फअ्तबिरू या उलिल्-अब्सार ○ व लौ ला अन् क-तबल्लाहु अलैहिमुल-जला-अ ल-अज़्ज-बहुम् फिद्दुनया, व लहुम् फिल्-आख़िरति अजाबुन्नार ○ जालि-क बि-अन्नहुम् शाक्कुल्ला-ह व रसूलहु व मंय्यशाक्किल्ला-ह फ-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-इकाब ○ मा क-तअ्तुम् मिल्ली-नतिन् औ तरक्तुमूहा काइ-मतन् अला उसूलिहा फबि-इज्निल्लाहि व

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ
يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ
اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۗ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ
عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٧ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ

लियुख़्ज़ि-यल्-फ़ासिक़ीन ० व मा अफ़ा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अलैहि मिन् ख़ैलिंव्-व ला रिकाबिंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहू अला मंय्यशा-उ, वल्लहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर ० मा अफ़ा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन् अहिलल्-कुरा फ़-लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्-कुर्बा वलयतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि कैला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-अग्निया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अन्हु फ़न्तहू वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-इक़ाब ० लिलफ़ु-क़राइलमुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ु-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानंव्-व यन्सुरूनल्ला-ह व रसूलहु, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून ० वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वलईमा-न मिन् क़ब्लिहिम्

يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٩﴾
وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ
وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ
لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ
يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن قُوتِلُوا لَا يَنصُرُونَهُمْ

युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू-न अ़ला अन्फुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् ख़सा-सतुन्, व मंय्यू-क शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून ० वल्लज़ी-न जाऊ मिम्बअ्दिहिम् यकूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-बकूना बिल्-ईमानि व ला तज्अल् फ़ी कुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफ़ुर्रहीम ० अलम् त-र इलल्लज़ी-न नाफ़कू यकूलू-न लि-इख़्वानिहिमुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि ल-इन् उख़्रिज्तुम् ल-नख़्रुजन्-न म-अ़कुम् व ला नुतीउ फ़ीकुम् अ-हदन् अ-बदंव्-व इन् कूतिल्तुम् ल-नन्सुरन्नकुम्, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून ० ल-इन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू-न म-अ़हुम् व ल-इन् कूतिलू ला यन्सुरूनहुम

وَلَئِن نَّصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ﴿١٢﴾ لَأَنتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِم
مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
أَوْ مِن وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي
بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ
فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا

वल-इन नसरुहुम लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून ० ल-अन्तुम् अशद्दु रह्-बतन् फी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कौमुल्-ला यफ्क़हून ० ला युक़ातिलूनकुम् जमीअन् इल्ला फी कुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअसुहुम् बैनहुम् शदीदुन, तह्सबुहुम् जमीअंव्-व कुलूबुहुम् शत्ता, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कौमुल्-ला यअ्क़िलून ० क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाकू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम ० क-म-सलिश्शैतानि इज् का-ल लिल्-इन्सानिक्फुर फ-लम्मा क-फ-र का-ल इन्नी बरीउम्-मिन्-क इन्नी अख़ाफुल्ला-ह रब्बल्-आ़लमीन ० फ़का-न आ़कि-ब तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फीहा, व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर नफ्सुम्-मा

قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
نَسُوا اللّٰهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ ۚ أُولٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ
وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾ لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى
جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

कद्द-मत् लि-गदिन् वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह खबीरुम्-बिमा तअ्मलून ० व ला तकूनू कल्लजी-न नसुल्ला-ह फ-अन्साहुम् अन्फु-सहुम, उलाइ-क हुमुल-फासिकून ० ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति, अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फाइजून ० लौ अन्जल्ना हाजल्-कुरआ-न अला ज-बलिल्-ल-रऐ-तहू खाशिअम् मु-तसद्दिअम् मिन् खश्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअल्लहुम् य-तफक्करून ० हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुर्रहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ० हुवल्लाहुल् खालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

सूरह सफ्फ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ○ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ○
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ○
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوْا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ○ وَاِذْ
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ○ या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़अलुन ○ कबु-र मक़्तन् इन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़अलून ○ इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क-अन्नहुम् बुन्यानुम्-मर्सूस ○ व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि-म तुअज़ू-ननी व क़त्-तअलमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम, फ़-लम्मा ज़ागू अज़ागल्लाहु क़ुलूबहुम, वल्लाहु ला याह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन ○ व इज़् क़ा-ल ईसब्नु मर्य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि-रसूलिंय्-यअ्ती मिम्बअ्दिस्मुहू अहमदु, फ़-लम्मा

جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ○ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ○
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ○
هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ
عَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ
وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ

जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति कालू हाज़ा सिह्रुम-मुबीन ० व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अलल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला याह्दिल्-कौमज़्ज़ालिमीन ० युरीदू-न लियुत्फ़िऊनूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्-काफ़िरून ० हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अज़ाबिन् अलीम ० तुअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम्, तअ्लमून ० यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम्

يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۙ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ○
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ
مَنْ اَنْصَارِىْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ
بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ○

व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-बतन् फी जन्नाति अद्निन्, जालिकल्-फौजुल्-अजीम ○ व उख़्रा तुहिब्बूनहा नसरुम्-मिनल्लाहि व फत्हुन् करीबुन्, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन ○ या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा का-ल ईसब्नु मर्य-म लिल्-हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि, कालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ-आ-मनत् ताइ-फतुम् मिम्-बनी इस्राई-ल व क-फरत् ताइ-फतुन् फ-अय्यद्नल्लज़ी-न आमनू अला अदुव्विहिम्, फ-अस्बहू ज़ाहिरीन ○

सुरह जुमा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ
الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۗ وَ
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤
مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۗ بِئْسَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्जिल्-मलिकिल्-कुद्दूसिल्-अजीज़िल-हकीम ० हुवल्लज़ी ब-अ-स फ़िल्-उम्मिय्यि-न रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् कब्लु लफ़ी ज़लालिम्-मुबीनिंव ० व आ-ख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हकू बिहिम्, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ० ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल-अज़ीम ० म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन्, बिअ्-स म-सलुल्-कौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल्कौमज़्-ज़ालिमीन ० कुल् या अय्युहल्लज़ी-न

هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ
الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ
فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا
قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۗ قُلْ
مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

हादू इन् ज-अम्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन् दुनिन्नासि फ-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिकीन ० व ला य-तमन्नौनहू अ-बदम्-बिमा कद्द-मत् ऐदीहिम्, वल्लाहु अलीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन ० कुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ-इन्नहू मुलाकीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आलिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमु-अति फसऔ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्-बै-अ, ज़ालिकुम् खैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून ० फ-इज़ा कुज़ि-यतिस्सलातुम फन्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअल्लकुम् तुफ़्लिहून ० व इज़ा रऔ तिजा-रतन् औ लह्-व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-रकू-क काइमन्, कुल् मा इन्दल्लाहि खैरुम्-मिनल्लाहि व मिनतिजारति वल्लाहु खैरुर-राज़िकीन ०

सुरेह तगाबुन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिलअर्ज़ि लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर ० हुवल्लज़ी ख़-ल-कुम् फ-मिन्कुम् काफिरुंव्-व मिन्कुम् मुअमिनुन्, वल्लाहु बिमा तअ्मलून बसीर ० ख़-लकस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक्कि व सव्व-रकुम् फ-अह्स-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर ० यअ्लमु मा फिस्-समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुसिररू-न व मा तुअ्लिनू-न, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर ० अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न क-फरू मिन् कब्लु फ-ज़ाकू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम ० ज़ालि-क बि-अन्नाहू कानत्-तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फकालू अ-ब-शरुंय्-यह्दूनना फ-क-फरू व तवल्लौ वस्तग्नल्लाहु, वल्लाहु गनिय्युन् हमीद ० ज़-अमल्लज़ी-न

الذين كفروا ان لن يبعثوا ، قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم ، وذلك على
الله يسير ۝ فامنوا بالله ورسوله والنور الذي انزلنا ، والله بما تعملون خبير ۝ يوم يجمعكم
ليوم الجمع ذلك يوم التغابن ، ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه سياته
ويدخله جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ، ذلك الفوز العظيم ۝ و
الذين كفروا وكذبوا بايتنا اولئك اصحب النار خلدين فيها ، وبئس المصير ۝ ما اصاب
من مصيبة الا باذن الله ، ومن يؤمن بالله يهد قلبه ، والله بكل شيء عليم ۝ و اطيعوا
الله و اطيعوا الرسول ، فان توليتم فانما على رسولنا البلغ المبين ۝ الله لا اله الا هو

क-फरू अल्लंय्युब्-असू, कुल् बला व रब्बी ल-तुब्असुन्-न सुम्-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अमिल्तुम्, व जालि-क अलल्लाहि यसीर ० फआमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लजी अन्जल्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न खबीर ० यौ-म यजमऊकुम् लियौमिल्-जम्इ जालि-क यौमुत्-तग़ाबुनि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्-युकफ्फिर् अन्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फीहा अ-बदन्, जालिकल् फौजुल्-अज़ीम ० वल्लजी-न क-फरू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फीहा, व बिअ्सल्-मसीर ० मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज्निल्लाहि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि याहदि कल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम ० व अतीउल्ला-ह अतीउर्रसू-ल फ-इन् तवल्लैतुम् फ-इन्नमा अला रसूलिन्-बलाग़ुल्-मुबीन ० अल्लाहु ला इला-ह इल्ला

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا
لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا
وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ تُقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

हु-व, व अलल्लाहि फलय-तवक्कलिल्- मुअ्मिनून ०
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व
औलादिकुम् अदुव्वल्-लकुम फह्ज़रूहुम् व इन् तअ्फू व
तस्फ़हू व तग्फ़िरू फ-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ० इन्नमा
अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्, वल्लाहु इन्दहू
अज्रुन् अज़ीम ० फत्तकुल्ला-ह मस्त-तअ्तुम वस्-मऊ
व अतीऊ व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम्, व मंय्यू-क़
शुह्-ह नफ़्सिही फ-उलाइ-क हुमुल-मुफ़्लिहून ० इन्
तुक्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ाइफ़्हु लकुम् व यग्फ़िर्
लकुम्, वल्लाहु शकूरुन् हलीम ० आलिमुल-ग़ैबि
वश्शहा-दतिल्- अज़ीज़ुल्-हकीम ०

सुरेह तह्रीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ۝ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ
اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ
اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ
وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क तब्तग़ी मर्ज़ा-त अज़्वाजि-क, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम ० क़द् फ़-रज़ल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अलीमुल्-हकीम ० व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन् फ़-लम्मा नब्ब-अत् बिही व अज़्ह-र-हुल्लाहु अलैहि अर्र-फ़ बअ्-ज़हू व अअ्र-ज़ अम्-बअ्ज़िन् फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा, क़ा-ल नब्ब-अनि-यल् अलीमुल्-ख़बीर ० इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् सग़त् कुलूबुमा व इन् तज़ा-हरा अलैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ्मिनी-न वलमालाइ-कतु बअ्-द ज़ालि-क ज़हीर ० असा रब्बुहू इन् तल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि लहू अज़्वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न

لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ ضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ○ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ
اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ
وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ○

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्-मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अलैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर ० ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रुम्-र-अ-त नूहिंव्-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह्-त अब्दैनि मिन् इबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम् युग़्नियां अन्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्-व क़ीलद्ख़ुलन्ना-र मअद्-दाख़िलीन ० व ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ-न ॥ इज़् कालत् रब्बिब्नि ली इन्द-क बैतन् फ़िल-जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ-न व अ-मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन ० व मर्य-मब्न-त इम्रानल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्द-क़त् बि-कलिमाति-रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-क़ानितीन ०

مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ○
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ○
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ

मुस्लिमातिम्-मुअमिनातिन् कानितातिन् ता-इबातिन् आबिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबतिंव्-व अब्कारा ० या अय्युहल्लजी-न आमनू कूअन्फु-सकुम् व अह्लीकुम् नारंव्-व कूदुहन्नासु वलहिजा-रतु अलैहा मलाइ-कतुन् गिलाजुन् शिदादुल्-ला यअसूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफअलू-न मा युअमरून ० या अय्युहल्लजी-न क-फरू ला तअतजिरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्जौ-न मा कुन्तुम् तअमलून ० या अय्युहल्लजी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ-बतन्-नसूहन्, असा रब्बुकुम् अंय्युकफ्फि-र अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्खि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला युख्जिल्लाहुन्-नबिय्-य वल्लजी-न आमनू म-अहू नूरुहुम् यस्आ बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् यकूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नू-रना वग्फिर् लना इन्न-क अला कुल्लि शैइन् कदीर ०

सुरेह मुल्क

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ ۝ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ
وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ
سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۗ مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۗ فَارْجِعِ الْبَصَرَ
هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ
هُوَ حَسِيْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۗ كُلَّمَا

तबा-रकल्लजी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर ○ निल्लजी ख-ल-कल-मौ-त वलहया-त लि-यबलुल-वकुम् अय्युकुम् अहसनु अ-मलन, व हुवल् अजीजुल्-गफूर ○ अल्लजी ख-ल-क सब्-अ समावातिन् तिबाकन् मा तरा फी खलक़िर्रहमानि मिन् तफवुतिन्, फर्जिइल्-ब-स-र हल तरा मिन फुतुर ○ सुम्मर्'जिईल बसर कर्रतैनि यन्कलिब् इलैकल्-ब-सरु खासिअंव्-व हु-व हसीर ○ व ल-कद् जय्यन्नस्समाअद्-दुनया बि-मसाबी-ह व ज-अल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ्तद्ना लहुम् अजाबस्सइर ○ व लिल्लजी-न क-फरू बिरब्बिहिम् अजाबु जहन्न-म, व बिअ्सल-मसीर ○ इजा उल्कू फीहा समिऊ लहा शहीकंव्-व हि-य तफूर ○ तकादु त-मय्यजु मिनल्-गैजि, कुल्लमा

أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ
فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ
كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ فَسُحْقًا
لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝
وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَ
هُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝ أَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ

उल्कि-य फीहा फौजुन् स-अ-लहुम् ख-ज-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् नज़ीर ० कालू बला कद् जा-अना नज़ीरुन्, फ-कज़्ज़ब्ना व कुल्ना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फी ज़लालिन् कबीर ० व कालू लौ कुन्ना नस्मउ़ औव नअ्किलु मा कुन्ना फी अस्हाबिस्सईर ० फअ्-त-रफू बिज़म्बिहिम् फ-सुह्कल्-लि-अस्हाबिस्-सईर ० इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बुहुम् बिलौबि लहुम् मग़्फि-रतुंव-व अज्रुन् कबीर ० व असिर्रू कौलकुम् अविज्-हरू बिही, इन्नहू अ़लीमुम बिज़ातिस्सुदूर ० अला यअ्लमु मन् ख-ल-क, व हुवल-लतीफुल्-ख़बीर ० हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल-अर्-ज ज़लूलन् फम्शू फी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्किही, व इलैहिन्-नुशूर ० अ-आमिन्तुम् मन् फिस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ बिकुमुल्-

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۭ فَسَتَعْلَمُوْنَ
كَيْفَ نَذِيْرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ
فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا
الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۭ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ۝ اَمَّنْ
هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ۝ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ
مُكِبًّا عَلٰي وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ
وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ

अर्-ज़ फ-इज़ा हि-य तमूर ० अम् अमिन्तुम् मन्
फ़िस्समा-इ अंय्युरसि-ल अलैकुम् हासिबन्, फ-सतअ्लमू-न
कै-फ़ नज़ीर ० व ल-क़द् कज़्ज़-बल्लज़ी-न मिन्
क़ब्लिहिम् फकै-फ़ का-न नकीर ० अ-व लम् यरौ
इलत्तैरि फौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व यक़्बिज़्-न मा
युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु, इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर
० अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल-लकुम् यन्सुरुकुम्
मिन् दूनिर्रह्मानि, इनिल्-काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर ०
अम्-मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुकुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू
बल्-लज्जू फ़ी उतुव्विंव्-व नुफ़ूर ० अ-फ़मंय्यम्शी
मुकिब्बन् अला वज्हिही अह्दा अम्-मंय्यम्शी सविय्यन्
अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ० कुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम्
व ज-अल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त,
क़लीलम्-मा तश्कुरून ० कुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम्

فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ○ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ○ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ○ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ○ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ○ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ○ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ○

फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून ○ व यकूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिकीन ○ कुल् इन्नमल्-इल्मु इन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन ○ फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व की-ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्-दऊ़न ○ कुल् अ-रऐतुम् इन् अह्-ल-कनियल्लाहु व मम्-मइ-य औ रहि-मना फ़-मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् अलीम ○ कुल् हुवर्-रह्मानु आमन्ना बिही व अलैहि तवक्कल्ना फ़-स-तअ्लमू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन ○ कुल् अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम्-मईन ○

सुरेह नूह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ○ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ○ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَ
أَطِيعُونِ ○ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ
أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ○ قَالَ رَبِّ إِنِّى
دَعَوْتُ قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ○ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا ○ وَإِنِّى
كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟ ٱسْتِكْبَارًا ○ ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ○ ثُمَّ إِنِّىٓ

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला कौमिही अन् अन्ज़िर्
कौ-मक मिन् कब्लि अंय्यअ्ति-यहुम् अज़ाबुन् अलीम
○ का-ल या कौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ○
अनिअ्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु व अतीउ़न ○ यग्फ़िर् लकुम्-मिन्
ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िरकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्,
इन्-न अ-जलल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु लौ
कुन्तुम् तअ्लमून ○ का-ल रब्बि इन्नी दऔतु कौमी
लैलंव्-व नहारन ○ फ़-लम् यज़िद्हुम् दुआई इल्ला
फ़िरारा ○ व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग्फ़ि-र
लहुम् ज-अलू असाबि-अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग्शौ
सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा ○ सुम्-म
इन्नी दऔतुहुम् जिहारन ○ सुम्-म इन्नी

أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ۝ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۝ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ

अअ्लन्तु लहुम् व असरर्तु लहुम् इसरारा ० फ़कुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम्, इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारंय ० युर्सिलिस्समा-अ अलैकुम् मिद्रारंव्- ० -व युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व यज्अल्-लकुम् जन्नातिंव्-व यज्अल-लकुम् अन्हारा ० मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा ० व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा ० अलम् तरौ कै-फ़ ख़-लक़ल्लाहु सब-अ् समावातिन् तिबाक़ा ० व ज-अलल् क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अलश्शम्-स सिराजा ० वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्जि नबाता ० सुम्-म युईदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा ० वल्लाहु ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज़ बिसाता ० लि-तस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा ० का-ल नूहुर्-रब्बि इन्नहुम् असौनी वत्त-बऊ मल्-लम्

يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوْا
لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ
وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝ مِمَّا
خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝
اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝
رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

यज़िद्हु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा ० व म-करू मक्रन् कुब्बारा ० व क़ालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअंव्-व ला यग़ू-स व यऊ़-क़ व नस्रा ० व क़द् अज़ल्लू कसीरन्, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला ० मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा ० व क़ा-ल नूहुर्-रब्बि ला तज़र् अ़लल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा ० इन्न-क इन् तज़रहुम् युज़िल्लू इ़बा-द-कं व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा ० रब्बिग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ०

सूरह जिन्न

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ یَّهْدِیْٓ اِلَی الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهُ تَعٰلٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهُ كَانَ یَقُوْلُ سَفِیْهُنَا عَلَی اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَّاَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ یَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ یَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِیْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا

कुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्-त-म-अ न-फ़रुम् मिनल्-जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ्ना कुरआनन् अ़जबय् ० यह्दी इलर्-रुश्दि फ़-आमन्ना बिही, व लन्-नुश्रि-क बिरब्बिना अ-हदा ० व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-बतंव्-व ला व-लदा ० व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-तता ० व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा ० व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सि यऊज़ू-न बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादूहुम् रहक़ंव ० व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़नन्तुम् अल्लंय्-यब्-असल्लाहु अ-हदा ० व अन्ना ल-मस्नस्समा-अ फ़-वजद्नाहा मुलिअत् ह-रसन् शदीदंव्-व शुहुबा ० व अन्ना कुन्ना

نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي
أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَ
مِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ
وَلَن نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا
يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ
فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا
عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ

नक्उ़दु मिन्हा मकाई-द लिस्समइ़, फ-मंय्यस्तमिइ़ल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-सदंव ० व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा ० व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क क़ि-ददा ० व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् नुअ्जिज़ल्ल-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-रबंव ० व अन्ना लम्मा समिअ्नल्-हुदा आमन्ना बिही, फ़मंय्युअ्मिम् बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव्-व ला र-हक़ा ० व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल्-क़ासितू-न फ़-मन् अस्ल-म फ़-उलाइ-क त-हर्री र-शदा ० व अम्मल्-क़ासितू-न फ़कानू लि-जहन्न-म ह-तबंव ० व अल्-लविस्तक़ामू अलत्तरी-क़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-दक़ल ० लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व मंय्युअ्रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही

يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ
عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ
بِهِ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ
اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ إِلَّا بَلَاغًا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۝
حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝
قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝ عَالِمُ الْغَيْبِ

यस्लुक्हु अज़ाबन् स-अदवं ० व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फला तद्ऊ मअल्लाहि अ-हदा ० व अन्नहू लम्मा का-म अब्दुल्लाहि यद्ऊहु कादू यकूनू-न अलैहि लि-बदा ० कुल् इन्नमा अद्ऊ रब्बी व ला उशरिकु बिही अ-हदा ० कुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-शदा ० कुल् इन्नी लंय्युजी-रनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा ० इल्ला बलागम् मिनल्लाहि व रिसालतिही, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ-इन्-न लहु ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदा ० हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अदू-न फ़सयअ्लमू-न मन् अज़अफु नासिरंव्-व अकल्लु अ-ददा ० कुल् इन् अद्री अ-करीबुम्-मा तू-अदू-न अम् यज्अलु लहू रब्बी अ-मदा ० आलिमुलग़ैबि

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ○ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ○ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ○

फला युज़्हिरू अला गैबिही अ-हदन ० इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ-इन्नहू यस्लुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र-सदल ० लियअ्ल-म अन् क़द् अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्-ल शैइन् अ-ददा ०

बाज सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : सुरेह फातेहा को कलीदे जन्नत और हर मर्ज़ की दवा **शिफ़ाउन लिकुल्ली दाइन** फर्माया है.

फर्माया स. : आयते करीमा को हर मुशकील का हल और कशाईश हाजात फर्माया है. १०० बार रात को पढें.

फर्माया स. : **हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ला हवु अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशीलअज़ीम.** हर रोज़ सात बार पढें अल्लाह तआला दुनिया व आखिरत के महम्मात को काफी करेगा.

फर्माया य. : सुरेह कदर पारा ३० **(इन्ना अनज़लना)** सुबह व शाम तीन तीन बार पढने से फराखीए रिज़्क और लोगो में इज़्ज़त होती है.

सुरेह मुज़्ज़म्मिल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ
اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝ اِنَّ
نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا ؕ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝ وَذَرْنِيْ وَ
الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ وَّطَعَامًا ذَا
غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا

या अय्युहल्-मुज़्ज़म्मिलु ० कुमिल्-लै-ल इल्ला क़लीला ० निस्फ़हू अविन्कुस मिन्हु क़लीलन ० औ ज़िद् अलैहि व रत्तिलिल्-कुरआ-न तर्तीला ० इन्ना सनुल्क़ी अलै-क क़ौलन् सक़ीला ० इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशद्दु वत्अंव्-व अक़्वमु क़ीला ० इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला ० वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला ० रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु वकीला ० वस्बिर अला मा यक़ूलू-न वह्जुर्हुम् हज्रन जमीला ० व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ्मति व महि्हल्हुम् क़लीला ० इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमा ० व तआमन् ज़ा गुस्सतिंव्-व अज़ाबन्अलीमा ० यौ-म तर्जुफ़ुल्-अर्जु वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला ०

مَهِيْلًا ○ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ
رَسُوْلًا ○ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ○ فَكَيْفَ
تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ○ اِلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ
مَفْعُوْلًا ○ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ○ اِنَّ رَبَّكَ
يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ
مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ
مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

इन्ना अरसल्ना इलैकुम् रसलन् शाहिदन् अलैकुम् कमा अरसल्ना इला फ़िर्औ-न रसुला ० फ़-असा फ़िर्औनुर-रसू-ल फ़-अख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव्-वबीला फ़कै-फ तत्तक़ू-न इन् क-फ़रतुम् यौमंय्यज्-अलुल्-विल्दा-न शीबनी ० स्समा-उ मुन्फ़तिरुम् बिही. का-न वअ्दुहू मफ़ऊला ० इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज इला रब्बिही सबीला ० इन्-न रब्ब-क यअ्लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताइ-फ़तुम् मिनल्लज़ी-न म-अ-क, वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अलि-म अल्-लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अलैकुम् फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुरआनि, अलि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मरज़ा व आ-ख़रू-न यज़रिबु न फ़िल-अरज़ी यंबतग़ुन मिन फ़ज़्लील्लाह

وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ
مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۗ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

व आख़रूना युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क़रऊमा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्-ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन्, व मा तुक़द्दिमु लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु इन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्रन्, वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर-रहीम ०

बाज़ सुरतों के खास फ़ाएदे

फर्माया स. : सुरेह **अलहाकुमुत्तकासुर**, पारा ३० पांच आयतें हैं, छोटी छोटी लेकिन हज़ार आयत के बराबर सवाब और रिज़्क में फराखी फर्माया ।

फर्माया स. : सुरेह मुद्ससर पारा २९ (**या अय्युहल मुदससीरु कुम**) मोहताज गरीब रोज़ाना पढा करे इन्शाअल्लाह गनी मालदार हो जाएगा.

फर्माया स. : सुरेह कुरेश पढ कर खाना खाए नज़र बद से महफ़ुज़ रहेगे. और तिलावत का सवाब ज़ाएद ।

फर्माया स. : आखिर के दोनो कुल शरीफ पढ कर दम करें शरे हासिद व सेहर व बलायात दुर होगे ।

फर्माया स. : आंख का दरद सुरेह हमज़ा पढ कर दमकरें इन्शाअल्लाह आराम होगा चंद बार तकरार करें ।

सूरेह क़ियामा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى أَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ۝ بَلْ يُرِيْدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝ يَسْـَٔلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ إِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِالْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ أَلْقٰى مَعَاذِيْرَهُ ۝ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْاٰنَهُ ۝ فَإِذَا قَرَأْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهُ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝

ला उक्सिमु बियौमिल्-क़ियामति ० व ला उक्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वामह् ० अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ इज़ामह् ० बला क़ादिरी-न अ़ला अन्-नुसव्वि-य बनानह् ० बल् युरीदुल-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह् ० यस्अलु अय्या-न यौमुल्-क़ियामह् ०फ़-इज़ा बरिक़ल्-ब-सरु ० व ख़-सफ़ल्-क़-मरु ० व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु ० यक़ूलुल्-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल्-मफ़र्रु ० कल्ला ला व-ज़र ० इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मुसतक़र्रु ० युनब्बउल्-इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र ० बलिल्-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसी-रतुंव्- ० -व लौ अल्क़ा मआ़ज़ीरह् ० ला तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ्-ज-ल बिह ०इन्-न अ़लैना जम्-अहू व क़ुरआनह् ० फ़-इज़ा क़रअनाहु फ़त्तबिअ् क़ुरआनह् ० सुम्-म इन्-न अ़लैना बयानह् ०

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ○ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ○ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ○ إِلَىٰ
رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ○ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ○ تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ○ كَلَّا إِذَا
بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ○ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ○ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ○ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ
بِالسَّاقِ ○ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ○ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ○ وَلَٰكِن كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ○ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ○ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ○ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ○
أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ○ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ○ ثُمَّ
كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ○ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ○
أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ○

कल्ला बल् तुहिब्बुनल्-आजि-ल-त ० व त-ज़रूनल्-आख़िरह् ० वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाज़ि-रतुन् ० इला रब्बिहा नाज़िरह् ० व वुजूहुंय्-यौमइज़िम् बासि-रतुन् ० तज़ुन्नु अंय्युफ़अ-ल बिहा फ़ाक़िरह् ० कल्ला इज़ा ब-लग़तित्-तराक़ि-य ० व क़ी-ल मन्-राक़िंव- ० -व ज़न्-न अन्नहुल् फ़िराक़ ० वल्-तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्साक़ि ० इला रब्बि-क यौमइज़ि- निल्-मसाक़ ० फ़ला सद्-द-क़ व ला सल्ला ० वलाकिन् कज़्-ज़-ब व त-वल्ला ० सुम्-म ज़-ह-ब इला अह्लिही य-तमत्ता ० औला ल-क फ़-औला ० सुम्-म औला ल-क फ़-औला ० अ-यह्सबुल्-इन्सानु अंय्युत्-र-क सुदा ० अलम् यकु नुत्फ़-तम् मिम्- मनिय्यिंय्-युम्ना ० सुम्-म का-न अ-ल-क़तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा ० फ़-ज-अ-ल मिन्हुज्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल् उन्सा ० अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अला अंय्युह्यि- यल्-मौता ०

सूरेह दहिर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ○ إِنَّا خَلَقْنَا
الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ○ إِنَّا هَدَيْنَاهُ
السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ○ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَا وَأَغْلَالًا
وَسَعِيرًا ○ إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ○ عَيْنًا
يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ○ يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ
شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ○ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ○
إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ○ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا

हल् अता अलल्-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दहिर लम् यकुन् शैअम्-मज़्कूरा ○ इन्ना खलक़्नल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्- नब्तलीहि फ़-जअल्नाहु समीअम्-बसीरा ○ इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्म कफ़ूरा ○ इन्ना अअ्तद्ना लिल्-काफ़िरी-न सलासि-ल व अग्लालंव्-व सईरा ○ इन्नल्-अब्रा-र यश्रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ाजुहा काफ़ूरा ○ अैनंय्-यश्रबु बिहा इबादुल्लाहि युफ़ज्जिरूनहा तफ़्जीरा ○ यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मस्ततीरा ○ व युतअिमूनत्तआ-म अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा ○ इन्नमा नुतअीमुकुम लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा ○ इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
تَنزِيلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ
بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ
يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝ نَّحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا
أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ۝ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

इन्-न हाजा का-न लकुम् -जजा-अंव्-व का-न सअ्युकुम्-मश्कूरा ० इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अलैकल्-कुरआ-न तन्ज़ीला ० फस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ् मिन्हुम् आसिमन् औ कफूरा ० वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्र-तंव्-व असीला ० व मिनल्लैलि फस्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला ० इन्-न हा-उला-इ युहिब्बूनल् आजि-ल-त व य-ज़रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला ० नह्नु ख़लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला ० इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फमन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला ० व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् हकीमंय ० युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फी रह्मतिही वज़्ज़ालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा ०

إِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
تَنْزِيلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ
بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝ إِنَّ هٰؤُلَاءِ
يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا
أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ۝ إِنَّ هٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ
شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

इन्-न हाजा का-न लकुम् जजा-अंव्-व का-न
सअ्युकुम्-मश्कूरा ० इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अलैकल्-कुरआ-न
तन्ज़ीला ० फस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ्
मिन्हुम् आसिमन् औ कफूरा ० वज़्कुरिस्-म रब्बि-क
बुक्र-तंव्-व असीला ० व मिनल्लैलि फस्जुद् लहू व
सब्बिहहु लैलन् तवीला ० इन्-न हा-उला-इ युहिब्बुनल्
आजि-ल-त व य-ज़रू-न वरा-अहुम् यौमन् सकीला ०
नह्नु खलक्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इजा शिअ्ना
बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला ० इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन्
फमन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला ० व मा
तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न
अलीमन् हकीमंय ० युद्खिलु मंय्यशा-उ फी रह्मतिही,
वज़्ज़ालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा ०

सूरेह नबा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۝ عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيمِ ۝ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۝ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝ أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ۝ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝ وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝ وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ۝ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝ إِنَّ جَهَنَّمَ

अम्-म य-तसा-अलून ० अनिल्-न-बइल्-अज़ीम ० अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून ० कल्ला स-यअ्लमून ० सुम्-म कल्ला स-यअ्लमून ० अलम् नज्अलिल्-अर्-ज़् मिहादंव्- ० -वल्-जिबा-ल औतादंव्-० -व-ख़लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्-०-वजअ्लना नौमकुम सुबाता ०-व जअ्लनल्लै-ल लिबासंव्- ० -व जअ्लनन्-नहा-र मआशा ० व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्अन् शिदादंव्-०-व जअ्लना सिराजंव्-वह्हाजा ०व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ्सिराति मा-अन् सज्जाजल्- ० -लिनुख़्री-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- ० -व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा ० इन्-न यौमल्-फ़स्लि का-न मीक़ातंय्-० -यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ्तू-न अफ़्वाजंव ० व फ़ुति-हतिस्-समा-उ फ़-कानत् अब्वाबंव्- ० -व सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ़-कानत् सराबा ० इन्-न जहन्न-म

كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِّلطَّٰغِينَ مَآبًا ۝ لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ۝ لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا
بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَآءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ لَا يَرْجُونَ
حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ۝ فَذُوقُوا۟ فَلَن
نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝ حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَ
كَأْسًا دِهَاقًا ۝ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ۝ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝
رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ ٱلرُّوحُ
وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ

कानत् मिर्सादल्-○-लित्तागी-न म-आबल्- ○ -लाबिसी-न फीहा अह्काबा ○ ला यजूकू-न फीहा बर्दंव्-व ला शराबन ○ इल्ला हमीमंव्-व गस्साकन् ○ जजाअंव्-विफाका ○ इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबंव ○ व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा ○ व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् ○ फ़जूकू फ-लन् नजी-दकुम् इल्ला अजाबा ○ इन्-न लिल्मुत्तकी-न मफाजन् ○ हदाइ-क व अअ्नाबंव्- ○ -व कवाइ-ब अत्राबंव्- ○ -व कअ्सन् दिहाका ○ ला यस्मउ-न फीहा लग्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा ○ जजाअम्-मिर्रब्बि-क अताअन् हिसाबा ○ रब्बिस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु खिताबा ○ यौ-म यकूमुर्रूहु वल्मलाइ-कतु सफ्फन् ला य-तकल्लमू-न इल्ला मन् अजि-न लहुर्रह्मानु व का-ल सवाबा ○ जालिकल् यौमुल्-

الْحَقُّ ۚ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۚ يَوْمَ يَنظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ۝

हक्कु फ-मन् शाअत्त-ख़-ज इला रब्बिहि मआबा ० इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अ़ज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्मरउ मा क़द्द-मत् यदाहु व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा ०

नजात व फलाह आखेरत के लिए

विरद कलमा शरीफ हमेशगी नमाज़. हर नमाज़ के बाद अयतलकुर्सी. सुबह सुरेह यासीन और दरुदे शरीफ, सोते वक्त सुरेह मुल्क और इस्तगफार.

सुबह व शाम : **अल्लाहुम्मा अजीरनी मिनन्नार.** ७–७ बार और **फसुबहानल्लाहि हिन तुमसुन वहिन तुसबिहुन. वलहुल हम्दु फिस्समावाति ता तुखरजुन ०**

सुरेह आला

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝ وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۝ وَالَّذِىْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۝ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤى ۝ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝

सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ्ला ○ अल्लजी ख़-ल-क़ फ़-सव्वा ○ वल्लजी क़द्द-र फ़-हदा ○ वल्लजी अख़्र-जल्-मर्आ ○ फ़-ज-अ्-लहू ग़ुसाअन् अहवा ○ सनुक़्रीउ-क फ़ला तन्सा ○ इल्ला मा शा-अल्लहु, इन्नहू यअ्लमुल्-जह्-र व मा यख़्फ़ा ○ व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा ○ फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अतिज्-ज़िक्रा ○ स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा ○ व य-तजन्नबुहल्-अश्क़- ○ -ल्लजी यस्लन्-नारल्-कुब्रा ○ सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या ○ क़द् अफ़्ल-ह मन् तज़क्का ○ व ज-करस्-म रब्बिही फ़-सल्ला ○ बल् तुअ्सिरूनल्-हयातद्-दुनया ○ वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ○ इन्-न हाज़ा लफ़िस्-सुहुफ़िल्-ऊला ○ सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा ○

असनादे मन्ज़िल

ये मन्ज़िल आसैब, सहर और बाज़ दुसरे खतरात से हिफाज़त के लिए एक मुजर्रब अमल है। ये आयात किसी कदर कमि बेशी के साथ "अलकौल अलजमील" और "बहेशती ज़ेवर" में भी लिखी है। अलकौल अलजमील में हज़रत शाह वली अल्लाह मोहद्दीस दहलवी कुदस सररहु तहरीर फर्माते है :

"ये ३३ तैंतीस आयतें है जो जादु को दफ़ा करती है और शयातीन और चोरों और दरींदे जानवरो से पनाह हो जाती है."

और बहेशती ज़ेवर में हज़रत मौलाना शरफ अली थानवी नुरअल्लाह मुरक्दा तहरीर फर्माते है :

"अगर किसी पर आसेब का शुबा हो तो आयात ज़ेल लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिड्क दें."

और अगर घर में असर हो तो इन को पानी पर पढ कर घर के चारो गोशो में छिटक दें।

मन्ज़िल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ (اٰمين)

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ० मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याक नाअबुदु वइय्याक नस्ताईन ० इहदिनस्सिरॉतल मुस्तकीम ० सिरॉतल्लज़ीन अन्अम्त अलैहिम गैरिल मग़जुबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन ०

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यूं तो दिने इस्लाम में बिदआत का इज़ाफा अब रोज़ मर्रा का मामुल बन चुका है लेकिन इज़्कार व वज़ाईफ में खुसुसन इतनी ज़्यादा खुद साख्ता और गैर मसनुन चिज़ें शामिल करदी गई है के मसनुन अदीया व इज़्कार ताक नसीयां बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साख्ता और गैर मसनुन इज़्कार व वज़ाईफ की तरह दरुद व सलाम में भी बहोत से खुद साख्ता और गैर मसनुन दरुद व सलाम राएज हो चुके हैं. मसलन दरुद ताज, दरुद लिखी, दरुद मुकद्दस, दरुद अकबर, दरुद माहि, दरुद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरुद के पढ़ने का तरीका और वक्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज़्यादा तर दुनयावी है) का भी अलग अलग तज़केरा कुतुब में लिखा गया है. मज़कुरा दरुदो में से कोई एक दरुद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज़ रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाज़ा इन्हें पढ़ने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज़ खुद बातिल ठहरते है. रसुल अल्लाह स. की नाराज़गी और अल्लाह तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाज़ा वही वज़ाईफ पढे जो रसुल अल्लाह स. से साबित है. याद रखीए रुसल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉलेह के बनाए हुए कलमाते खैर से ज़्यादा अफज़ल और कीमती है. **(बराए महरबानी मोमिन पंचसुरा पढीए)**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम ०

अलिफ लाम मीम ० जालिकल किताबु ला रैब फिही हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लजीन युअमिनून बिलगैबि व युकीमुनस्सलॉत व मिम्मा रजकनाहुम युनफिकून ० वलल्लजीन युअमिनून बिमा उन्जिल इलैक वमा उन्जिल मिन कब्लिक व बिलआखिरतिहुम युकिनून ० उलाइक अला हुदम्मिर्रब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफ्लिहुन ० इन्नल लजीन कफरु व सवाउन अलैहिम अअन्जरतुहुम अम लम तुन्जिरहुम ला युअमिनून ० खतमल्लाहु अला कुलूबिहिम व अला समइहिम। व अला अबसारिहिम गिशावतुंव्वलहुम अजाबुन अजीम ०

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ○ لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ قَدْ تَّبَیَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰی لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ○ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
اِلَی الظُّلُمٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ○

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हु अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहू सिनतुंव्वला नौम लहू माफिस्समावाति वमा फिल अर्ज मन जल्लजी यशफउ इंदहू इल्ला बिइज़्निह याअलमु माबैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैइम्मिन इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुर्सीयुहुस्समावाति वलअर्ज वला यऊदू हिफ्ज़ुहुमा वहुव अलीय्युल अजीम ० ला इक्रा-ह फिद्दीनि कत्तबय्यन-रूश्दु मिनल्-गय्यि फ-मंय्यक्फुर बित्तागूति व युअमिन्-बिल्लाहि फ-कदिस्तम्स-क बिल्-उर्वतिल्-वुस्का लन्फिसा-म लहा, वल्लाहु समीउन, अलीम ० अल्लाहु वलिय्युल्लजी-न आमनू युख्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, वल्लजी-न कफरू औलिया-उहुमुत्तागूतु युख्रिजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून ०

لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ
بِهِ اللّٰهُ ؕ فَیَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○ اٰمَنَ
الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ○ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَیْهَا مَا
اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۫
وَاغْفِرْ لَنَا ۫ وَارْحَمْنَا ۫ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ○

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ○ आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्रब्बिहि वल मूअमिनून। कुल्लुन आमन बिल्लाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि व रुसुलिह ला नुफ़र्रिकु बैन अहदिम्मी र्रुसुलिह। व क़ालू समअ़ना व अतअ़ना ग़ुफ़रानक रब्बना व इलैकल मसीर ○ ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़सन इल्ला वुस्अहा। लहा माकसबत व अ़लैहा मकतसबत। रब्बना ला तुआख़िज़ना इन्न सीना व अख़्ताना रब्बना व ला तहमिल अ़लैना इस्रन कमा हमल्तहु अ़लल्लज़ीन मिन क़ब्लिना रब्बना व तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना बिही। व अफ़ु अ़न्ना वग़्फ़िरलना वर्हम्ना अन्त मौलाना फ़न्सुरना अ़लाल क़ौमिल काफ़िरीन ○

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ
مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ
فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ
حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ

शहिदल्लाहु अन्नहु ला इलाह इल्ला हुववलमलाइकतु व उलूलइल्मि काइमम्बिलक़िस्त, ला इला-ह इल्ला हुवल अज़ीज़ुल हकीम ० कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्कि तुअतिल मुल्कि मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल्क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ वतुज़िल्लु मन्तशाउ, बियदिकल ख़ैर, इन्नक अला कुल्लि शैइन क़दीर ० तूलिजुल्लैल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहार फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल हय्य मिनल् मय्यिति व तुख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व तरज़ुक़ु मंतशाउ बिग़ैरि हिसाब ० इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्-समावाति वलअर्ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्-तवा अलल अर्शि युग़्शी-ल् लैलन्नहार यत्लुबुहू हसीसंव्वश्-शम्स वलक़मर वन्नुजूम मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही. अला लहुल ख़ल्क़ु वल् अम्र, तबारकल्लाहु

رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۚ○ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○
قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ○ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ
وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ○

रब्बुल आलमीन ○ उद्ऊ रब्बकुम तज़र्रुअंव्व ख़ुफ़ियह, इन्नहू ला युहिब्बुल मुअतदीन ○ वला तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि बअद इस्लाहिहा वद्ऊहू ख़ौफ़ंव्-व तमआ, इन्न रहमतल्लाहि करीबुम्-मिनल् मुह्सिनीन ○ कुलिद्ऊल्ला-ह अविद्ऊर्रहमा-न, अय्यम् मा तद्ऊ फ़-लहुल्-असमाउल्-हुस्ना व ला तज्हर् बि-सलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला ○ व कुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्-लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लाहू वलिय्युम्-मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तक्बीरा ○

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ○ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ○ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ○ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ○

अफहसिब्तुम अन्नमा खलक्नाकुम अबसंव्वअन्नकुम इलैना ला तुरजऊन ○ फतआल्ललाहुल मलिकुलहक्कु, ला इलाह इल्लाहु, रब्बुलअर्शिल् करीम ○ व मंय्यदउ मअल्लाहि इलाहन् आखर ला बुरहान लहू बिही फइन्नमा हिसाबुहू इन्द रब्बिही, इन्नहू लायुफ्लिहुल काफिरून ○ व कुर्रब्बिग्फिर वर्हम् व अन्त खैरुर्राहिमीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ○ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ○ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ○ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ○
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۞ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ
الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِالْكَوَاكِبِ ۞ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۞ لَا يَسَّمَّعُوْنَ
اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۞ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ
وَّاصِبٌ ۞ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ
اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ○

वस्सॉ-फ़्फ़ाति सफ़्फ़न ० फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज़्रन फ़त्तालियाति ज़िक्रन इन्न इलाहकुम लवाहिद ० रब्बुस्समावाति वलअर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल मशारिकि ० इन्ना ज़य्यन्नस्समाअद्दुनया बिज़ीनतिनिलकवाकिब ० व हफ़्ज़म्मिन् कुल्लि शैतानिम्मारिदि ० ला यस्सम्मऊन इलल मलाइल अला व युक़ज़फ़ून मिन कुल्लि जानिबिन ० दुहूरंव्व लहुम अज़ाबुंव्वासिबु ० इल्ला मन ख़ातिफ़ल् ख़त्फ़त फ़अत्बअहू शिहाबुन् साक़िबु ० फ़स्तफ़तिहिम् अहुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़लक़्ना, इन्ना ख़लक़नाहुम मिन तीनिल्लाज़िबि ०

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاۗءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ
ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَاۗنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي
جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ

या मअ्-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम अन् तन्फुज़ू, मिन अक्तारी-ससमावाती वल अर्जी-फन्फुजु ला तनफुज़ुन इल्ला बिसुल्तान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० युर्-सलु अलैकुमा शुवाज़ुम्- मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फला तन्तसिरान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फ-इज़न् शक्कतिस्समा-उ फ-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फयौमइज़िल्-ला युस्अलु अन् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल कुरआन अला जबलिल्लरऐतहू खाशिअम्मुतसद्दिअम्मिन ख़शियतिल्लाहि, व तिल्कल अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअल्लहुम यतफक्करून ० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि

الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुर्रहीम ० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअमिनुल्-मुहैमिनुल्-अज़ीज़ुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ० हुवल्लाहुल् ख़ालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ०

कुल ऊहिय इलय्य अन्नहुस्तमअ नफ़रुम मिनल् जिन्नि फ़कालू इन्ना समिअना कुरआनन अजबां ० यह्दी इलर्रुश्दि फ़आमन्ना बिही, वलन्नुश्रिक बिरब्बिना अहदा ० व अन्नहु तआला जद्दु रब्बिना मत्तख़ज साहिबतंव्वला वलदंव ० व अन्नहु कान यकूलु सफ़ीहुना अलल्लाहि शतता ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

कुल या अैय्यूहल काफीरुन ○ ला आअबुदु मा ताअबुदून ○ वला अन्तुम आबिदूना मा आअबुदू ○ वला अना आबीदुम-मा अबत्तुम ○ वला अन्तुम आबिदुन मा आअबुद ○लकुम दीनुकुम वलियदीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

कुल हुवल्लाहु अहद ○ अल्लाहुस्समद ○ लम यलिद व लम यूलद ○ व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۚ

कुल आऊज़ु बिरब्बिल फलक ○ मिन शर्रि मा खलक ○ व मिन शर्रि गासिकिन इज़ा वकब○ व मिन शर्रिन्नफ्फ़ासाति फिल उक़द ○ व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۪ۙ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۚ

कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि ○ मलिकिन्नासि○ इलाहीन्नासि ○ मिन शर्रिल वस्वासिल खन्नासि ○ अल्लज़ी युवस्विसु फी सुदूरिन्नास ○ मिनल जिन्नति वन्नास ○

हादसात से बचने का वजीफा

हज़रत तलक रहमतुल्लाह अलै. फर्माते है के एक शख़्स हज़रत अबुदरदा सहाबी रज़ि. की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया के आप का मकान जल गया. फर्माया : नहीं जला. फिर दुसरे शख्स ने यही इत्तेला दि तो फर्माया : नहीं जला. फिर तीसरे शख्स ने यही खबरदी, आप ने फर्माया : नही जला. फिर एक शख्स ने आकर कहा के ऐ अबुदरदा रज़ि. ! आग के सरारे बहुत बुलंद हुए मगर जब आप के मकान तक आग पहुंची तो बुझ गई । फर्माया मुझे मालूम था के अल्लाह तआला ऐसा नहीं करेगा (के मेरा मकान जल जाए) क्योंकी मैं ने रसुल अल्लाह स. से सुना है के जो शख्स सुबह के वक्त ये कलमात पढ ले शाम तक इस को कोई मुसीबत नहीं पहोंचेगी. (मैं ने सुबह ये कलमात पढे थे इस लिए मुझे यकीन था के मेरा मकान नहीं जल सकता) वो कलमात ये है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَاْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ○ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी ला इलाहा इल्ला अनता अलैका तवक्कलतु व अनत रब्बुल अरशील करीम

माशाअल्लाहु कान वमा लम यशालम यकुंव्वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयीलअजीम आलमु अन्नल्लाहा अला कुल्ली शैईन कदीरुव्वअन्नल्लाहा कद अहात बिकुल्ली शैईन इलमा ० अल्लाहुम्मा इन्नी आउजूबिका मिन शररी नफसी व मिन शररी कुल्ली दाब्बतीन अनता आखीजुम बिना सियतीहा इन्न रब्बी अला सिरातीम्मुसतकीम ०

मंजीयात

अल्लामा इब्ने सैर बिर रहमतुल्लाह अलै. के ज़रिए से तजरुबे के साथ मुसीबत व गम को दुर करने वाली ये सात आयतें जो मंजीयात के नाम से मारुफ है वो ये है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

कुल्लैय्युंसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना हुव मौलाना व अलल्लाहि फलयतवक्कलीलमुअमीनून ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

व इंय्यमससकल्लाहु बिजुररीन फला काशिफ लहू इल्ला हुव व इंय्युरिदका बिखैरीन फला राददा लिफजलीह यूसीबु बिही मंय्यशाउ मिन इबादिहि. वहुवलगफुररहीम०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

वमा मिन दाबबती फिल अरजी इल्ला अलल्लाहि रिजकुहा वयाअलमु मुसतकररहा व मुसतौवदअहा कुल्लुन फि किताबीम्मुबीन ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّىْ وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ ۢ بِنَاصِيَتِهَا ۚ اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

इन्नी तवक्कलतु अलल्लाहि रब्बी व रब्बीकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हुव आखिजुम बिना सियतेहा इन्न रब्बी अला सिरातिम्मुस्तकीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

वकअय्यीममिन दाब्बतीनलला ताहमिलु रिजकहा अलल्लाहु यरजुकुहा व इय्याकुम वहुवस्समीउलअलीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ ۢ بَعْدِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

मा यफतहिल्लाहु लिन्नासि मिररहमतीन फला मुमसिक लहा वमा युमसिक फला मुरसिल लहु मिम बादिहि वहुवल अजीजुलहकीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ○

वलइन सअलतहुम्मन खलकस्समावाती वल अरज़ा लयकुलुन्नलल्लाहु कुल अफरअैतुम्मा तदउन मिन दुनिल्लाहि इन अरादनीयल्लाहु बिज़ुर्रीन हल हुन्ना काशीफातु जुर्रीहि अवअरादनी बिराहमतीन हल हुन्न मुमसिकातु रहमतीही कुल हसबीयल्लाहु अलैहि यतवक्कलुलमुतवक्कीलून ○

दुआए मांगने की फजीलत

हदीस शरीफ में आया है के रसुल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के अल्लाह तआला के यहां दुआ से ज़्यादा और किसी चीज़ की वकअत नहीं.

एक और हदीस शरीफ में आया है के आहज़रत स. ने इर्शाद फर्माया : जो शख्स ये चाहे के अल्लाह इस की दुआ सख्तीयों और मुसीबतों के वक्त कुबुल फर्माए, इस को चाहिए के वो फराखी और खुश हाली में भी कसरत से दुआ मांगा करे.

एक और हदीस में आया है के रसुले अकरम स. ने इर्शाद फर्माया के दुआ मोमिन का हथीयार है, दीन का सुतुन है और आसमान व ज़मीन का नुर है. अगर दुशमन मुसलमानो का मुहासेरा करलें तो ये दुआ पढे :

اللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا.

अल्लाहुम्मस्तुर अव रातिना वआमिरववआतिना

" ऐ अल्लाह ! तु हमारी कमज़ोरीयों को छुपाले और हमारे डर और खौफ को अमन व अमान देदे."

जब भी किसी मुसीबत व बला या खौफनाक अमर के पेश आने का अंदेशा हो या किसी बहोत बडी मुसीबत में गिरफतार हो जाए तो कसरत से इस का विरद रखे :

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

हसबुनल्लाहु वनिअमलवकीलु अलल्लाहि तवक्कलना॰

" काफी है हमारे लिए अल्लाह , और वो बहोत हि अच्छा कारसाज़ है. अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया है."

मस्नून व मक़बूल दुआएं

① سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

१. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, अस्तग़्फ़िरुल्लाहल अज़ीम व अतूबु इलैह ०

जो शख्स इन चार कल्मात को पढेगा तो कल्मात जैसे उस ने पढे (जूं के तूं) लिख दिए जाएंगे। फिर अर्श के साथ लटका दिए जाएंगे, कोई भी गुनाह जो वो करेगा इन कल्मात को नहीं मिटा सकेंगे। यहां तक के जब वो शख्स क़यामत के दिन अल्लाह से मिलेगा तो इन कल्मात को जूं का तूं सरबमुहर पाएगा। (हसन हुसैन)

② جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

२. जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदम मा हुव अहलुहू,

ये दुआ सरकारे दो आलम स. के लिए है। जो इस को एक बार पढेगा उस के लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते एक साल तक नेकियां लिखते रहते हैं।

③ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

३. जो शख्स लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह, पढा करे उस के लिए ९९ बीमारीयों की दवा है जिस में सबसे हल्की बीमारी फिक्र व परेशानी है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ④

४. अल्लहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अन्ज़िल्हुल मक्अदल मुकर्रब इन्दक यौमल कियामह,

हज़रत रुवैफअ रज़ि. हुजूर अकसद स. का ये इर्शाद नकल करते हैं के जो शख्स ये दुरुद पढे उस के लिए मेरी शिफाअत वाजिब है। (फज़ाइले आमाल)

⑤ رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

५. रोज़ाना २७ बार **रब्बीगफिरली वलीवालिदय्य व लिलमुअमीनील वलमुमीनाति यौम यकूमुलहिसाब ०**

① اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِيْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ

६. शहादत हासिल करने का तरीका : **अल्लाहुम्मा बारिक ली फिल् मौति व फि मा बअदल मौत**

जो शख्स दिन में २५ बार मौत को याद करेगा वो अल्लाह पाक के हुक्म से शहादत की मौत से सुर्खरू होगा।

७. मर्ज़ुल मौत की दुआ : जो शख्स इस दुआ को मर्ज़ुल मौत में चालीस बार पढेगा उस को शहादत का सवाब मिलेगा।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

ला इलाह इलल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम

बीमारी में इस दुआ का विर्द किया जाए मुमकिन है वही मर्ज़ुल मौत हो।

٨ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

८. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम.

ये दो कलमात ज़बान पर हलके और वज़न में भारी है और अल्लाह को बहोत पसंद है । (हुसने हसीन)

٩ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

९. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही

हुज़ुर स. ने फर्माया जो शख्स एक मर्तबा **ला इलाह इलल्लाहु** कहे इस के लिए जन्नत वाजिब होंगी और जो शख्स **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** सौ १०० मर्तबा पढेगा इस के लिए १लाख-२४ हज़ार नेकीयां लिखी जाएगी। अल्लाह तआला के नज़दीक ये कलमा पहाड के बकद्र सोना खर्च करने से भी ज़्यादा महबूब है। (फज़ाईले आमाल)

١٠ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

१०. ला इलाह इलल्लाहु वहदहू लाशरीक लहू अहदन समदल्लम यलिद् वलम् यूलद् वलम् यकुल्लहू कुफुवन अहद ० एक मर्तबा पढने वाले के लिए बीस २० नेकियां लिखी जाती हैं।

﴿١١﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ○ وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

११. ला इलाह इलल्लाहु वहिद अहदन समदल्लम यत्तखिज् साहिबतंव्वला वलदा ० वलम् यकुल्लहु कुफुवन अहद ० दस मर्तबा पढने से चालीस हजार नेकियां उस के लिए लिखी जाती हैं।

हज़रत माअकुल बिन यसार रहमतुल्लाह अलै. का बयान है के रसुल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया जिस का मफहुम है के जो शख्स सुबह को तीन मर्तबा

﴿١٢﴾ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

१२. आउजुबिल्लाहि स्समिइल अलीमी मिनशशैतानिररजीम ० पढ कर सुरेह हशर की तीन आखरी आयात पढे.

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि वश्शहा-दति हुवर-रहमानुर्रहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअमिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ० हुवल्लाहुल् खालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

तो इस के लिए खुदावंदे तआला ७० हज़ार फरीशते मुक़र्रर फर्मादेगा जो शाम तक इस पर रहमत भेजते रहेंगे और अगर इस दिन मर जाएगा तो शहीद मरेगा और जो शख्स शाम को ये अमल करे तो इस के लिए अल्लाह तआला ७० हज़ार फरीश्ते मुकर्रर करेगा जो इस पर सुबह तक रहमत भेजते रहेंगे। और अगर इसी रात मर जाएगा तो शहीद मरेगा. (तिर्मीज़ी)

१३. रसूल अल्लाह स. ने हज़रत जुवेरिया रज़ि को (जो फजर की नमाज़ से चाश्त के वक्त तक मुसल्ले पर तस्बीहात में मश्गूल थीं) फरमाया मैं ने तुझ से जुदा होने के बाद चार कल्मे पढे हैं, अगर उन को उन सब के मुकाबले में तोला जाए जो तुम ने सुबह से पढा है तो वो ग़ालिब हो जाएं। वो कल्मे ये है।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

१३.सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अदद खल्किही व रिज़ा नफ्सिही व ज़िनत अर्शिही व मिदाद कलिमातिही.

१४. जुमा के दिन के मखसूस आमाल व औराद सूरे कहफ जो कोई जुमा के दिन पढेगा दूसरे जुमा तक उसके गुनाहों का कफ्फारा हो जाएगा और उसके लिए नूर चमकेगा। इसी तरह अलबाकी जो कोई जुमा के दिन सौ बार पढे तो उसके तमाम नेक आमाल मकबूल हो जाएंगे। जुमा की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा पढे : यागफ़्फारु इगफीरली ज़ुनूबी तो हक तआला उसकी मगफ़िरत फरमा देंगे। जुमा के रोज़ बाद नमाज़े असर अपनी जगह से हटने से पहले अस्सी बार ये दुरूद पढें :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्मा सल्लिअला मुहम्मदिन्नबीय्यील उम्मिय्यी व अला आलिही व सल्लिम तस्लीमा

तो अल्लाह तआला उस के अस्सी साल के गुनाह मआफ फरमादेंगे। जुमा की शब को चालीस बार चौथा कल्मा पढेगा तो हज का सवाब पाएगा।

१५. दोज़ख़ की आग से निजात

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्मा अजिरनी मिनन्नार

अगर ये दुआ सुबह फजर और मगरिब की नमाज़ के बाद सात मर्तबा पढी जाए तो अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग से महफूज़ रखेंगे।

१६. अल्लामा औनी रहमतुल्लाह अलै ने शरह बुखारी में एक हदीस नक्ल की है के जो शख्स एक मर्तबा ये दुआ पढे और इस के बाद ये दुआ करे या अल्लाह ! इस का सवाब मेरे वालिदैन को पहोंचादे तो इस ने वालिदैन का हक अदा कर दिया. दुआ ये है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْعَظَمَةُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الْمَلِكُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ النُّوْرُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

१७. जामेअ दुआ

हज़रत अबू उमामा रज़ि ने हुज़ुरे अक्दस स. से अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह स. दुवाएं तो आप ने बहुत सी बता दी है और सारी याद नहीं रहतीं, कोई एसी मुख्तसर दुआ बता दिजिए जो सब दुवाओं को शामिल हो जाए। इस पर हुज़ुर स. ने ये दुआ तालीम फरमाई :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ
نَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ
الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ترمذی)

अल्लाहुम्मा इन्ना नस्अलुक मिन खैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्यु-क मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व नउजु बिक मिन शर्रिमस्तआज़क मिन्हु नबीय्युक मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व अन्तल मुस्तआन व इलैकल बलागु व ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह (तिर्मिज़ि शरीफ)

सुबह व शाम के वज़ाएफ

तीसरे कल्मे की तस्बीह

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا
قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दुलिल्लाहि वला इला-ह इलल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यील अज़ीम,

दुरूद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मौलाना मुहम्मदिंव बारिक व सल्लिम.

(दुरुदे इब्राहीमी पढे तो ज्यादा बहतर है।)

अस्तगफार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَالْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफीरुल्लाहल्लजी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल कय्युम व अतुबु इलेह.

सूरे इन्आम की फजीलत

जो शख्स सूरे इन्आम की शुरु की तीन आयतें (मातक्सिबून) तक पढेगा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰىٓ اَجَلًا وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी खलकस्समावाति वल् अर्ज व जअलज़्जुलुमाति वन्नूर, सुम्मल्लजीन कफरू बिरब्बिहिम यअदिलून ० हुवल्लजी खलककुम्मिन् तीनिन सुम्म कजा अजला. व अजलुम्मुसम्मन इंदहु सुम्म अंतुम तम्तरून ०

व हुवल्लाहु फिस्समावाति व फ़िल अर्ज़, यअलमु सिर्रकुम वजहरकुम वयअलमु मा तक्सिबून ०

इस के लिए चालीस फरिश्ते मुकर्रर किए जाएंगे, वो चालीस४० फरिश्ते कयामत तक इबादत करेंगे, सारा सवाब पढने वाले के नामे आमाल में लिखा जाएगा। और एक फरिश्ता आस्मान से लोहे का गरज़ लेकर नाज़िल होता है, जब पढने वाले के दिल में शैतान वस्वसे डालता है तो वो फरिश्ता गरज़ से उसकी खबर लेता है। सत्तर पर्दे बीच में हाइल हो जाते हैं। क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुल आलमीन फरमाएंगे तु मेरे ज़ेरे साया चल, जन्नत के फल खा, हौज़े कौसर का पानी पी। सलसबील की नहर में नहा। तू मेरा बंदा मैं तेरा रब (हवाला कमालीन शरह जलालीन शरीफ)

जुमा के रोज कसरते दुरूद शरीफ

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि की हदीस में ये नकल किया गया है के जो शख्स जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले अस्सी मर्तबा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन्नबीय्यील उम्मिय्यी व अला आलिही व सल्लिम् तस्लीमा ०

पढें तो उसके अस्सी साल के गुनाह मआफ और अस्सी साल की इबादत का सवाब उसके लिए लिखा जाएगा।

वालदैन के हक में दुआ

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا ۝

रब्बिरहम्हुमा कमा रब्बयानी सगीरा ०

एक मुफीद तरीन दुआ

जो आदमी हर नमाज़ के बाद इस को पाबंदी के साथ पढे खुसुसन जुमा की नमाज़ के बाद तो अल्लाह तआला हर खौफ की चिज़ से इस की हिफाज़त करेगा और इस के दुशमनो पर इस की मदद करेगा और इस को गनी करदेगा और इस को ऐसी जगह से रिज़्क पहुंचाएगा जहां इस का ख्याल भी ना जाए और इस की ज़िंदगी इस पर आसान कर देगा और इस का कर्ज़ा अदा कर देगा अगरचे पहाड के जितना कर्ज़ा हो अल्लाह तआला अपने फज़्ल व करम से इस को पुरा करेगा.

يَا اَللّٰهُ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا مَوْجُوْدُ يَا جَوَّادُ يَا بَاسِطُ يَا كَرِيْمُ يَا وَهَّابُ يَا ذَا الطَّوْلِ يَا غَنِيُّ يَا مُغْنِيْ يَا فَتَّاحُ يَا رَزَّاقُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ اِنْفَحْنِيْ مِنْكَ بِنَفْحَةِ خَيْرٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ اَللّٰهُمَّ يَا غَنِيُّ يَا حَمِيْدُ يَا مُبْدِئُ يَا مُعِيْدُ يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لِّمَا يُرِيْدُ اِكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ وَاحْفَظْنِيْ بِمَا حَفِظْتَ بِهِ الذِّكْرَ وَانْصُرْنِيْ بِمَا نَصَرْتَ بِهِ الرُّسُلَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

या अल्लाह या अहदु या वाहिदु या मौजुदु या जव्वादु

या बासितु या करीमु या वहहाबु या जुत्तौली या गनीय्यु या मुग्नी या फत्ताहु या रज़्ज़ाकु या अलीमु या हकीमु या हय्यु या कय्युमु या रहमानु या रहीमु या बदीअस्समावाती वलअरज़ी या ज़ुलजलालि वलइकरामी या हन्नानु या मन्नानु इनफाहनी मिनका बिनफहती खैरीन तुगनीनी बिहा अम्मन सिवाक इन तसतफतीहु फकद जाअकुमुल फतहु इन्ना फताहना लका फतहम्मुबीनन्नसरुम्मीनल्लाहि व फतहु करीब अल्लाहुम्मा या गनीय्यु या हमीदु या मुबदीउ या मुईदु या वदुदु या ज़ुलअरशीलमजीदी याफाअल्ललीमा युरीद इकफिनी बिहलालिक अन हरामिक व अगनीनी बिफज़्लिका अम्मन सिवाक वहफज़नी बिमा हफिजत बिहिज़्ज़ीकरा वनसुरनी बिमा नसरता बिहिररुसुल इन्नका अला कुल्ली शैईन कदीर.

किसी बडी मुसीबत के पेश आने पर

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

अव्वल इन्न लिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजीउन पढे फिर इस दुआ को पढे

اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا

अल्लाहुम्मा अजीरनी फि मुसीबती वख़लुफ ली खैरम्मिनहा.

आयाते शिफा

कुरआन मजीद की मंदरजा ज़ैल आयात को आयाते शिफा कहा जाता है. ये आयात हुसुले शिफा के लिए बहोत मुफीद है बशर्तयेके इन आयात को बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में खुलुस से पढा जाए. अगर कोई मरीज़ हो तो इन आयात को २१ मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाया जाए और ये अमल गयाराह यौम तक किया जाए. शुरु में बिस्मील्लाह शरीफ और तीन बार सुरेह फातेहा पढी जाए, अगर ये ना किया जा सके तो फिर इन आयात को बिस्मील्लाह और सुरेह फातेहा के साथ चीनी की रिकाबी पर लिख कर पानी से धोकर मरीज़ को पिलाए इन्शाअल्लाह बहोत जल्द सहत याबी हासील होगी.

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ (القرآن)

वयशफिसुदुर कौमिमुअमीनीन व युज़हिब गैज़ा कुलुबिहिम.

(अलकुरआन ९/१६)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (القرآن)

या अय्युहन्नासु कद जाअतकुम मौइज़तुममिररब्बिकुम व शिफाउल्लीमा फि सुदुरि वहुदव्वंराहमतुललिलमुअमीनीन

(अलकुरआन १०/५७)

يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ (القرآن)

यखरुजु मिमबुतुनिहा शराबुम्मखतलिफुन अलवानुहु फिही शिफाउल्लीन्नासि. (अलकुरआन १६/६९)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

वनुनज़्जीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउव्वराहमतुल लिलमुअमीनीन वला यजीदुज़्जालीमीन इल्ला खसारन (१७/८२)

الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ۝ وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ ۝ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ ۝

अल्लजी खलक्नी फहुव याहदीन० वल्लजी हुव युतइमुनी वयुसकीन ० वइजा मुरीजतु फहुव यशफीन०(२६/७८-८०)

قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّشِفَآءٌ ۝

कुल हुव लिल्लजीना आमनु हुदव्विशिफाउ (४१-४२)

इस्तेकामत और तलबे रहमत की दुआ

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (القرآن)

रब्बना अफरिग अलैना सबरंव्वसब्बित अकदा मना वनसुरना अल्लकौमिलकाफिरीन. (अलकुरआन २/२५०)

"ऐ हमारे परवरदीगार ! हमारे दिलों में सब्र डाल दे और हमारे कदम जमाए रख और इन काफिरों के मुकाबले में हमारी मदद फर्मा."

चंद खास कुरआनी दुआएं

चंद खास कुरआनी दुआएं

कबुले इबादत व हसुले इमान व तलबे हिदायत की दुआ

ये दुआ हज़रत इब्राहिम व हज़रत इस्माईल अलै. की है जो के बैतुल्लाह शरीफ के बनाते वक्त बिलहामे खुदावंदी की थी :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ (القرآن)

रब्बना तकब्बल मिन्ना० इन्नका अंतस्समीउल अलीम० रब्बना वजअलना मुसलिमयनी लका व मिन जुर्रीयतीना उम्मतम्मुसलिमतल्लका व अरिना मना सिकना व तुब अलैना इन्नका अंतत्तव्वाबुर्रहीम० (अलकुरआन २/१२७/१२८)

तर्जुमा : ''ऐ हमारे प्रवरदीगार ! तू हम से कबुल फर्मा, तु हि सुनने जानने वाला है. ऐ हमारे परवरदीगार ! और हम को बनाले अपना फर्मांबरदार और हमारी अवलाद में से भी एक जमात अपनी फर्मांबरदार बना और दिखा हम को हमारी इबादत के तरीके और हम पर तवज्जो फर्मा बेशक तु हि तवज्जो फर्माने वाला बडा महरबान है.''

दुनिया व आखेरत की भलाई की दुआ

इस दुआ में दोनो जहां की भलाई तलब की गई है. रसुल अल्लाह स. इस को अकसर पढा करते थे :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (القرآن)

रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतव्वफिल आखिरती हसनतुव्वकिना अजाबन्नार (अलकुरआन २/२०१)

"ऐ हमारे परवरदीगार ! हमें दुनिया में भी नेकि अता फर्मा और आखिरत में भी नेकी अता फर्मा और दोज़ख के अज़ाब से बचा."

तौबा व अस्तगफार

गुनाहो से अगर बाज़ आएं और करें तौबा
अभी सब दुर हों जितनी बलाएं आसमानी है

कुरआन मजीद में तौबा व अस्तगफार की बार बार ताकीद फर्माइ गई है. एक मुकाम पर इर्शाद है :

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

व अन्निसतगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युमत्तीअकुम्मताअन हसनन इला अजलीम्मुसम्मव्युति कुल्ल जि फज़्लीन फजलहु व इन तवल्लौ फइन्नी अखाफु अलैकुम अजाब यौमिन कबीर ०

इस इर्शादे रब्बानी से मालूम होता है के तौबा व अस्तगफार के ज़रीए अल्लाह तआला की नेअमतें हासिल होती

है और मसाईब व मुशकीलात से निजात मिलती है और रिज़्क में इज़ाफा होता है.

अंबिया किराम अलैहिमस्सलाम ने हर दौर में उम्मत को अस्तगफार और तौबा की तलकीन फर्माइ है. चुनांचे हज़रत नुह अलै. ने अपनी कौम को इस तरह तरगीब फर्माइ:

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ (نوح پ ٢٩ آيت ١٠ تا ١٢)

इस्तगफिरु रब्बकुम इन्नहु कान गफ्फारय्युरसिलिस्समाअ अलैकुम मिदरारा ० व युमदिदकुम बिअमवालिंव्वबनीन वयजअल्लकुम जन्नातिंव्वयजअल्लकुम अनहारा०

(नुह, पारा २९ आयत १० ता १२)

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ (هود پ ١٢ آيت ٥٢)

व याकौमिस्तगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युरसीलिस्समाअ अलैकुममिदरारव्वयजीदकुम कुव्वतन इला कुव्वतिकुम ०

(हुद, पारा १२, आयात ५२)

इस आयाते मुबारका में गौर तलब बात ये है के अस्तगफार व तौबा दोनों का हुक्म हुआ है. दरअसल अस्तगफार के मानी है : अपने पिछले गुनाहो की बख्शीश और मगफिरत अल्लाह तआला से तलब की जाए और तौबा का मतलब ये है के इन्सान अपने गुनाहों पर शरमिंदा हो और आइंदा गुनाहो से बाज़ आने का मुसम्मम अज़म यानी पुख्ता इरादा करें.

अहादीस मुबारका में भी तौबा व अस्तगफार की बडी ताकीद फर्माइ गई है. चुनांचे एक हदीस शरीफ में सरवरे काएनात फख़्रे मौजुदात सय्यदना हज़रत मोहम्मद मुसतफा स. का इर्शादे गिरामी है :

ऐ लोगो ! तौबा करो. ‘‘मैं भी दिन में सौ १०० मर्तबा तौबा करता हूं.’’ (मिशकात)

मकामे हैरत है के रसुल अकरम स. जो के सरापा मासूम और गुनाहो से पाक है, रोज़ाना सौ १०० मर्तबा अस्तगफार पढते है और हम जो सरापा खता है, दिन में एक बार भी तौबा व अस्तगफार ना पढें.

एक और हदीस पाक में इर्शादे रसुल अल्लाह स. है के जो आदमी बाकाएदगी के साथ बिलानागा अस्तगफार करता है अल्लाह तआला इस के लिए हर तंबी और निजात के रास्ते निकाल देते है, रंज व फिक्र से निजात फर्माते है और बेगुमान रिज़्क नसीब फर्माते है. (मुसनदे अहमद,अबुदाउद, इब्ने माजा)

हज़रत महबुब सुब्हानी कुतुबे रब्बानी शेख अब्दुलकादर जिलानी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब ‘‘फतुहुगैब’’ में फर्माते है :

‘‘जैसा के अहादीस में मज़कुरा है के हुजुर अकरम स. बकसरत अस्तगफार फर्माते, इस लिए के अस्तगफार तज़कीया रुह और जलाए कल्ब का बाअस है और हर मोमिन के लिए मुफीद है. तौबा व अस्तगफार हर हाल में अबद (बंदा) की दो लाज़मी सिफात है और ये दोनो सिफात हज़रत आदम अलै. की मुकद्दस मिरास है और यही खुदा के सच्चे आशिको

और दोस्तों की सुन्नत है जो निजात की ज़ामिन है."

हज़रत आदम अलै. से भी जब गलती और खता सरज़द हुई थी तो वो खता तौबा व अस्तगफार के ज़रीए ही माफ करदी गई थी. कुरआन मजीद में हज़रत आदम अलै. की ये दुआ मज़कुर है :

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝

रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तगफिरलना व तरहमना लनकुनन्ना मिनल खासीरीन ०

चुनांचे अस्तगफार के इन कलमात की अदाएगी के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. का वो कसुर माफ फर्मा दिया. अहादिस में अस्तगफार के मुख्तलीफ कलमात मज़कुर है वो ये है :

रसुल अल्लाह स. ये कलमा अस्तगफार सौ १०० मर्तबा पढते थे.

① رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

रब्बिगफिरली वतुब अलय्य इन्नका अनतत्तव्वाबुररहीम०

② أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहिल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्युमु वअतुबु इलैह०

(३) सय्यदुलअस्तगफार य है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ
مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ
فَاغْفِرْلِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी लाइलाहा इल्ला अनता खलकतनी व अन्ना अबदुका अइन्ना अला अहदिक ववअदिक मसतताअतु आउजुबिक मिन शर्रीमा सनअतु अबुउ लका बिनीअमतिक अलय्य वअबुउ बिजंबी फगफिरली फइन्नहु लायगफिरुज्जुनुब इल्ला अनता ०

हुजुर अनवार स. ने फर्माया : सय्यदुलइस्तगफार के ये कलमात जो शख्स सुबह को दिल के पुरे यकीन के साथ पढे और फिर इसी रोज़ इंतेकाल हो जाए तो वो जन्नती है और जो शख्स रात को यकीन कामिल के साथ पढे और सुबह होने से कबल वफात पा जाए तो वो अहले जन्नत में से है. (बुखारी)

(४) हज़रत आईशा रज़ि. बयान करती है के रसुल अल्लाह स. ने फर्माया के जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. को ज़मीन पर उतारा तो वो उठ कर मकामे काबा में आए और दो रकात नमाज़ पढ कर इस दुआ को (बिलहामि इज़दी) पढा. अल्लाह तआला ने इसी वक्त वही भेजी के "ए आदम अलै. ! मैं ने तेरी तौबा कबुल की और तेरा गुनाह माफ किया और तेरे अलावा जो कोई मुझ से इन कलमात से दुआ करेगा मैं इस के भी गुनाह माफ कर दुंगा. और इस की मुहिम को फताह करुंगा और शयातीन को इस से रोकूंगा और दुनिया इस के

दरवाज़े पर नाम घसटती चली आएगी, अगरचे वो इस को ना देख सके. वो दुआ ये है :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّىْ وَعَلَانِيَتِىْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِىْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِىْ فَاَعْطِنِىْ سُؤَالِىْ

وَتَعْلَمُ مَا فِىْ نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَاشِرُ قَلْبِىْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا

حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِىْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِىْ وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِىْ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۞

अल्लाहुम्मा इन्नका ताअ्लमु सिर्रीयी व अला नियती फअकबल माजीरती व ताअ्लमु हाजति फआतिनी सुआली व ताअलमु मा फि नफसी फगफिरली जंबी अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इमानय्युबा शिरु कलबी व यकीनन सादिकन हत्ता आलम अन्नहु ला युसीबुनी इल्ला मा कतबता लि व रिजम बिमा कसमत लि या अरहमराहीमीन ० तिबरानी व बेहकी

(५) बाज़ अहादीस में ये कलमात मज़कुर है :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّىْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ली जंबी व अतुबु इलैह.

हज़रत शेख़ जलालुद्दीन सीवती रह. से मनकुल है के फहम इल्म और कसरते माल के लिए बाद नमाज़े फजर रोज़ाना तीन मर्तबा ये अस्तगफार पढे :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ جَمِيْعِ جُرْمِىْ وَاِسْرَافِىْ عَلٰى نَفْسِىْ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफीरुल्लाहल अजीमल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवल

हय्युलकय्युमु बदीउस्समावाती वलअर्जी वमा बैनहुमा मिन जमीइ जुरुमि व इसराफि अला नफसी वअतुबु ईलह. ये अमल मुजर्रीब

शेखुल मशाईख हजरत शेख कलीमुल्लाह जहां आबादी रह. ने मरका शरीफ में तहरीर फर्माया है के जो शख्स दो माह तक बिलानागा रोज़ा चार सौ बार ये अस्तगफार पढे तो अल्लाह तआला इसे इल्म नाफे या माले कसीर अता फर्माए. यानी अगर निय्यत हुसुले इल्म है तो इल्म हासिल होगा और अगर तालिबे माल की निय्यत से पढेगा तो वो मिलेगा वो अस्तगफार ये है :

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
مِنْ جَمِيْعِ جُرْمِىْ وَظُلْمِىْ وَاِسْرَافِىْ عَلٰى نَفْسِىْ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्युमुर्रहमानुर्रहीम बदी उस्समावाती वलअर्जी मिन जमीइ जुरुमि व जुलमि व इसराफि अला नफसी वअतुबु इलैह.

तौबा व अस्तगफार में जितनी जल्दी की जाए उतना हि बेहतर है. जैसे हि गुनाह सरज़द हो तो फौरन अल्लाह तआला के हुजुरे सरे नदामत झुका कर अपने कुसुर और कोताहि की माफी मांगनी चाहिए, वरना मरते दम तक शैतान की ये कोशिश होती है के वो दिन में ये खुश फहमी पैदा करता रहता है के अभी तो तुम्हारी उम्र हि क्या है, बाद में तौबा कर लेना. यहां तक के मौत सर पर आ खडी होती है और

इन्सान तौबा से महरुम हो कर तबाह व बरबाद हो जाता है.

दुसरी अहम बात ये है के तौबा सिर्फ ज़बानी काफी नहीं है क्योंकी असली और सच्ची तौबा ये है के इन्सान सच्चे दिल से ये अहद करे के आइंदा इस गुनाह के करीब नहीं जाएगा. कुरआन हमीक का इर्शाद है :

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا تُوْبُوْا إِلَى اللهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا

या अय्युहल्लजीना आमनू तूबु इलल्लाहि तौबतंनसुहा.

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यूं तो दिने इस्लाम में बिदआत का इज़ाफा अब रोज़ मर्रा का मामुल बन चुका है लेकिन इज़कार व वज़ाईफ में खुसुसन इतनी ज़्यादा खुद साखता और गैर मसनुन चिज़ें शामिल करदी गई है के मसनुन अदीया व इज़कार ताक नसीयां बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साखता और गैर मसनुन इज़कार व वज़ाईफ की तरह दरुद व सलाम में भी बहोत से खुद साखता और गैर मसनुन दरुद व सलाम राएज हो चुके हैं. मसलन दरुद ताज, दरुद लिखी, दरुद मुकद्दस, दरुद अकबर, दरुद माहि, दरुद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरुद के पढने का तरीका और वक्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज़्यादा तर दुनयावी है) का भी अलग अलग तज़केरा कुतुब में लिखा गया है. मज़कुरा दरुदो में से कोई एक दरुद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज़ रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाज़ा इन्हें पढने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज़ खुद बातिल ठहरते है. रसुल अल्लाह स. की नाराज़गी और अल्लाह तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाज़ा वही वज़ाईफ पढे जो रसुल अल्लाह स. से साबित है. याद रखीए रुसल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉलेह के बनाए हुए कलमाते खैर से ज़्यादा अफज़ल और कीमती है.

(बराए महरबानी मोमिन पंचसुरा पढीए)

चहल रब्बना माअ चहल दरुद

बिस्मील्लाहिर्रहमानिरहीम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिन्नबीयीलउम्मी व अला आलिही व बारिक व सल्लीम.

① رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्न क अन तस समीअुल अलीमु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिवं वआला आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा सल्लैयत अला इब्राहिम वअला आलि इब्राहिम इन्नका हमिदुम्मजीद०

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○ ② رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○

अल्लाहुम्मा बारिक अला सय्यीदिना मोहम्मदिवंवआला आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहिम वआला आलि इब्राहिम इन्नक हमिदुम्मजीद ० रब्बना वजअलना मुसलिमैनी लक व मिन जुरीयतिना उम्मतम्मुसलीमतल लक व अरिना मना सिकना वतुब अलैना इन्नक अनतत्तव्वाबुररहीम ०

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ
اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिन्निनबीईल उम्मीई वअज्वाजिही उम्महा तिलमुअमीनीन व जुर्रीयातिहि व आहलि बैतिही कमा सल्लैयत अला इब्राहिम इन्नका हमीदुम्मजीद ०

٢ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

रब्बना आतिना फिद्दुनिया ह स न तवँ व फिल आखिरति ह स न तवँ व किना अजाबन्नारि ०

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْحِلِّ وَالْحَرَامِ وَرَبَّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ
وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ لِرُوْحِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مِّنَّا السَّلَامَ ○

अल्लाहुम्मा रब्बल हिल्ली वलहरामि व रब्बल मशअरिल हरामि व रब्बलबैतिलहरामि व रब्बरुकनि वल मक़ामि अबलिग लिरुहि सय्यीदिना व मौलाना मुहम्मदिम मिन्नस्सलाम ०

٤ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना अफरिग़ अलैना सब रवँ व सब्बित अक़दा मना वन सुरना अलल कौमिल काफिरीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मुहमदिनिन्नबीईल उम्मी व आलिहि व असहाबिही व सल्लीम ०

⑤ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَّسِيْنَا أَوْ أَخْطَأْنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّأَنْزِلْهُ
الْمُنْزَلَ الْمُقَرَّبَ مِنْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ○

रब्बना ला तुआ खिज़ना इन्न सीना अव अख़्ताना अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मुहम्मदिवँ व अनज़ीलहुल मंज़िलल मुकर्रबा मिनका यौमल क़ियामा ०

⑥ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِي الْأَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ
فِي الْقُبُوْرِ ○

रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा ह मल तहू अ लल लज़ी न मिन कब लिना ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला रुहि सय्यीदिना मुहम्मदिन फिलअरवाहि व अला जसदिहि फिलअजसनादि व अला कबरीहि फिल कुबुर ०

⑦ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا
أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَفِي الْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ○

रब्बना वला तुहम्मिल ना माला ता क़ त लना बिही वाअफु अन्ना ० वग़फिर लना ० वर हमना . अन त मौलाना फन सुरना अलल कौमिल काफिरी न ० अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलअव्वलीन वल आखिरीन व फिल मल इल अला इला यौमिद्दिन ०

(٨) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَاءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْمَقَامَ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ ○

रब्बना ला तुजिग कुलू बना बाअ् द इज् हदय तना व हब लना मिल्ल दुन क रह म तन इन्न क अनतल वह्हाब ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मोहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिव सलातन तकुनु लका रजाअवँ व लिहक्किहि अदाअवँ व आतिहिल वसीलता वलमक़ामल्लजी व अत्तहु ०

(٩) رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ ○

रब्बना इन्न क जामिउन नासि लि यौमिल ला रैब फीहि इन्नल्लाह ला युख़लिफुल मीआद ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिक व सल्ली अलल मुअमीनीन वल मुंअमीनाती वलमुसलीमीन वल मुसलीमात ०

(١٠) رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना इन्न ना आमन्ना फग़ फिरलना जुनू बना व किना अजाबन्नार ० अल्लाहुम्म सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदवँ व अला आलीहि व सल्लीम ०

(११) رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ ○

रब्बना आमन्ना बिमा अन जल त वत्त बअ़्नर रसू ल फक तुब्ना म अश्शा हिदीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन अ़बदिक व नबीय्यीकन्नबीयिल उम्मी ०

(१२) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ ○

रब्बनग़ फिर लना जुनू बना व इसरा फना फी अमरिना व सब्बित अक़दा मना वन सुरना अ़लल क़ौमिल काफिरीन ० अल्लहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि सय्यिदिना मोहम्मदिवँ व अ़ला आहलि बैतिहि ०

(१३) رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاَوَّلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي النَّبِيِّيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمُرْسَلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ○

रब्बना मा खलक़त हाज़ा बातिलन सुबहा न क फक़िना अ़ज़ाबन्नार ० अल्लाहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलअव्वलीन व सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलआखीरीन व सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिन्नबीयीन व सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलमुरसलीन व सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलमलइल आला इला यौमिद्दिन ०

(١٤) رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى
اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَسَلِّمْ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَاءَ نَفْسِكَ وَزِنَةَ عَرْشِكَ
وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ ○

रब्बना इन्न क मन तुद खि लिन्ना र फ कद अखजै तहू व मा लिज़्ज़ा लिमी न मिन अनसार ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अब्दिक व नबीय्यीक व रसुलिकंन्नबीयील उम्मी व अला आलिहि व अज़्वाजिहि व ज़ुरीयातिहि व सल्लिम अदद खलकीक व रिज़ाआ नफसिक वज़िनता अरशिका व मिदाद कलिमातिक ०

(١٥) رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَ بِالصَّلٰوةِ
عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ اَنْ يُّصَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تَنْبَغِى الصَّلٰوةُ عَلَيْهِ ○

रब्बना इन्न ना समिअना मुनादि ययँ युनादी लिल ईमानि अन आमिनू बि रब्बिकुम फ आमन्ना ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बिअददि मिन सल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बिअददि मल्लम युसल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा अमरत बिस्सलाति अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु अंय्युसल्ला अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तंबगीस्सलातु अलैहि ०

(١٦) رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ
عَدَدَ مَا عَلِمْتَ وَزِنَةَ مَا عَلِمْتَ وَمِلْءَ مَا عَلِمْتَ ○

रब्बना फग़ फ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना व त वफ़्फ़ना मअल अबरारि ○अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन्नबीयील उम्मी व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लीम अदद मा अलिमत व ज़िन्नता मा अलिमता व मिलआ मा अलिमत ○

(١٧) رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النُّوْرِ
الذَّاتِيِّ وَالسِّرِّ السَّارِيْ فِيْ سَائِرِ الْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ ○

रब्बना व आतिना मा व अत्तना अला रुसुलि क व ला तुख़्ज़िना यौमल क़िया मति इन्न क ला तुख़्लिफ़ुल मीआद ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नुरी ज़्ज़ाति व स्सीरीस्सारियी फ़ि साइरलअसमाइ वस्सीफ़ात ○

(١٨) رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰدَمَ وَنُوْحٍ وَّاِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَا بَيْنَهُمْ
مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ○

रब्बना आमन्ना फक तुब्ना म अश्शहिदीन ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँव आदम व नुहिव्व इब्राहिम व मुसा व इसा व मा बैनहुम मिन्नबीयीन वलमुरसलीन सलवातुल्लाहि व सलामुहु अलैहिम अजमईन ○

﴿١٩﴾ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّأَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلٰوةً دَائِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ ○

रब्बना अन्ज़िल अलैना माइ द तम मिनस समाई तकूनु लना ईदल्ली अव्वलिना व आखिरिना व आ य तम मिन क वरज़ुकना व अन त खैरुर राज़िकी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अदद मा फि इलमिल्लाहि सलातन दाईमतन बिदा वामि मुलकिल्लाह ०

﴿٢٠﴾ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهٖ ○

रब्बना ज़ लमना अनफु सना ० व इँल्लम तगफिर लना व तर हमना ल नकू नन न मिनल खासिरी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिही अदद कमालिल्लाहि व कमा यलीकु बिकमालिहि ०

﴿٢١﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ إِنْعَامِ اللّٰهِ وَإِفْضَالِهٖ ○

रब्बना ला तज अल्ना म अल कौमिज़ जालिमी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिहि अद द इनआमिल्लाहि व इफ़ज़ालिह ०

﴿٢٢﴾ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الْحَبِيبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बनफ तह बै नना व बै न कौमिना बिल हक्के व अन त खैरुल फातिही न ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नबीयील उम्मील हबिबिल आलिलकदरिलअजीमिल जाहि व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

﴿٢٣﴾ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهٖ صَلٰوةً أَنْتَ لَهَا أَهْلٌ وَهُوَ لَهَا أَهْلٌ ○

रब्बना अफरिग़ अलैना सबरवँ व तवफ्फना मुस्लिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिहि सलातन अंता लहा आहलुवँ व हुव लहा अहलुन ०

﴿٢٤﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لِلنَّجَاةِ وَسِيلَةً وَّلِعُلُوِّ الدَّرَجَاتِ كَفِيلَةً ○

रब्बना ला तज अलना फित न तल लिल कौमिज़ जालिमी न व नज्जीना बि रह मति क मिनल कौमिल काफिरी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तकूनु लिन्नजाति व सीलतिवँ व लिउ लुववी ददरजाति कफीला ०

۲۹ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تُفَرِّجُ بِهَا الْكُرَبُ وَتُحَلُّ بِهَا الْعُقَدُ ○

रब्बना इन्न क तअ् लमु मा नुख्फ़ी व मा नुअलिन व मा यख़्फ़ा अलल लाहि मिन शैइन फ़िल अर्ज़ी वला फ़िस समाई ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तुफ़र्रजु बिहलकुरबु व तुहल्लु बिहलउक्द ०

۳۰ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَآءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَآءً ○

रब्बना व तक़ब्बल दुआय ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिवँ सलातन तकुनु लक रिज़ा अवँ व लिहक़्क़ीहि अदाअ ०

۲۷ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً دَآئِمَةً مَّقْبُوْلَةً تُؤَدِّيْ بِهَا عَنَّا
حَقَّهُ الْعَظِيْمَ ○

रब्बनग फ़िरली व लि वालिदय्य व लिल मोअ्मिनी न यौ म यक़ूमुल हिसाबु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन दाइमतम्मक़बुलता तुअद्दि बिहा अन्ना हक़्क़हुलअज़ीम ०

۲۸ رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○
صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ ○

रब्बना आतिना मिँल्ल दुन क रह मतवँ व हय्यी लना मिन अमरिना र श दा ० सल्लल्लाहु अलन्नबीयील उम्मी ०

(٣٨) رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةَ الرِّضٰى وَارْضَ عَنْ اَصْحَابِهٖ رِضَآءَ الرِّضٰى ○

रब्बना इन्न ना नखाफु अँय्यफरुत अलैना अव अँय्यतगा ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलात्त रिंजा वरजा अन असहाबिहि रिजाअर्रीजा ०

(٣٩) رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِيْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ ○

रब्बनल्लजी अअ्ता कुल्ल शैइन खल कहू सुम्म हदा ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फि कुल्ली लमहतिवँ व नफसिमबाअद दि कुल्ली माअलुमिल्लक ०

(٤٠) رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَاهُ لَهٗ ○

रब्बना आमन्ना फगफिर लना वर हमना व अन त खैरुर राहिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व तरजाहु लहु ०

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ○ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ الْاَبْرَارِ وَزَيْنِ الْمُرْسَلِيْنَ الْاَخْيَارِ وَاَكْرَمِ مَنْ اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ○

रब्बनस रिफ अन्ना अज़ा ब जहन्नम इन्न अज़ाबहा का न गरामन○ इन्नहा सा अत मुस त कर्रवँ व मुकामन○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिलअबरारि व ज़ैनिलमुरसलीनल अखयारी व अकरामि मन अज़लम अलैहिल्लैलु व अशरक अलैहिन्नहार ○

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ○ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

रब्बना हब लना मिन अज़वा जिना व ज़ुर्रीय्या तिना कुर्र त अअ्युं निवँ वज अल्ना लिल मुत्तकी न इमामा○ अल्लाहुम्मा सल्लीम अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लमत अला इब्राहिम व अला आलि इब्राहिम इन्नका हमीदुम्मजीद○

رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ○ اَللّٰهُمَّ اَبْلِغْهُ مِنَّا السَّلَامَ كُلَّمَا ذُكِرَ السَّلَامُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

रब्बना ल गफूरुन शकूर ○ अल्लाहुम्मा अबलिग हु मिन्नस्सलाम कुल्लमा ज़ुकिरस्सलामु वस्सलामु अलन्नबीय्यी व रहमतुल्लाहि व बरकातहू

﴿٣٩﴾ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना व सिअ् त कुल्ल शयइर रह म तवँ व ईलमन फग़फ़िर लिल्लज़ी न ताबू वत्त बअू सबी ल क व क़िहिम अ़ज़ाबल जहीमि ० अल्लाहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन अ़बदिक व नबीयीक व रसूलिक नबीय्यील उम्मी व अ़ला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

﴿٤٠﴾ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٨﴾ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ عَلَيْهِ وَاجْزِهٖ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ حَبِيْبُكَ ○

रब्बना व अद खिलहुम जन्नाति अ़दनि निल्लती व अ़त्तहुम व मन स ल ह मिन आबाई हिम व अज़्वाजि हिम व ज़ुर्रीय्याति हिम ० इन्न क अन तल अ़ज़ीज़ुल हकिम ० व कि हि मुस सय्ई आति व मन तकिस सय्ई आति यौ मई ज़िन फ़ कद रहिम तह व ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अ़ज़ीमु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व सल्लिम अ़लैहि वजज़िहि अ़न्ना मा हुव आहलुहू हबीबुक ०

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ○

रब्बनग़ फिर लना व लि इख्वा नि नल्लजी न स ब कूना बिल ईमानि व ला तज अल फी कुलूबिना गिल्लल लिल्लजी न आ मनू रब्बना इन्न क रऊफुर रहीम ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन ○

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

रब्बना ला तजअलना फितनतल लिललजीन कफरु वग़फिर लना रब्बना ○ ईन्नक अन्तलअजिजुल हकिम ○अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिल मलईल आला ईला यौमी ददिन मा शाअल्लाहु ला कुव्वत ईल्ला बिल्लाहिल अलिईल अजिमि ○

رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِيْ اٰمَنَ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَأَعْطِهِ أَفْضَلَ رَحْمَتِكَ وَاٰتِهِ الشَّرَفَ عَلٰى خَلْقِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاجْزِهِ خَيْرَ الْجَزَاءِ وَالسَّلَامُ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

रब्बना अत मिम लना नू रना वग़ फिर लना इन्न क अला कुल्ले शयइन कदीर ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला

सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिकन्नबीय्यील उम्मील्लजी आमन बिक व बिकिताबिक व आततिहि अफजल रहमतक व आतिहिश्शरफ अला खलक्कि यौमिल कियामति वजजिहि खैरल जजाइ वस्सलामु अलैहि व रहमतुल्लाहि वबरकातहु ० सुबहान रब्बीका रब्बील इज्जती अम्मा यसीफुन ० व सलामुन अल्ल मुरसलीन ० वलहम्दु लिल्लाहि रब्बीलआलमीन ०

اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدِ نِالنَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَعَلٰی
اٰلِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदि निन्नबीय्यील उम्मी व अला आलिहि व बारीक व सल्लीम ०

बिस्मील्लाह हिररहमान निर्रहीम

मिनटो में करोड पती बनिए

हज़रत तमीम दारी रज़ि. हुजुर अकरम स. से रिवायत करते है के हुजुर स. ने इर्शाद फर्माया के जो शख्स दस मर्तबा ये कलमात कहे तो अल्लाह तआला इस को चार करोड नेकियों का सवाब इनायत फर्माते हैं और रमज़ानुल मुबारक में हर नेकी का सवाब सत्तर गुनाह ज़्यादा मिलता है तो इस लेहाज़ से इन अलफाज़ का सवाब दो अरब अस्सी करोड मिलेगा. वो कलमात ये है.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً

وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

अशहदुअल्ला इलाहा इलल्लाहु वाहदहु ला शरीका लहु इलाहव्वांहिदन अहदन समदन लम यत्ताखिज साहिबतंवँ व ला वलदवँ वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद ०

तिलावत से पहले पढे जाने वाले दरुद शरीफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ۨ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى

اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الْبَرَرَةِ الْكِرَامِ وَعَلٰى سَائِرِ النَّبِيِّيْنَ ۔

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन नबीय्यील उम्मीय्यी वअला आलिहि व असहाबिहिल बररतिलकिराम व अला साइरीन्नबीय्यीन.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نُوْرِ الْاَنْوَارِ وَسِرِّ الْاَسْرَارِ وَ
تِرْيَاقِ الْاَغْيَارِ وَمِفْتَاحِ بَابِ الْيَسَارِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدِ نِ الْمُخْتَارِ وَاٰلِهِ الْاَطْهَارِ وَعَلٰى وَاٰلِهٖ وَ
اَصْحَابِهِ الْاَخْيَارِ عَدَدَ نِعَمِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهٖ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला नुरिल अनवारि व सरीलअसरारी व तिरयाकिल अगयार वमीफ्ताहि बाबिल यसार सय्यिदिना मुहम्मदि निलमुखतार व आलिहिल अतहार व अला व आलिहि व असहाबिहिल अखयार अद द निअमल्लाहि व अफ्जालिहि

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ خَلَقَ الْاِنْسَانَ
مِنْ عَلَقٍ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

आऊजुबिल्लाहि मिनश्शैतानिररजीम
बिस्मील्लाहि रहमा निररहीम

इकरा (सल्लल्लाहु अलैक सय्यिदुना मुहम्मदुन सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) बिस्मी रब्बीकल्लजी खलक खलकल इन्सान मिन अलक इकरा व रब्बुकल अकरमुल्लजी अल्लम बिलकलमि अल्लमल इन्सान मा लम याअलम.

फजीलत : इल्म जाहिरी-व बातीनी हासिल होगा. दिल रौशन और ज़बान पर खुदा के कलाम की रवानी पैदा हो जाती है. ख्यालात नेक पैदा होना शुरु हो जाते है.

फजाईले आमाल

जो आदमी जुमा की नमाज़ के बाद १०० मर्तबा 'सुब्हानल्लाहिलअज़ीम व बिहमदिहि' पढेगा तो हज़रत मोहम्मद स. ने फर्माया के इस के पढने वाले को एक लाख गुनाह माफ होंगे और इसके वालेदैन के चौबीस हज़ार गुनाह माफ होंगे.

(हदीस रवाह इब्ने अलसुन्नी फिल अमलुलयौम वालैलता सफा १४६०)

○

हज़रत बुरेदा सलमा रज़ि. को आप स. ने फर्माया के ऐ बुरेदा रज़ि. जिस के साथ अल्लाह पाक खैर का इरादा फर्माते है इस को मंदरजा ज़ैल कलमात सिखा देते है, वो कलमात ये है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّ فِیْ رِضَاكَ ضُعْفِیْ وَخُذْ اِلَی الْخَیْرِ بِنَاصِیَتِیْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰی رِضَائِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَاِنِّیْ ذَلِیْلٌ فَاَعِزَّنِیْ وَاِنِّیْ فَقِیْرٌ فَاَغْنِنِیْ

یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फकव्वीनी रिज़ाक जुअफि व खुजलिलखैर बिना सियती वजअलिल इस्लाम मुनतहा रिजाई अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फकव्विनी व इन्नी ज़लीलुन फअ-ईज्ज़नी व इन्नी फकीरुन फअगनिनी या अरहमर्राहिमीन.

आगे आप स. ने फर्माया जिस को अल्लाह ये कलमात सिखाता है फिर वो मरते दम तक नहीं भूलता. (आहया उलउलूम जिल्द १ सफा २७७)

○

एक सहाबी रज़ि. ने हुजुर अकरम स. से पुछा के मुझे वज़ीफा बताइये. आप स. ने फर्माया के

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि वला इलाहा इलल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौल वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयील अजीम ०

पढा करो सहाबी ने कहा ये तो मेरे अल्लाह के लिए कलमात है मेरे लिए क्या वज़ीफा है. आप स. ने फर्माया के इस के बाद ये कहा करो.

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ.

अल्लाहुम्मगफिरली वरहमनी वाहदनी व आफिनी वर जुकनी. वो सहाबी रज़ि. उठ कर रवाना हो गए तो आप स. ने फर्माया के ये देहाती अपने दोनो हाथो में बहोत खैर को ले जारहा है. इस के पढने का अहतेमाम करो. सुबह और शाम सौ सौ मर्तबा पढ लिया करो तो इन्शाअल्लाह तआला खुब बरकत होगी. (हयातुलसहावा अरबी, जिल्द ३ सफा ४३०)

○

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

हसबीयल्लाह ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुल अरशील अज़ीम सुबह और शाम सात सात मर्तबा पढना चाहिऐ अल्लाह तआला इस के मआमलात दुरुस्त करेगा. परेशानीयां दुर होगी. हज़रत अबुदरदा रज़ि. फर्माते है के ये कलमात तो सच्चे दिल से पढ या झुटे दिल से हर हाल में अल्लाह तेरा काम बनाएगा. (हयातुम्सहाबा, जिल्द २, सफा ८८७)

O

फजर के बाद या ज़ोहर के बाद दस मर्तबा सुरेह इख़लास अगर कोई पढ ले. आप स. ने फर्माया के उस दिन इस आदमी से गुनाह सरज़द ना होगा अगर शैतान कोशिश करेगा तब भी गुनाह सादिर ना होगा. (दुर्रेमंशुर, कनजुलअमाल जिल्द १ सफा २२३. हयातुस्सहाबा अरबी जिल्द ३ सफा ४२०)

O

बिमार आदमी की हालत में चालीस मर्तबा ये आयते करीमा पढे.

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

ला इलाहा इल्ला अनता सुबहानका इन्नी कुनतु मिनज़्ज़ालीमीन.

फज़ीलत : हदीस शरीफ में आया है के जिस मुसलमान ने अपनी बिमारी की हालत में चालिस मर्तबा मज़कुरा बाला आयते करीमा पढ ली तो अगर इस बिमारी में वफात पा गया तो शहीदो का अजर पाएगा और अगर तंदरुस्त हो गया तो इस के तमाम गुनाह बखश दिए जाएगे. (हुसने हसीन)

○

किसी अंधे को हाथ पकड कर किसी शख्स ने चालीस कदम चला दिया तो इस चलाने वाले के अल्लाह अगले पिछले सारे गुनाह माफ करदेगा. (तनवीरुलहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसैव्रती)

○

अगर दो मुसलमान भाई मुसाफा करते वक्त एक मर्तबा दरुद शरीफ पढ लें तो अल्लाह इन दोनो के गुनाह माफ फर्मा देगा. (तनवीरुलहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसयतवी)

○

जब मोअज़्ज़न अज़ान देते देते أَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ **अशहदुअल्लाइलाहा इलल्लाहु** पर पहुंचे तो एक मर्तबा ये पढ ले.

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ

دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُوْلًا وَّ نَبِيًّا۔

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बवँ व बिलइसलामि दिनवँ व बिमुहम्मदिन सलल्लाहु अलैहि व सल्लम रसुलवँ व नबीय्यन. तो अल्लाह तआला पढने वाले के सारे गुनाह माफ फर्मादेगा. (तनवीरुलहवालिक जिल्द१ सफा ८३ ललसैवनी)

○

जब अज़ान शुरु हो तो ये दुआ पढे.

مَرْحَبًا بِالْقَائِلِيْنَ عَدْلًا مَرْحَبًا بِالصَّلٰوةِ اَهْلًا وَّسَهْلًا۔

मरहबन बिलकाइलीन अदलन मरहबा बिस्सलाति आहलवँ व साहलन.

फजीलत : इस दुआ के पढने से दो करोड नेकियां दो करोड गुनाह माफ, दो करोड दर्जात बुलंद होगे.

आयाते शिफा

मुकम्मल ''सुरेह फातेहा'' बिस्मील्लह के साथ पहले पढे.

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ

वयशफि सुदुर कौमिम मुअमिनीन और इमान वाली कौम के सिनो को अल्लाह तआला शिफा अता फर्माएगा:

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ

لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

याअय्युहन्नासु कद जाअतकुम्मोइजतुन मिररब्बीकुम व शिफाउल्लिमा फी सदुरि व हुदंव व रहमतुल्लीलमुअमीनीन.

ऐ इन्सानो ! तुम्हारे पास एक नसीहत नामा तुम्हारे रब की तरफ से आचुका है और सीनो की तमाम बिमारीयों का इलाज भी इसी में है. जो इमान लाएंगे हिदायत का रास्ता इन को मिल जाएगा. साथ हि साथ अल्लाह की रहमत भी पालेंगे.

يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ

فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ

यखरुजु मिम बतुनिहा शराबुममुखतलिफुन अलवानुह फिहि शिफाउल्लीन्नास.

शहद की मख्खी के पेट से पीने की चिज़ (यानी शहद) निकलता है (अल्लाह के हुक्म से) जिस के रंग अलग अलग होते है और इस में इन्सानो के लिए शिफा है.

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

वनुनज़्ज़ीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउवँ व राहमतुललील मुमिनीन.

और हम उतारते है कुरआन जिस में शिफा है और रहमत है इमान वालों के लिए.

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ؕ

व इज़ा मरीज़तु फहुव यशफील ०

और जब मैं बिमार पडू तब वही मुझे शिफा अता फर्माता है.

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

कुल हुवल्लजीन आमनु हुदवँव शिफा.

ऐ नबी स. ! आप फर्मा दो के ये कुरआन इमान वालो के लिए राहे हिदायत है और बिमारो में शिफा भी है.

रोजाना सत्ताईस बार

رَبِّ اغْفِرْلِىْ وَ لِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۔

रब्बीगफिरली वलिवालीदय्यी वलीलमुअमीनीन वलमुअमीनात यौम यकुमुल हिसाब.

पढें क्योंकी इस के सत्ताईस बार पढने से अल्लाह पाक हज़रत आदम अलै. से ले कर क्यामत तक के मुसलमानो के बराबर सवाब अता फर्माएंगे.

दिल के अमराज़ से हिफाज़त

يَاقَوِيُّ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ قَوِّنِيْ قَلْبِىْ.

या कवीय्युलकादिरुल मुकतदिरु कव्वीनी कलबी

हर फर्ज़ नमाज़ के बाद तीन मर्तबा दरुद शरीफ पढ कर अपना सीधा हाथ कलब पर रख कर जो इस दुआ को सात मर्तबा पढेगा. अल्लाह पाक उस को दिल की बिमारीयों से महफुज़ रखेगा.

وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ.

वलीयरबित अला कुलुबिकुम व युसब्बीत बिहिलअक्दाम.

फज़ीलत : सुबह और शाम आगे पिछे दरुद शरीफ एक एक मर्तबा पढें और सात मर्तबा ये दुआ. इन्शाअल्लाह तआला हार्ट फेल और दिल के तमाम अमराज़ से निजात मिलेगी.

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

फइन तवल्लौ फकुल हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशील अज़ीम ०

तर्जुमा : मेरे लिए अल्लाह तआला काफी है जिस के सिवा कोई माबुद होने के लायक नहीं, इस पर मैं ने भरोसा कर लिया. और वो अर्शे अज़ीम का मालिक है.

फज़ीलत : हज़रत अबुदरदा रज़ि. से रिवायत है के फर्माया जनाब रसुलुल्लाह स. ने के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा ये दुआ पढ ले तो अल्लाह तआला इस के दुनिया और

आखेरत के हर गम के लिए काफी हो जाएगे.

(रुहुलमआनी पारा ११ सफा ५३)

मायुस ना हो अहले ज़मीन अपनी खता से
तकदीर बदल जाती है मुज़तर की दुआ से

कर्ज़ व रंज व गम से निजात दिलाने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ
الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ ۝

अल्लाहुम्मा इन्नी आऊजुबिका मिनलहम्मी वलहुजनी वआऊजुबिका मिनल अजज़ी वलकसलि व आऊजुबिका मिनलबुखलि वलजुबनी व आऊजुबिका मिन गलबतिद्दैनि वकहरीरजाल ०

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूं फिकर से और रंज (रंज गम) से और पनाह चाहता हू बेबसी व सुस्ती से और पनाह चाहता हूं बुख्ल और बुज़दिली से और पनाह चाहता हूं कसरत कर्ज़ से और लोगों की जोर आवरी से. (रवाह अबुदाऊद) (मरकात जिल्द ५ सफा २१७) (मिशकात सफा २१५ बाबुलइस्तेआज़ा)

फज़ीलत : हज़रत अबुसईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है के एक शख्स ने अर्ज़ किया के ऐ अल्लाह के रसुल ! मुझे घेर लिया है गमों और कर्ज़ों ने यानी कसरते कर्ज़ की वजह से अदाएगी की फिक्र से परेशान हुँ. हुजुर स. ने फर्माया के क्या मैं तुझे ऐसी दुआ ना बता दूं के जिस के पढने से अल्लाह तेरे गमो को

दुर कर दे और तेरे कर्ज़ को अदा कर दे. अर्ज़ किया के क्यों नहीं यानी ज़रुर बताइये. आप स. ने फर्माया के सुबह व शाम यूं दुआ मांगा करो (जो माअ तर्जुमा के उपर गुज़र चुकी है)

जिस के पढने से आसमानी और जमीनी तमाम बलाओ से हिफाजत रहती है.

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

बिस्मील्लाहिल्लज़ी ला यजुररु मअइसमिहि शैउन फिलअरज़ी वला फिस्समाई वहुवस्समीउल अलीम. (मिशकात सफा २०९)

तर्जुमा: अल्लाह के नाम से हम ने सुबह की (या शाम की) जिस नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चिज़ नुकसान नहीं दे सकती और वो सुन्ने वाला और जान्ने वाला है.

फज़ीलत : हज़रत अब्बान बिन उस्मान रज़ि. से रिवायत है के मैं ने अपने वालिद को कहते हुए सुना के रसुलुल्लाह स. ने फर्माया के जो बंदा सुबह और शाम तीन तीन बार ये दुआ पढ लेगा जो उपर गुज़री है इस को कोई चिज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती. (मिशकात)

नोट : मुनाजात मकबुल की एक मंज़ील अगर रोज़ पढ लि जाए तो सात दिन में अकसर अदाइया कुरआन पाक और अहादिस मुबारका की विर्द हो जाएगी.

दुआ हर परेशानी और बेचैनी को दफा करने के लिए

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या कय्युमु बिरहमतिका असतगीसु.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. रिवायत करते है के हुजुर स. को जब कोई कुर्ब यानी बेचैनी और परेशानी होती थी तो **या हय्यु या कय्युमु बिरहमतीक असतगीसु** पढा करते थे. यानी ऐ ज़िंदा हकीकी, ऐ संभालने वाले आप हि की रहमत से फर्याद करता हुं.

اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَا بِالصّٰلِحِيْنَ

غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ ۝

अल्लाहुम्मा तवफ्फना मुसलीमीन वलहिकना बिस्सॉलहीन गैर खज़ाया वला मफतुनीन.

इमान पर खातमे के लिए बेहतरीन दुआ है.

दीन पर साबीत कदम रहने की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

या मुकल्लिबलकुलुबि सब्बीत कल्बी अला दिनीका.

फज़ीलत : हज़रत शहर इब्ने होशब रज़ि. फर्माते है के मैं ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. से अर्ज़ क्या के ऐ उम्मुलमोअमिनीन हुजुर स. की अकसर दुआ किया होती थी जब आप के घर होते थे. हज़रत उम्मेसलमा रज़ि. ने फर्माया के आप स. अकसर ये दुआ फर्माया करते थे.

या मुकल्लीबल कुलुबि सब्बीत कलबि अला दिनीक.
ऐ दिलो को फेरने वाले मेरे दिल को दिन पर कायम रखीए.
(जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)
जो शख्स इस दुआ को मांगता रहेगा इन्शाअल्लाह तआला दीन पर साबित कदम रहेगा जिस की बरकत से खातेमा इमान पर होगा.

अलहाम हिदायत और नफस के शर से हिफाजत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِىْ رُشْدِىْ وَاَعِذْنِىْ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ.

अल्लाहुम्मा अलहिमनी रुशदि व अइजनी मिन शररी नफसी.

फजीलत : हज़रत इम्रान इब्ने हसीन रज़ि. से रिवायत है के रसुलुल्लाह स. ने मेरे वालिद हसीन रज़ि. को दुआ के ये दो कलमे सिखाए जिन को वो मांगा करते थे.

ऐ अल्लाह हिदायत को मुझ पर अलहाम फर्माते रहिए यानी हिदायत की बातो को मेरे दिल में डालते रहिए और मेरे नफस के शर से मुझे बचाते रहिए. (जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)

बर्स, जनुन, कोढ और तमाम बुरे अमराज से हिफाजत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَيِّئِ الْاَسْقَامِ.

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिनलबरस वलजनुनी वलजुजामि वसय्यीइल असकाम.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के हुजुर स. ये दुआ मांगा करते थे के ऐ अल्लाह, मैं आप की पनाह चाहता हूं बरस से, पागल पन से, कोढ से और तमाम बुरे अमराज़ से. (जवाहिरूलबुखारी सफ़ा ५७०)

आज कल के ज़माने में जब के हर रोज़ नए नए मोहलिक अमराज़ पैदा हो रहे हैं इस दुआ का खास अेहतमाम करना चाहिए और इस के साथ साथ तमाम गुनाहो से बचना चाहिए क्योंकी नई नई बिमारीयां गुनाहों की कसरत की वजह से पैदा होती है और गुनाहों को छोडने की तदबीरें किसी अल्लाह वाले से पुछना चाहिए. अल्लाह वालों की सोहबत की बरकत से गुनाहो से बचने की हिम्मत पैदा होती है.

अल्लाह तआला से माफी व मगफिरत दिलाने वाली दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ.

अल्लाहुम्मा इन्नक अफुव्वुन करीमुन तुहिब्बुल अफ्व फाअफुअन्नी.

फज़ीलत : हज़रत आईशा रज़ि. से हुजुर अकरम स. की ये दुआ मनकूल है के ऐ अल्लाह आप बहुत ज़्यादा माफ फर्माने वाले करीम है. माफ फर्माने को पसंद फर्माते हैं, पस मुझ को माफ फर्मा दिजीए.

बाज़ रिवायत में सरवरे आलम स. ने शबे कद्र में भी ये दुआ मांगने की तालीम फर्माइ है. लेहाज़ा शबे कद्र में इस दुआ का खास अहतेमाम करना चाहिए. (जवाहिरूलबुखारी सफा ५७०)

अज़ाबे कब्र व दोज़ख और मालदारी व फक्र के शर से पनाह की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَ
عَذَابَ النَّارِ وَمِنْ شَرِّ الْغِنٰی وَالْفَقْرِ

अल्लाहुम्मा इन्नी आउज़ुबिका मिन फितनतील कबरी व अज़ाबन्नारि व मिन शरीलगिना वलफुकरी.

फज़ीलत : उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि. से रिवायत है के सरवरे आलम स. इन कलमात के साथ दुआ मांगा करते थे के ऐ अल्लाह मैं आप की पनाह चाहता हूं कब्र के फितने से और दोज़ख के अज़ाब से और मालदारी व फक्र के शर से.

(जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)

हिदायत, तकवा, पाकदामनी और मालदारी के लिए दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْھُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल हुदा वत्तुका वलअफाफ वलगिना.

फज़ीलत : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रज़ि. से रिवायत है के हुज़ुर स. ने फर्माया ऐ अल्लाह मैं आप से सवाल करता हूं हिदायत का, तकवा का, पाकदामनी का और मालदारी का.

(जवाहिरुलबुखारी सफा ५७५)

बिसमी तआला

हज़रत हम्माद बिन अबी हनीफा रह. से रिवायत है के मेरे वालिद (इमाम अबु हनीफा रह.) ने ख्वाब में निनानवे मर्तबा अल्लाहु रब्बुलु इज़्ज़त की ज़ियारत की. फिर मेरे वालिद साहब रह. ने अपने दिल में सोचा के अब की मर्तबा अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ियारत हो तो ज़रुर बिज़रुर अल्लाह तआला से पुछुंगा के या अल्लाह वो कौनसी चिज़ है जिस की वजह से आप अपने बंदो को क़यामत के दिन नजात देंगे. चुनांचे वालिद माजिद को ये शर्फ हासिल हुआ. और उन्होंने अल्लाह तआला से पुछा. अल्लाह पाक ने फर्माया के जो शख्स सुबह और शाम ये कलमात पढेगा इस को क्यामत के दिन नजात दूंगा. वो कलमात ये है.

سُبْحَانَ الْاَبَدِيِّ الْاَبَدِ. सुब्हानलअबदिय्यीलअबद

पाक है वा ज़ात जो हमेशा रहने वाला है.

سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ. सुब्हानल वाहिदिल अहद

पाक है वो ज़ात जो एक अकेला है.

سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ. सुबहानलफरदीस्समद

पाक है वो ज़ात जो तनहा बे नियाज़ है.

سُبْحَانَ رَافِعِ السَّمَآءِ بِغَيْرِ عَمَدٍ.

सुबहान राफिइस्समाइ बिग़ैरी अमद.

पाक है वो ज़ात जो बगैर सुतून के आसमान को बुलंद करने वाला है.

سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْخَلْقَ فَاَحْصَاهُمْ عَدَدًا۔

सुब्हान मन खलकलखलक फलहसा हुम अददा.

पाक है वो ज़ात जिस ने तमाम मख़लुक़ात को पैदा किया. पस इन को गिन कर शुमार कर लिया.

سُبْحَانَ مَنْ قَسَمَ الرِّزْقَ وَلَمْ يَنْسَ اَحَدًا۔

सुबहान मन कसमररीज़क वलम यअस अहदन.

पाक है वो ज़ात जिस ने रोज़ी तकसीम की और किसी को ना भुला.

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

सुबहानल्लज़ी लम यत्तखिज़ साहिबतवँ वला वलदन

पाक है वो ज़ात जिस ने ना बीवी बनाई और ना कोई अवलाद.

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ

لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ۔

सुबहानल्लज़ी लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद.

पाक है वो ज़ात के जिस ने ना जना, ना जना गया और इस के बराबर का कोई नहीं है.

○

हज़रत अबुदरदा रज़ि. जो अपनी कुन्नीयत से मशहुर हुए और जो बडे फकीह आलिम और हकीम थे. शाम में सुकुनत इख़्तीयार की और दमिश्क में इंतेकाल फर्माया वो रिवायत करते है के रसुलुल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के : हज़रत दाऊद अलै. ये दुआ मांगा करते थे.

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَاَهْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ ۔

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका हुब्बका व हुब्ब मंय्युहिब्बुका वलअमलल्लजी युबल्लिगुनी हुब्बक अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्ब इलैय्या मिन नफसी वअहली व मिनलमाइलबारिद॰

(रवाहुलतिर्मीज़ी (अजवाहिरुलबुखारी सफा ५७२)

फज़ीलत : ऐ अल्लाह मैं आप से आप की मोहब्बत मांगता हूं और इस शख्स की मोहब्बत मांगता हूं जो आप से मोहब्बत करता है और मांगता हूं वो अमल जो आप की मोहब्बत तक पहुंचा दे. ऐ अल्लाह आप अपनी मोहब्बत मुझे मेरी जान से ज़्यादा और अहल व अयाल से ज़्यादा और ठंडे पानी से ज़्यादा महबुब कर दिजीए.

फज़ीलत : अल्लाह वालों की मोहब्बत ऐसी नेअमत उज़मा है जो अल्लाह तआला की मोहब्बत और आमाले सालेहा की मोहब्बत का निहायत ही ज़रीया है, जैसा के इस हदीस से वाज़ेह है.

बद नज़री से हिफाज़त

बदनज़री से हिफाज़त पर हलावते इमान अता होने का वादा है. हलावते ईमान जब दिल को एक बार अता हो जाएगी. फिर कभी ना वापस ली जाएगी. पस हुसने खातमा की बशारत इस अमल पर भी है.

हुज़ुर स. इर्शाद फर्माते है :

ان النظر سهم من سهام ابليس مسموم
من ترکها مخافتی ابدلته ایمانا یجد حلاوته فی قلبه

इन्न नज़र सहमुम मिन सिहामि इबलीस मसमुम मन तरकहा मखाफती अबदलतुहु इमानन यजिद हलावतहु फि कलबिही. (तिबरानी अब इब्ने मसऊद रज़ि., कंज़ुलुलआमाल जिल्द ५, सफा २४८)

ईमान मौजूदा पर शुक्र है

यानी हर रोज़ मौजूदा पर शुक्र अदा करना और वादा है के **लइन शकर तुम ला ज़िदन्नकुम** (सुरेह इब्राहिम पारा १३) अगर तुम लोग शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेअमतो में ज़रुर बिज़रुर इज़ाफा करेंगे. पस ईमान पर शुक्र इमान की बका बल्के तरक्की का ज़रीया है.

दुआ अदाएगी कर्ज़

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ○

अल्लाहुम्मकफिनी बिहलालिक अन हरामिक व अगनिनी बिफज़लीक अम्मन सिवाक ०

अदाएगी कर्ज़ के लिए हुज़ुर अकदस स. ने हज़रत अली रज़ि. को तालीम फर्माइ और फर्माया के अगर पहाड के बराबर भी कर्ज़ होगा तो अदा हो जाएगा. (तिर्मीज़ी)

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا اَنْتَ تَرْحَمُنِيْ فَارْحَمْنِيْ بِرَحْمَةٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म फारिजल हम्मी काशिफलगम्मी मुजीब दावतिलमुजतर्रीन रहमानद्दुनिया वलआखिरति व रहीमहुमा अंता तरहमनी फरहमनी बिरहमतिन तुगनीनी बिहा अररहमती मन सिवाक ०

ये भी अदाएगी कर्ज़ और गम व फिक्र दुर करने के लिए दुआ है. (मुसतदरक हाकिम वगैराह)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْخَلَّاقُ الْعَظِيْمُ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ الْجَوَادُ الْكَرِيْمُ فَاغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَاسْتُرْنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَارْفَعْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَلَا تُضِلَّنِيْ وَادْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

अल्लाहुम्मा अनतलखल्लाकुलअजीमु, अल्लाहुम्मा, इन्नका समीउन अलीमुन, अल्लाहुम्मा इन्नका गफुरुररहीमु, अल्लाहुम्मा इन्नका रब्बुल अरशील अजीमु, अल्लाहुम्मा इन्नकलजवादुलकरीमु फगफिरली वरहमनी वआफिनी

वरजुकनी वसतुरनी वजबुरनी वअरफअनी वाहदिनी वला तुजिल्लनी वअदखिलनिल जन्नता बिरहमतिक या अरहमरराहिमीन ०

ऐ मेरे अल्लाह ! तू खालिके अज़ीम है तु समीअ व अलीम (सब कुछ सुनने और जानने वाला) है तु गफुर व रहीम (बखशने वाला और निहायत महरबान है) तु मालिके अर्शे अज़ीम है तु निहायत फय्याज़ और करीम है. अपनी इन आली सिफात के सदके में तु मुझे बख्श दे मुझ पर रहमत फर्मा. मुझे आफियत अता फर्मा. मुझे रिज़्क नसीब फर्मा, मेरी परवा दारी फर्मा, मेरी शिकसतगी को जोड दे, मुझे इज़्ज़त व रफअत अता फर्मा, मुझे अपनी राह पर चला, मुझे गुमराही से बचा और ऐ अरहमरराहीमीन (मरने के बाद आखेरत में) अपनी रहमत से मुझे जन्नत में दाखला नसीब फर्मा. (हज़रत जाबिर रज़ि. कहते है के रसुलुल्लाह स. ने ये दुआ तलकीन फर्माइ और आप से इर्शाद फर्माया) इस को सीख लो और अपने बाद वालो को सिखाओ. (मुसनदे फिरदोस बयलमी)

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ شَرَّ نَفْسِيْ وَاعْزِمْ لِيْ عَلٰى اَرْشَدِ اَمْرِيْ

अल्लाहुमा किनी शर्र नफसी वाअजिम लि अला अरशदि अमरी

शुर नफस से हिफाज़त और हिदायत के लिए बहेतरीन दुआ है. हुजुर अकरम स. ने ये दुआ हज़रत हसीन रज़ि. को बताई थी. (इब्ने हब्बान)

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّ اَنْتَ تَجْعَلُ الْحُزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ ۝

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवँ व अन्त तजअलुल हज़्न सहलन इज़ा शिअत ०

मुशकीलात की आसानी के लिए हुजुर अकदस स. से मनकुल दुआ है. (इब्नुल हब्बान, इब्ने सुन्नी)